Vol.25, Issue 8 | Annual Subscription ₹480

@NewsRotary /RotaryNewsIndia

जून 2026

रोटरी समाचार

भारत

www.rotarynewsonline.org

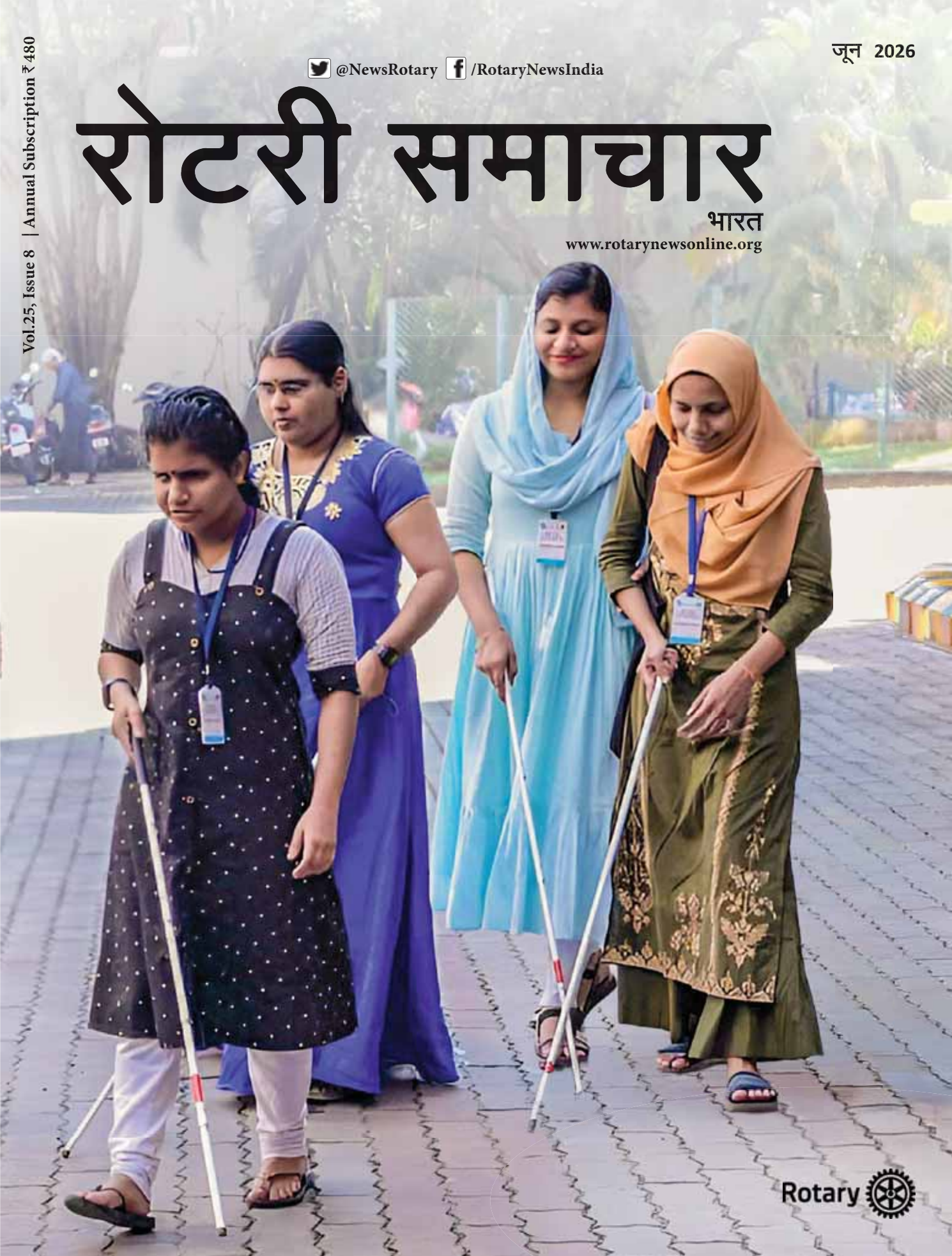

Rotary

Rotary | TAIPEI 2026

Rtn Francesco Arezzo
RI President

Join us to celebrate a colourful evening

SOUTH ASIAN RECEPTION AT THE ROTARY INTERNATIONAL CONVENTION TAIPEI 2026

14TH JUNE 2026

Rtn AKS Flt Lt K P Nagesh
RI Director | Co-Convener - SAR 26

PDG Rtn Sridhar J
Chairman - SAR 26

PDG Rtn Dr N Subramanian
Co-Chairman - SAR 26

PDG Rtn CA Debasish Mishra
Secretary - SAR 26

To Meet and Greet, Feel at Home,

Under the Taipei Sky!!!

Date: June 14TH, 2026 | Time: 06:30 PM,

Venue: **W Taipei,** 10 Zhongxiao East Road, Sec. 5 Xinyi District, Taipei, Taiwan 110

Register Now

REGISTRATION FEES
Single : INR 7,500
Couple : INR 15,000

Convener - SAR 26

MMM TRICHY

Rtn AKS Er Muruganandam M (MMM)

B.E., M.B.A., M.S., MFT., PGDMM., DEM
Chartered Engineer
Vice President- Rotary International (2026 - 2027)
Rotary International Director (2025 - 2027)
Chairman - Excel Group of Companies

#MMMTRICHY | #MMMEXCEL | #MMMROTARY | #SAYYESTOROTARY

/mmmtrichy | www.mmmtrichy.com | Mail: mmmrotary@excelgroup.co.in | Ph: +91 93825 50001

Further Details Contact: PDG Sridhar J, Mobile No: +91 97908 39030 | PDG Debashish Mishra, Mobile No: +91 99370 66669

विषयसूची

12

आत्मनिर्भरता की राह

18

रोटरी को घर-घर तक पहुँचाना ही मेरा सपना है

30

पूर्वोत्तर में रोटरी एग पुशकार्ट उद्यम की शुरुआत

38

केरल बाढ़ पीड़ितों को मिले घर

42

सेवा के पथ पर एक आदर्श रोटेरियन

46

लड़कियों के लिए साइकिलें; थैलेसीमिया मरीजों के लिए रक्तदान

52

खोई हुई ध्वनियों को फिर से लौटाना

Rotary

A publication of Rotary Global Media Network

ई-संस्करण अपनाएं। पर्यावरण बचाएं।

ई-संस्करण दर हुई कम

1 जुलाई 2024 से हमारी ई-संस्करण सदस्यता

₹420 से संशोधित कर

₹324 कर दी गई हैं।

अध्यक्ष की ज़बानी

1

2

3

4

5

6

1. रोटरी के अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो और उनकी पत्नी अन्ना मारिया अरेज़ो-क्रिस्किओन का, अफ्रीका दौरे के दौरान नाइजीरिया में रोटेरियन्स द्वारा स्वागत; 2. इथियोपिया की यात्रा पूरी करते हुए, अरेज़ो 'किक आउट पोलियो' कार्यक्रम में शामिल, जिसमें युवा फुटबॉल खिलाड़ीयों ने हिस्सा लिया; 3. अध्यक्ष चेन्नई, भारत में अपने हमशक्लों से मिलते हुए; 4. चेन्नई में एक रोटरी कार्यक्रम में, अरेज़ो और उनकी पत्नी अपने सहयोगी जॉन डी जियोर्जियो और उनकी पार्टनर, मोनिक चैम्बर्स के साथ; 5. नाइजीरिया में एक पेड़ लगाते हुए; 6. अरेज़ो युगांडा में मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य परियोजना का शुभारंभ करते हुए।

चित्र: (1) एंड्रयू एसेबो; (बाकी सभी) जॉन डी जियोर्जियो के सौजन्य से

7

8

9

7. ब्राज़ील में रोटरी यूथ एक्सचेंज के छात्रों और फ़ाउंडेशन ट्रस्टी चेयर होल्गर नेक के साथ; 8. चेन्नई में रोटरी मंडल 3234 के साथ 'पिंक ऑटो प्रोजेक्ट' का उद्घाटन करते हुए; 9. इस महीने ताइपे, ताइवान में होने वाले रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन के आम सत्रों के लिए कार्यक्रम स्थल का निरीक्षण करते हुए; 10. चेन्नई में अन्ना के साथ।

10

आइए, इस गति को बनाए रखें

रोटरी इंटरनेशनल के अध्यक्ष के रूप में मेरा कार्यकाल अब समाप्त होने जा रहा है। ऐसे में मैं हमारे वैश्विक रोटरी परिवार के प्रत्येक सदस्य को तहे दिल से धन्यवाद देता हूँ। आपकी दयालुता, अपनापन और समर्पण ने मेरी जीवन को बदल दिया है।

इस वर्ष मुझे दुनिया भर की यात्रा करने का सौभाग्य मिला - संयुक्त राष्ट्र के जन्मस्थान सैन फ्रांसिस्को से लेकर नाइजीरिया के नवोन्मेषी रोटरी क्लबों तक। हर स्थान पर मैंने रोटरी सदस्यों और हमारे सहयोगियों को स्थायी और सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए मिलकर काम करते हुए देखा। इससे मुझे यह एहसास हुआ कि हमारी वास्तविक ताकत हमारे साझा उद्देश्य में ही निहित है।

यह भावना स्वाभाविक रूप से एक सरल सत्य की ओर ले जाती है: रोटरी केवल ऐसी संस्था नहीं है, जिसमें हम भाग लेते हैं, बल्कि यह वह कार्य है जिसे हम करते हैं। हम केवल दर्शक नहीं हैं। हम सक्रिय रूप से काम करते हैं, और उसी कार्य के माध्यम से, हम अपने समुदायों और खुद को बदलते हैं।

जैसे-जैसे हम इस कार्य को आगे बढ़ाते हैं, हमें शांति के लिए अनुकूल परिस्थितियां निर्मित करने पर अपना ध्यान बनाए रखना होगा। रोटरी अपने मूल स्वरूप में शांति स्थापित करने का एक सशक्त माध्यम है। लेकिन इस व्यवस्था को प्रभावी बनाए रखने के लिए इरादे, प्रतिबद्धता और निरंतर प्रयास की आवश्यकता होती है।

पोलियो उन्मूलन की दिशा में आगे बढ़ते समय भी उसी दृढ़ संकल्प की आवश्यकता है। अंतिम चरण अक्सर सबसे कठिन होता है, लेकिन हम दुनिया के बच्चों से किए गए अपने वादे से पीछे नहीं हट सकते।

आप सभी ने यह सिद्ध कर दिया है कि जब हम *यूनाइट फॉर गुड* के उद्देश्य से एकजुट होते हैं, तो ऐसा कोई भी चुनौतीपूर्ण कार्य नहीं है जिसे हम मिलकर पूरा न कर सकें। आइए, हम साहस, करुणा और सभी की सुरक्षा और समृद्धि के प्रति अटूट प्रतिबद्धता के साथ इस गति को आगे बढ़ाते रहें।

फ्रांसेस्को अरेज़ो
अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

ADVT.

SHIKHAR
Since 1979
TRUSTED BY
1000+
ROTARIANS &
TRAVELERS
SINCE 1979
SHIKHAR
TRAVELS
INDIA
Journeys Crafted
With Trust
Your trusted partner for seamless
and memorable travel experiences.
WHO WE SERVE
Business Owners
Senior Professionals
Family-Oriented
Travelers
Frequent Flyers
Group / Community
Travelers
OUR SERVICES
Customized
Tours
Air Ticketing
Accomodation
VISA
Visa
Assistance
Conferences
Corporate
Travel
+91 97178 91151
Call us for personalized assistance
tours@shikhar.com
Email us for your travel needs
Let's plan your
NEXT JOURNEY
SCAN TO EXPLORE TOURS
46+ YEARS
OF TRUST
GLOBAL NETWORK
& PARTNERS
24/7 ASSISTANCE
ANYWHERE
PERSONALIZED
SERVICE

युवा शक्ति...

हाल ही में कुछ भारतीय राज्यों में हुए चुनावों का सबसे बड़ा आश्चर्य तमिलनाडु से आया, जहाँ तमिल सुपरस्टार और राजनीति में नए चेहरे जोसेफ विजय के नेतृत्व में नव गठित पार्टी टीवीके, 234 सदस्यीय विधानसभा में 108 सीटें जीतकर सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी। उनकी शानदार सफलता का एक बड़ा कारण युवाओं का भारी समर्थन था, जिसने कई राजनीतिक विशेषज्ञों को चौंका दिया(विजय को 18 से 39 वर्ष आयु वर्ग के लोगों से 50 प्रतिशत से अधिक वोट मिले, जबकि यह वर्ग तमिलनाडु की कुल जनसंख्या का 42 प्रतिशत है। दूसरा कारण यह था कि 18 वर्ष से कम उम्र के वे युवा, जिनके पास मतदान का अधिकार नहीं था, उन्होंने अपने माता-पिता और अन्य बड़ों को बाहर जाकर विजय को वोट देने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने उनसे आग्रह किया - उन्हें एक मौका तो दीजिए!

परिणाम आने के बाद विजय ने अपने युवा मतदाताओं और उन बच्चों, जिन्होंने अपने बड़ों को उन्हें वोट देने के लिए प्रोत्साहित किया या उनपर दबाव डाला था, को एक गर्मजोशी से भरा दिली संदेश भेजा - 'विजय अंकल की ओर से धन्यवाद'। यह संदेश तेजी से वायरल हो गया। उन्होंने आगे कहा कि 85.1 प्रतिशत का अभूतपूर्व मतदान किसी उत्सव जैसा महसूस हो रहा था।

हाल ही के वर्षों में हम लगातार देख रहे हैं कि रोटरी का शीर्ष नेतृत्व युवा सदस्यों को प्रोत्साहित कर रहा है, रोटरेक्ट को महत्व दे रहा है और रोटरेक्टरों एवं इंटरेक्टरों को रोटरी परिवार का अभिन्न हिस्सा महसूस करा रहा है। अब रोटरेक्टर, अपने रोटरेक्ट क्लब की सदस्यता बनाए रखते हुए भी रोटरी क्लबों के सदस्य बन सकते हैं। रो ई के बड़े आयोजनों जैसे सम्मेलनों, अंतर्राष्ट्रीय सभाओं और ज़ोन इंस्टिट्यूट्स में डीआरआरों को आमंत्रित किया जाता है और उन्हें पैनल चर्चाओं में शामिल किया जाता है। सबसे स्वागतयोग्य बात यह है कि उन्हें ऐसा अनुकूल वातावरण दिया जा रहा है, जहाँ वे खुलकर और निडर होकर अपनी बात रख सकें।

दिल्ली ज़ोन इंस्टीट्यूट 'तेजस' में रो ई निदेशक के पी नागेश और एम मुरूगानंदम द्वारा संचालित एक पैनल चर्चा में रो ई मंडल 3192 की डीआरआर जेनिस फिलिप ने जिस आत्मविश्वास और निडरता के साथ भाग लिया वो बहुत ही प्रभावकारी था। बाद में मैंने उनका साक्षात्कार भी लिया। (पृष्ठ 18) उनका व्यवहार, संयम, उनके विचार और उन्हें व्यक्त करने का आत्मविश्वास वास्तव में अनुकरणीय है।

वह आज भारत के ऐसे लाखों युवा नेताओं में से केवल एक हैं, जो नंदन निलेकानी द्वारा अपनी 2008 की किताब *इमेजिनिंग इंडिया* में वर्णित भारत के 'जनसांख्यिकीय लाभांश' का प्रतीक हैं। इस किताब में वह विस्तार से बताते हैं कि भारत ने अपने समाजवादी अतीत से सफलतापूर्वक परिवर्तन करते हुए किस प्रकार एक वैश्विक आर्थिक शक्ति बनने की दिशा में कदम बढ़ाए हैं। लेखक का तर्क है कि भारत की विशाल युवा आबादी, यदि सही ढंग से संचालित की जाए और उन्हें उचित अवसर दिए जाएँ, तो वह एक बहुत बड़ी संपत्ति साबित हो सकती है, जो भारत को विश्व मंच पर एक प्रभावशाली शक्ति के रूप में स्थापित कर सकती है। लेकिन वह साथ ही यह चेतावनी भी देते हैं कि यदि युवाओं को सही तरीके से संभाला नहीं गया, तो यह युवा वर्ग एक अनियंत्रित बोझ या 'जनसांख्यिकीय आपदा' भी बन सकता है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि युवाओं में अपार ऊर्जा, उत्साह और आशावाद होता है - और यह पूरी दुनिया में दिखाई देता है। साथ ही, उनमें अपने विचार खुलकर और निडरता से व्यक्त करने का साहस भी होता है। क्या आपको नहीं लगता कि इसी भावना ने ही मात्र 16 वर्ष की ग्रेटा थानबर्ग को 2019 में न्यूयॉर्क सिटी में आयोजित संयुक्त राष्ट्र के क्लाइमेट एक्शन समिट में कार्बन उत्सर्जन के मुद्दे पर विश्व नेताओं को चुनौती देने के लिए प्रेरित किया? उन्होंने अपने प्रसिद्ध भाषण *हाउ डेयर यू?* के माध्यम से गुस्से और भावनाओं से भरी आवाज़ में नेताओं को कठघरे में खड़ा कर दिया था।

उसने गरजते हुए कहा था: आपने अपने खोखले शब्दों से मेरे सपने और मेरा बचपन छीन लिया है। लोग पीड़ित हैं। लोग मर रहे हैं। पूरे पारिस्थितिकी तंत्र तबाह हो रहे हैं। हम एक सामूहिक विनाश की शुरुआत पर खड़े हैं और आप केवल पैसे एवं अनंत आर्थिक विकास की काल्पनिक कहानियों की बात कर रहे हैं जब आवश्यक नीतियाँ और समाधान अभी तक कहीं दिखाई नहीं दे रहे, तब भी आप ऐसे कैसे नज़रें फेरते हुए यहाँ आकर कह सकते हैं कि आप पर्याप्त प्रयास कर रहे हैं? आखिर आपकी हिम्मत कैसे होती है?

क्या इससे अधिक कुछ कहने की आवश्यकता है?

रशीदा भगत

रोटरी में नारी शक्ति को बढ़ावा

मई अंक के संपादकीय संदेश (आरक्षण की जटिल समस्या) में रोटरी में महिलाओं के सशक्तिकरण पर ध्यान केंद्रित किए जाने के साथ ही संसद में महिलाओं के लिए आरक्षण लाने के प्रयासों की चर्चा भी की गई है।

1989 में महिलाओं के रोटरी में प्रवेश के बाद से अब रोटरी की वैश्विक सदस्यता में उनका हिस्सा लगभग 26 प्रतिशत हैं। महिलाओं की भागीदारी के प्रमुख क्षेत्रों में लड़कियों को सशक्त बनाना शामिल है, जिसके लिए स्वास्थ्य, शिक्षा, सुरक्षा और कल्याण से जुड़ी विभिन्न पहलें की जाती हैं। रोटरी की परियोजनाओं में मासिक धर्म स्वच्छता उत्पादों का वितरण, स्कूलों में स्वच्छता सुविधाओं का निर्माण, लिंग-विशिष्ट शौचालयों की व्यवस्था तथा लैंगिक हिंसा से निपटने के प्रयास शामिल हैं।

आजकल रोटरी क्लब व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्रों, सूक्ष्म ऋण और कौशल विकास कार्यक्रमों के माध्यम से महिलाओं की उद्यमिता को बढ़ावा देने में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। महिला सशक्तिकरण के लिए रोटरी फ़ेलोशिप और लड़कियों के सशक्तिकरण के लिए रोटरी एक्शन ग्रुप इन पहलों को वैश्विक स्तर पर आगे बढ़ा रहे हैं।

सिल्विया व्हिटलॉक लीडर्शिप अवॉर्ड एक आधिकारिक पुरस्कार है जो उन सदस्यों को मान्यता देता है जो रोटरी में महिलाओं की उन्नति और नेतृत्व को बढ़ावा देने के लिए कार्य करते हैं।

के एम के मूर्ति
रोटरी क्लब सिकंदराबाद - मंडल 3150

यह एक तथ्य है कि रोटरी में महिलाओं की वैश्विक सदस्यता में कमी है, जो वर्तमान में लगभग 27 प्रतिशत है और यह चिंता का विषय है। जब हम इस कमी के कारणों को समझने की कोशिश करते हैं तो हमें कई तरह के विचार और सुझाव मिलते हैं, लेकिन किसी एक निश्चित कारण को स्पष्ट रूप से बताना कठिन होता है।

संपादक के अनुसार, अक्सर महिलाओं के आरक्षण को नकारात्मक दृष्टि से देखा जाता है और इसका कारण यह बताया जाता है कि ऐसे आरक्षण का अर्थ गुणवत्ता से समझौता करना होता है। हालाँकि जब योग्य उम्मीदवार उपलब्ध हों, तब 'कोटा' तय करना आवश्यक हो सकता है। लेकिन सवाल यह

है कि किसी व्यक्ति की योग्यता को कैसे निर्धारित किया जाए? इसके मानदंड क्या होंगे और उन्हें कौन तय करेगा? यह विषय व्यापक विचार-विमर्श की मांग करता है।

रोटरी में महिलाओं की भागीदारी के संदर्भ में, यिन्का बाबालोला की यह टिप्पणी विचारणीय है: महिलाओं को अवसर देकर, उनके लिए अनुकूल वातावरण तैयार करके और उन्हें सहज महसूस कराकर आप एक महिला नेतृत्वकर्ता को तैयार करेंगे।

निरंजन कार
रोटरी क्लब भुवनेश्वर
मंडल 3262

मैंने अप्रैल अंक में रोटरी क्लब बॉम्बे की धर्मशाला परियोजना के बारे में पढ़ा, जो मुंबई के टाटा मेमोरियल अस्पताल के पास कैंसर रोगियों के लिए चलाई गई है और इसे पढ़कर मेरा हृदय गर्व से भर गया।

इस पर विचार करें: एक कैंसर रोगी सैकड़ों किलोमीटर की यात्रा करता है, इलाज से थका हुआ होता है, खर्चों की चिंता में डूबा होता है और यह भी निश्चित नहीं होता कि उसे रहने की जगह कहाँ मिलेगी। ऐसे में रोटरी धर्मशाला के माध्यम से सहायता करती है-जहाँ उसे स्वच्छ बिस्तर, गरम भोजन, गरिमा और आशा मिलती है, वह भी बहुत ही नाममात्र शुल्क पर।

यही वास्तविक सेवा का रूप है। केवल चेक लिखना ही नहीं बल्कि किसी के सबसे कठिन समय में उसका सहारा बनना भी सेवा है। रोटरी करुणा को पक्की दयालुता में बदल देता है।

रोटरी क्लब बॉम्बे, आपका अभिनंदन। ऐसे क्षण हमें यह याद दिलाते हैं कि 'स्वयं से ऊपर सेवा' केवल एक नारा नहीं बल्कि जीवन जीने का एक तरीका है।

ललित माणिक
रोटरी क्लब उल्हासनगर - मंडल 3142

अप्रैल अंक में निदेशक के सन्देश ने मुझ पर गहरा प्रभाव डाला। रो ई निदेशक के पी नागेश की टिप्पणियाँ अत्यंत सराहनीय हैं। रोटरी क्लबों को उन रोटेरियनों की पहचान करके सम्मानित किया जाना चाहिए जो नि:स्वार्थ रूप से लगातार कार्य करते हैं। आइए, हम सभी मिलकर *भलाई के लिए एकजुट* हों और *एक स्थायी प्रभाव* पैदा करें।

चप्पीडी वीरय्या, रोटरी क्लब सिंगराकोंडा
अड्डाणकी - मंडल 3150

आपके उत्कृष्ट संपादकीयों के लिए बधाई। मेरा एक सुझाव है कि कृपया *रोटरी न्यूज* में योग्य दान-अभियान प्रकाशित किए जाएँ। इससे उन विशाल परियोजनाओं को गति मिलेगी जो धन की कमी की वजह से रुकी हुई हैं।

अशोक जे मेहता
रोटरी क्लब मुंबई नॉर्थ आइलैंड
मंडल 3141

कवर पर: *प्रोजेक्ट सूर्य* के लाभार्थी - रोटरी क्लब कोचिन ग्लोबल (रो ई मंडल 3205) की एक पहल, जो दृष्टिबाधित लोगों को मुख्यधारा की नौकरियों से जोड़ने में मदद करती है।

निदेशक का संदेश

मित्रता हमारी पहचान, सेवा हमारा उद्देश्य

जून माह को **रोटरी फेलोशिप्स** माह के रूप में मनाया जाता है - यह हमें याद दिलाता है कि रोटरी केवल बैठकों और परियोजनाओं से नहीं बल्कि मित्रता, साझा रुचियों और मानवीय संबंधों से भी निर्मित होती है। रोटरी फेलोशिप्स दुनिया भर के सदस्यों को उनकी समान रुचियों के माध्यम से जोड़ती हैं - चाहे वह खेल हो, व्यवसाय हो, संस्कृति हो, यात्रा हो, स्वास्थ्य हो, पर्यावरण हो या सेवा। ये संबंध अक्सर किसी साझा शौक या पेशे से शुरू होते हैं, लेकिन समय के साथ वे आजीवन मित्रता और सार्थक सहयोग में बदल जाते हैं।

पिछले कुछ सप्ताहों में मुझे **नाइजीरिया, केन्या, युगांडा** और **दक्षिण अफ्रीका** के रोटरी क्लबों एवं नेताओं से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। यद्यपि प्रत्येक देश की अपनी अलग चुनौतियाँ, संस्कृतियाँ और जीवनशैली होती हैं, फिर भी एक बात हर जगह समान रूप से महसूस हुई - रोटरी फेलोशिप की आत्मीयता और समुदायों की सच्चे मन से प्रभावी सेवा करने की साझा भावना।

शायद यही रोटरी की वास्तविक अन्तर्राष्ट्रीयता है। रोटरी जगत में हम चाहे जहाँ भी यात्रा करें, हमें हर जगह मित्रता, विश्वास और सेवा की वही भावना देखने को मिलती है। हजारों मील दूर किसी रोटरी क्लब में प्रवेश करने वाला एक रोटेरियन कभी वास्तव में अजनबी नहीं होता। हम अलग-अलग भाषाएँ बोलते हैं, विभिन्न पृष्ठभूमियों से आते हैं और भिन्न परिस्थितियों में जीवन जीते हैं, फिर भी रोटरी हमें एक ऐसा साझा उद्देश्य प्रदान करती है जो भौगोलिक सीमाओं से कहीं आगे है।

इन यात्राओं के दौरान एक और प्रेरणादायक बात यह रही कि क्लब प्रासंगिकता और निरंतरता पर कितनी गंभीरता से ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। दुनिया भर में रोटरी नेता एक ही प्रश्न पूछ रहे हैं - हम अच्छे सदस्यों को कैसे बनाए रखें? हम क्लबों को ऊर्जावान और सक्रिय कैसे बनाए रखें? और हम यह कैसे सुनिश्चित करें कि युवा सदस्यों को रोटरी में उद्देश्य और अपनापन महसूस हो?

सदस्यता वृद्धि महत्वपूर्ण है लेकिन उस वृद्धि को बनाए रखना उससे भी अधिक आवश्यक है। सदस्यों को बनाए रखने के लिए केवल रणनीतियाँ ही काफी नहीं है - यह उनके अनुभवों पर निर्भर करता है। लोग वहीं रुकते हैं जहाँ वे स्वयं को सम्मानित, सहभागी और जुड़ा हुआ महसूस करते हैं। जो क्लब वास्तविक सहभागिता का वातावरण बनाते हैं, सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करते हैं, मित्रता को सशक्त बनाते हैं और सार्थक सेवा के अवसर प्रदान करते हैं, वे हमेशा मजबूत और जीवंत बने रहते हैं।

रोटरी फाउंडेशन हमें यह याद दिलाता है कि दान केवल एक आर्थिक कार्य नहीं है - यह विश्वास, करुणा और साझा जिम्मेदारी की अभिव्यक्ति है। प्रत्येक दान चाहे वह कितना भी छोटा क्यों न हो, दुनिया में कहीं न कहीं किसी का जीवन बदलने की क्षमता रखता है। यह जानकर एक अद्भुत संतोष प्राप्त होता है कि हमारी सामूहिक उदारता किसी की दृष्टि लौटाने, स्वच्छ जल उपलब्ध कराने, शिक्षा को समर्थन देने, बीमारियों से लड़ने और उन समुदायों में आशा जगाने में सहायक बनती है, जिनसे शायद हम कभी व्यक्तिगत रूप से न मिलें। **50 मिलियन डॉलर** के अपने ऐतिहासिक योगदान लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए चलिए हम विश्वास और गर्व के साथ योगदान देना जारी रखें। जब प्रत्येक रोटेरियन भागीदारी करता है, तब टीआरएफ व्यक्तिगत सद्भावना को विश्वभर में असाधारण और स्थायी प्रभाव में परिवर्तित कर देता है।

महाद्वीपों और समुदायों से परे यही भावना हमें एक सूत्र में बाँधे रखती है। आइए, हम इस भावना को आगे बढ़ाएँ और निरंतर *भलाई के लिए एकजुटता* के उद्देश्य के साथ सेवा और सद्भावना का संदेश फैलाते रहें।

के पी नागेश
रो ई निदेशक, 2025-27

2026
कन्वेंशन

मुझे ताइपे ले चलो

अब समय आ गया है! ताइपे में होने वाले रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन के शानदार अनुभव के लिए तैयार हो जाइए।

आपको रोटरी के शीर्ष नेताओं से सीधे अपडेट मिलेंगे, मनमोहक प्रस्तुतियों का आनंद लेने का अवसर मिलेगा और विश्वस्तरीय वक्ताओं से प्रेरणा प्राप्त होगी। आप मलाला यूसुफ़ज़ई के मुख्य भाषण को मिस नहीं करना चाहेंगे, जो सबसे कम उम्र की नोबेल शांति पुरस्कार विजेता और लड़कियों की शिक्षा की प्रबल समर्थक हैं। (और याद रखें, 13-17 जून को होने वाले कन्वेंशन के लिए ताइवान की अंतिम समय की बुकिंग हेतु ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन खुला रहेगा, और कुछ सदस्य ऑन-साइट रजिस्टर भी कर सकेंगे।)

तो पहली बार आने वाले लोगों के लिए आपकी क्या सलाह है? क्या आप उन अनेक सदस्यों में से हैं, जो सीधे 'हाउस ऑफ़ फ्रेंडशिप' की ओर चले जाते हैं, जिसे रोटरी समुदाय का मुख्य केंद्र माना जाता है? या शायद आप अपने घर के दोस्तों के साथ शानदार अंदाज़ में प्रवेश करना पसंद करते हैं, जो जोश से भरे हों और उद्घाटन समारोह में अपने देश का गौरव दिखाने के लिए खास पोशाक में सजे हों?

चित्र : एन यौंग ङ्

आप कन्वेंशन में किसी भी तरह से शामिल हों, थोड़ा समय निकालकर 'ब्रेकआउट सेशंस' में अवश्य भाग लें, ताकि आप अपने सीखने के कार्यक्रम को अपनी रुचियों के अनुसार तय कर सकें। इससे आपके जुनून को नई ऊर्जा मिलेगी और आपके क्लब को आगे बढ़ने में मदद मिलेगी। प्रदर्शनी क्षेत्र में पुराने मित्रों से अचानक होने वाली मुलाकातों और नए दोस्तों से परिचय बढ़ाने के उन यादगार पलों का भरपूर आनंद लें।

कन्वेंशन के बाहर भी आपको यहाँ के प्रमुख आकर्षणों तक आसानी से पहुँच मिलेगी: गगनचुंबी इमारत ताइपे 101, डंपलिंग हाउस और खुले में लगने वाले फूड मार्केट और नेशनल पैलेस म्यूजियम, जहाँ लाखों शाही कलाकृतियाँ और ऐतिहासिक वस्तुएँ मौजूद हैं।

"यदि आप ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्हें यात्रा करना और नए लोगों से मिलना पसंद है, और जो नए विचारों, समाधान तथा संसाधनों के लिए अन्य देशों के नेताओं से जुड़ना चाहते हैं," डोमिनिकन रिपब्लिक के सैंटो डोमिंगो बेला विस्टा के रोटरेक्ट क्लब के जोशुआ अरियास कहते हैं, तो यह एक एकदम सही कन्वेंशन है। ■

गवर्नर्स काउंसिल

RID 2981	लियोन जे
RID 2982	शिवसुंदरम पी
RID 3000	कार्तिक जे
RID 3011	रविंदर गुगनानी
RID 3012	अमिता अनिल मोहिंदरू
RID 3020	कल्याण चक्रवर्ती वाई
RID 3030	ज्ञानेश्वर शेवाळे
RID 3040	सुशील मल्होत्रा
RID 3053	निशा शेखावत
RID 3055	निगमकुमार एल चौधरी
RID 3056	प्रज्ञा मेहता
RID 3060	अमरदीप सिंह बुनेत
RID 3070	रोहित ओबेरॉय
RID 3080	रवि प्रकाश
RID 3090	भूपेश मेहता
RID 3100	नितिन कुमार अग्रवाल
RID 3110	राजेन विद्यार्थी
RID 3120	अशुतोष अग्रवाल
RID 3131	संतोष मधुकर मराठे
RID 3132	सुधीर वी लातुरे
RID 3141	मनीष मोटवानी
RID 3142	हर्ष वीरेंद्र मकोल
RID 3150	राम प्रसाद एस वी
RID 3160	रविंद्र एम के
RID 3170	अरुण डैनियल भांडारे
RID 3181	रामकृष्ण पी करून
RID 3182	पलक्शा के
RID 3191	श्रीधर बी आर
RID 3192	एलिज़ाबेथ चेरियन
RID 3203	धनासेकर बी
RID 3204	बिजोश मैनुअल
RID 3205	रमेश जी एन
RID 3206	चेल्ला के राघवेन्द्रन
RID 3211	टीना एंटनी कुन्नुमकल
RID 3212	जे धिनेश बाबू
RID 3231	वी सुरेश
RID 3233	डी देवेंद्रन
RID 3234	विनोद कुमार सराओगी
RID 3240	कामेश्वर सिंह एलांगबम
RID 3250	नम्रता
RID 3261	अमित जायसवाल
RID 3262	मनोज कुमार त्रिपाठी
RID 3291	रामेन्दु होमचौधुरी

यह पत्रिका **पी टी प्रभाकर** द्वारा दुगर टावर्स, तीसरी मंज़िल, 34, मार्शल्स रोड, एग्मोर, चेन्नई 600 008 से **रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट** की ओर से प्रकाशित की जाती है, इसका संपादन **रशीदा भगत** करती हैं और इसे **रासी ग्राफिक्स** द्वारा 40 पीटर्स रोड, रोयापेट्टा, चेन्नई - 600 014, भारत में प्रिंट किया जाता है।

योगदान का स्वागत है लेकिन संपादित किया जाएगा। प्रकाशित सामग्री का आरएनटी की अनुमति सहित, यथोचित श्रेय देते हुए प्रयोग किया जा सकता है।

Website

न्यासी मंडल

एम मुरुगानंदम **रो ई निदेशक और अध्यक्ष, रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट**	RID 3000
के पी नागेश **रो ई निदेशक**	RID 3191
डॉ भरत पांड्या **टीआरएफ ट्रस्टी**	RID 3141
राजेंद्र के साबू	RID 3080
कल्याण बेनर्जी	RID 3060
शेखर मेहता	RID 3291
अशोक महाजन	RID 3141
पी टी प्रभाकर	RID 3234
डॉ मनोज डी देसाई	RID 3060
सी भास्कर	RID 3000
कमल संघवी	RID 3250
डॉ महेश कोटबागी	RID 3131
ए एस वेंकटेश	RID 3234
राजु सुब्रमण्यन	RID 3141
अनिरुधा रॉयचौधरी	RID 3291
गुलाम ए वाहनवती	RID 3141

कार्यकारी समिति के सदस्य (2025-26)

रोहित ओबेरॉय **अध्यक्ष, गवर्नर्स काउंसिल**	RID 3070
ज्ञानेश्वर शेवाळे **वाईस चेयरमेन, गवर्नर्स काउंसिल**	RID 3030
एम के रविंद्र **सचिव, गवर्नर्स काउंसिल**	RID 3160
चेल्ला के राघवेन्द्रन **कोषाध्यक्ष, गवर्नर्स काउंसिल**	RID 3206

संपादक
रशीदा भगत

उप संपादक
जयश्री पद्मनाभन

प्रशासन और विज्ञापन प्रबंधक
विश्वनाथन के

रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट
3rd फ्लोर, दुगर टावर्स, 34 मार्शल रोड, एग्मोर
चेन्नई 600 008, भारत
फोन: 044 42145666
rotarynews@rosaonline.org
www.rotarynewsonline.org

Magazine

फाउंडेशन ट्रस्टी अध्यक्ष का संदेश

सार्वजनिक हित के लिए

लगभग एक साल पहले, रोटरी फाउंडेशन के ट्रस्टी चेयर के रूप में मैंने आपको अपना पहला संदेश लिखा था, जिसमें मैंने आपको और हमारे सभी सदस्यों को फाउंडेशन तथा दुनिया को बेहतर बनाने के उसके अनोखे तरीके पर एक नए नज़रिए से देखने के लिए प्रोत्साहित किया था।

इसके बाद के महीनों में मैंने दुनिया भर के रोटरी सदस्यों को उन परियोजनाओं से जुड़ी अपनी कहानियाँ साझा करने के लिए आमंत्रित किया, जिनका नेतृत्व उन्होंने फाउंडेशन के सहयोग से किया था। उन्होंने उन प्रभावों का वर्णन किया, जिन्हें उन्होंने स्वयं प्रत्यक्ष रूप से देखा था, और बताया कि किस प्रकार हजारों लोगों के जीवन में परिवर्तन आया है।

अब, जबकि आपने इतनी सफल परियोजनाओं और उन्हें साकार करने वाले बेहतरीन सदस्यों तथा समर्पित कर्मचारियों के बारे में सुना है, मैं आपसे भी आग्रह करता हूँ कि आप इस सफलता की कहानी का हिस्सा बनें।

रोटरी फाउंडेशन को दिया गया आपका दान पहले से ही एक बड़ा बदलाव ला रहा है। लेकिन मैं इसे एक कदम और आगे ले जाना चाहूँगा और आपको और भी व्यापक सोचने के लिए प्रोत्साहित करूँगा: उस क्षेत्र में विशेष निवेश करने पर विचार करें, जो आपके लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।

हममें से हर किसी का अपना एक विशेष जुनून होता है। फिर भी, हम सभी में एक बात समान है: हम चाहते हैं कि दुनिया भर के लोगों का जीवन बेहतर बने। रोटरी में, 'द रोटरी फाउंडेशन' की सहायता से एक बेहतर दुनिया का आपका सपना साकार हो सकता है। क्योंकि रोटेरियन केवल सपने नहीं देखते - वे अपने सपनों को हकीकत में बदलते हैं। और ये काम अनगिनत लोगों के जीवन में वास्तविक और स्थायी परिवर्तन लाते हैं।

पोलियो टीकाकरण में अपने निवेश के माध्यम से आप यह सुनिश्चित करने में योगदान देते हैं कि कोई भी बच्चा फिर कभी पोलियो का शिकार न हो। रोटरी शांति केंद्रों में अपने निवेश के ज़रिए आप विश्व शांति को सशक्त बनाने में सहयोग करते हैं। हमारे वार्षिक कोष में निवेश करके आप यह सुनिश्चित करते हैं कि प्रभावी परियोजनाओं को निरंतर और स्थायी रूप से वित्तीय सहायता मिलती रहे।

फ़ाउंडेशन में दिया गया हर योगदान बड़ा होना आवश्यक नहीं है। प्रत्येक उपहार हमें उस स्थायी प्रभाव को हासिल करने में मदद करता है, जिसके बारे में आपने इस वर्ष पढ़ा है। दुनिया को रोटरी की आवश्यकता पहले से कहीं ज़्यादा है। उसे हमारे साहस, आशावाद और जनहित के प्रति हमारी प्रतिबद्धता की ज़रूरत है। यही कारण है कि हमें आपकी आवश्यकता है।

रोटरी में हमारे काम के कई अलग-अलग क्षेत्र हैं। चाहे आप नाइजीरिया में मातृ स्वास्थ्य, बेलीज़ में साक्षरता कार्यक्रमों, कठिन परिस्थितियों से उबर रहे समुदायों के आर्थिक सशक्तिकरण, या स्वच्छ जल संरक्षण परियोजनाओं को समर्थन देने का निर्णय लें - आपका निवेश स्थायी और मापनीय प्रभाव उत्पन्न करेगा। फाउंडेशन को दान देना, सिर्फ़ प्रोजेक्ट्स के लिए पैसे देने से कहीं ज़्यादा बढ़कर है। यह दूसरों के प्रति अपनी करुणा और हमदर्दी दिखाने का एक तरीका है। जैसा कि मैंने पहले भी कई बार कहा है-और अब तो मुझे इस बात पर पहले से भी कहीं ज़्यादा यकीन है-कि हम जो कुछ भी करते हैं, उससे कहीं न कहीं, किसी न किसी के लिए कोई न कोई नया अवसर ज़रूर खुलता है।

सेवा करने का यह अवसर मिलने के लिए मैं आभारी हूँ।

होल्गर नेक
ट्रस्टी अध्यक्ष, द रोटरी फौउंडेशन

आत्मनिर्भरता की राह

किरण ज़ेहरा

अक्षय के जीवन की शुरुआत दो ऐसी चुनौतियों के साथ हुई जिन्हें उसने खुद नहीं चुना था - आँखों की रोशनी ना होना और आर्थिक सुरक्षा ना होना। जन्म से ही दृष्टिहीन होने के कारण, उसने बहुत कम उम्र में ही अपनी माँ के करीब रहना, उनके मार्गदर्शन में चलना और अपनी ज़रूरत की चीज़ों के लिए किसी और का इंतज़ार करना सीख लिया था। बीस साल की उम्र तक, वह शायद ही कभी अकेले घर से बाहर निकलता था।

जब उसे पहली बार *प्रोजेक्ट सूर्य* से परिचित कराया गया - जो रोटरी क्लब कोचीन ग्लोबल, रोई मंडल 3205, की एक पहल है, जिसका उद्देश्य दृष्टिबाधित लोगों को मुख्यधारा की नौकरियों में लाना है - तो वह प्रशिक्षण कक्ष में धीरे-धीरे दाखिल हुआ, अपनी छड़ी से फर्श को टटोलते हुए जब तक कि मुझे एक कुर्सी नहीं मिल गई। एक प्रशिक्षक ने मेरा हाथ कीबोर्ड पर रखा। स्क्रीन रीडर मुझसे बातचीत करने लगा। मैंने तुरंत अपनी उंगलियाँ पीछे खींच लीं। मेरा सिर चकरा रहा था, वह याद करता है। उससे भी ज्यादा शर्मिंदगी तब हुई जब मुझसे अंग्रेज़ी में एक पंक्ति बोलने को कहा गया। मैंने कुछ शब्द बुदबुदाए, फिर रुक गया। मैंने सिर झुका लिया और अपनी छड़ी को कसकर पकड़ लिया। मैंने पहले कभी अंग्रेज़ी में बात नहीं की थी।

हर बैच को एक सामुदायिक प्रोजेक्ट पूरा करना होता है, जिसमें वे समुदाय के लिए कुछ सार्थक योगदान देते हैं और जिससे कम से कम 100 लोगों को फ़ायदा पहुँचता है।

दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए गतिशीलता प्रशिक्षण।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के हिस्से के तौर पर, दृष्टिबाधित छात्र अपनी ज़रूरतों के लिए खरीदारी करना सीखते हुए।

एक दृष्टिबाधित छात्र, दूसरे छात्र को स्मार्ट असिस्टेंस चश्मा आज़माने में मदद करते हुए।

IBM में अपने वर्क स्टेशन पर के अक्षय।

लेकिन अक्षय प्रशिक्षण केंद्र आता रहा। एक सुबह, मैंने बिना किसी मदद के कंप्यूटर पर तीन कमांड पूरे किए। एक और दिन, मैं गेट से कक्षा तक बिना किसी का हाथ पकड़े चलकर गया। ये छोटी-छोटी बातें थीं, लेकिन इनका असर बड़ा था। कुछ हफ्तों बाद, उसने एक मॉक इंटरव्यू दिया, और मैंने पहली बार अंग्रेज़ी में इतनी ज़ोर से बातचीत की थी, वह मुस्कुराता है।

आज, वह आईबीएम में एक एक्सेसिबिलिटी टेस्टर के रूप में काम करता है, और हर महीने एक लाख से अधिक कमाता है। जल्द ही उसने अपने परिवार के लिए एक घर भी बनाया, मेरे माता-पिता का अपना पहला घर।

अक्षय के लिए, यह यात्रा आत्मविश्वास या महत्वाकांक्षा से शुरू नहीं हुई थी। इसकी शुरुआत एक शांत युवक से शुरू हुई जो कंप्यूटर के सामने बैठा था और उस आवाज़ के साथ तालमेल बिठाने की कोशिश कर रहा था जो उसे बहुत तेज़ लग रही थी। *प्रोजेक्ट सूर्य* ने उसे एक ऐसा जीवन बनाने में मदद की जिसकी उसने कभी कल्पना नहीं की थी, रोटरी कलब कोचीन ग्लोबल के सदस्य और प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर जोबी ए थट्टिल कहते है।

प्रोजेक्ट सूर्य एक दीर्घकालिक कौशल विकास कार्यक्रम है जो दृष्टिबाधित वयस्कों को कंप्यूटर साक्षरता, गतिशीलता, अंग्रेज़ी में बातचीत और कार्यस्थल की तैयारी में प्रशिक्षित करता है। इसका तरीका सरल है: व्यावहारिक कौशल सिखाना, धीरे-धीरे आत्मविश्वास बढ़ाना और प्रशिक्षुओं को मुख्यधारा के रोजगार के लिए तैयार करना, थट्टिल कहते हैं। इतने वर्षों में, इस कार्यक्रम ने सैकड़ों दृष्टिबाधित युवाओं के लिए हिचकिचाहट और आत्मनिर्भरता के बीच एक पुल का काम किया है।

शुरुआत

इस पहल की शुरुआत 2008 में हुई, जब क्लब के सदस्य जॉर्ज मैथ्यू ने उन दृष्टिबाधित वयस्कों की संख्या पर शोध किया, जो अपनी स्कूली

शिक्षा तो पूरी कर रहे थे, लेकिन लगभग बिना किसी औपचारिक प्रशिक्षण के नौकरी के बाज़ार में प्रवेश कर रहे थे। रोटरी क्लब कोचीन ग्लोबल (आरसीसीजी) के समर्थन और सोसाइटी फॉर रिहैबिलिटेशन ऑफ विजुअली चैलेंज्ड (एसआरवीसी) के सहयोग से, इन्फोपार्क के तत्कालीन सीईओ सिद्धार्थ भट्टाचार्य के सहयोग से इन्फोपार्क कोचीन में पहली 10-सीटों वाली कंप्यूटर लैब स्थापित की गई।

बेंगलुरु की गैर-लाभकारी संस्था एनेबल इंडिया, जो विकलांग लोगों के सशक्तिकरण के लिए काम करता है, ने पाठ्यक्रम और कार्यप्रणाली प्रदान की। छह महीने के पाठ्यक्रम के पहले बैच में सात छात्रों ने नामांकन किया। 2015 में एसआरवीसी के अलग होने के बाद, रोटरी क्लब ने इनेबल इंडिया के साथ फिर से सहयोग स्थापित किया और इसकी लंबे समय से मेंटर रहीं मरीना जॉर्ज के मार्गदर्शन में इस पहल को *प्रोजेक्ट सूर्य* नाम दिया। 2017 में प्रशिक्षण क्षमता को बढ़ाकर प्रति बैच 15 छात्रों तक किया गया और आवास व यात्रा जैसी सहायता सुविधाएँ भी सुदृढ़ की गईं। केंद्र में कंप्यूटर, गतिशीलता, संवादात्मक अंग्रेज़ी, व्यक्तित्व विकास, सॉफ्ट स्किल्स और सहायक तकनीक का प्रशिक्षण दिया जाने लगा।

महामारी के दौरान, इस केंद्र का संचालन लगभग चार वर्षों तक पूरी तरह ऑनलाइन रहा। 2023 में, केंद्र के निदेशक और क्लब सदस्य कला रविशंकर के नेतृत्व में इंफोपार्क में एक हाइब्रिड प्रारूप में प्रशिक्षण वापस शुरू हुआ। संचार और कार्यस्थल तैयारी से जुड़े नए मॉड्यूल जोड़े गए, मूल्यांकन को मानकीकृत किया गया और प्रशिक्षण संरचना को मजबूत किया गया। हाइब्रिड मॉडल ने केरल और पड़ोसी राज्यों के छात्रों को भी कार्यक्रम से जुड़ने का मौका दिया, जिनमें से कई छात्र पहले व्यक्तिगत रूप से नहीं आ पाते थे, थट्टिल कहते हैं।

आज, यह परियोजना कोच्चि के इंफोपार्क में एक पूर्ण रूप से सुसज्जित कंप्यूटर और जीवन

अक्षय अब IBM में एक 'एक्सेसिबिलिटी टेस्टर' के तौर पर काम करते हैं और हर महीने ₹1 लाख से ज़्यादा कमाते हैं। उन्होंने अपने परिवार के लिए एक घर बनाया है–यह पहला घर है, जिसके मेरे माता-पिता कभी मालिक बने।

इन्फ़ोपार्क में दृष्टिबाधित छात्रों द्वारा एक सामुदायिक परियोजना के लिए धन जुटाने हेतु बिक्री स्टॉल का आयोजन किया गया।

दृष्टिबाधित लोगों के लिए गतिशीलता प्रशिक्षण का एक अभ्यास।

कौशल प्रशिक्षण केंद्र के रूप में कार्य कर रही है, जो दृष्टिबाधित वयस्कों के लिए मुफ्त एवं संरचित कार्यक्रम प्रदान करता है। यह सहायक प्रौद्योगिकी एवं जीवन कौशल का प्रशिक्षण देता है, कॉर्पोरेट संवेदीकरण सत्र आयोजित करता है और व्यक्तियों व परिवारों के लिए जागरूकता एवं समुदायिक आउटरीच कार्यक्रम चलाता है। रोटरी क्लब कोचीन ग्लोबल की अक्षय निधि से पूरी तरह वित्तपोषित यह कार्यक्रम, अल्पकालिक हस्तक्षेप के बजाय दीर्घकालिक स्थिरता के लिए तैयार किया गया है, वह कहते हैं।

अपनी स्थापना के बाद से, इस परियोजना ने 20 फाउंडेशन कोर्स बैच पूरे किए हैं, जिनमें 300 से अधिक दृष्टिबाधित उम्मीदवारों को गहन प्रत्यक्ष प्रशिक्षण दिया गया, और 45 से अधिक ऑनलाइन बैच भी संचालित किए गए। 900 से अधिक लोगों ने जागरूकता कार्यशालाओं में भाग लिया है, जो गतिशीलता, सहायक उपकरणों और रोजगार के अवसरों पर केंद्रित थीं। थट्टिल को इस बात पर गर्व है कि आज, *प्रोजेक्ट सूर्य* के लगभग 85 प्रतिशत छात्र सक्रिय रोजगार में संलिप्त हैं।

भर्ती प्रक्रिया को समझझाते हुए, थट्टिल कहते हैं, हम अपने दृष्टिबाधित उम्मीदवारों के लिए उपयुक्त अवसरों की तलाश करने के लिए सीधे कंपनियों से संपर्क करते हैं। जब हमें किसी रिक्ति के बारे में पता चलता है, तो हम योग्य उम्मीदवारों के सीवी साझा करते हैं और इंटरव्यू प्रक्रिया पर कंपनी से संपर्क बनाए रखते हैं। हम अपने पूर्व छात्रों के नेटवर्क के माध्यम से भी मजबूत संबंध बनाए रखते हैं और उनके रेफरल के आधार पर कंपनियों से संपर्क करते हैं। कंपनी विजिट भी आयोजित की जाती हैं ताकि उम्मीदवार संगठन और उसकी कार्य संस्कृति को बेहतर ढंग से समझ सकें, और इन दौरों के दौरान संभावित रिक्तियों के बारे में भी जानकारी ली जाती है।

इस परियोजना की एक खास बात यह है कि हर बैच को एक सामुदायिक परियोजना पूरी करनी होती है जिसमें कम से कम 100 लाभार्थियों वाले समुदाय के लिए कुछ सार्थक योगदान देना होता है। एक बैच ने मलप्पुरम के जीएम एलपी स्कूल को ₹20,000 के शैक्षिक खिलौने जैसे शतरंज, कैरम बोर्ड और बिल्डिंग ब्लॉक्स दान किए। इसके लिए धन जुटाने हेतु, उम्मीदवारों ने इंफोपार्क में एक बिक्री स्टॉल भी लगाया।

एक छात्र ब्रेल में एक्सेल शीट्स सीखती हुई।

सफल नियुक्तियाँ

पूर्णिमा वीएम एक एकल-अभिभावक परिवार में पली-बढ़ी हैं और उन्होंने इंजीनियरिंग में मास्टर डिग्री पूरी की है। वह एक निजी कंपनी में काम कर रही थीं, जहाँ उनके काम में अक्सर नाइट शिफ्ट के दौरान कंप्यूटर पर लंबे समय तक काम करना शामिल था। समय के साथ, वह कार्यात्मक निम्न दृष्टि से पीड़ित हो गईं। उन्होंने *प्रोजेक्ट सूर्य* में शामिल होकर सहायक तकनीक के माध्यम से पढ़ाई और काम करने के नए तरीके सीखे। उन्होंने भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) की प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी की और लिखित परीक्षा तथा इंटरव्यू दोनों में सफलता प्राप्त की।

ISRO में प्रशिक्षु के लिए चयनित होना मेरे लिए एक बड़ी उपलब्धि थी। इसने यह साबित कर दिया कि दृष्टि खोने से मेरी बुद्धिमत्ता, कौशल या सफल होने के मेरे दृढ़ निश्चय में कोई कमी नहीं आई है।

जब 2019 में गोकुल एम प्रशिक्षण केंद्र में आए, तब उन्होंने कभी कंप्यूटर का

प्रोजेक्ट सूर्य का 21वाँ बैच, अपने मेंटर मरीना जॉर्ज (आगे की पंक्ति, दाईं ओर से तीसरी) और केंद्र निदेशक कला रविशंकर (आगे की पंक्ति, दाईं ओर) के साथ।

उपयोग नहीं किया था। उनकी दृष्टि कम थी और वह यह नहीं जानते थे कि स्क्रीन-रीडिंग सॉफ़्टवेयर का उपयोग कैसे किया जाता है, जो दृष्टिबाधित लोगों के लिए स्क्रीन पर लिखी बातों को पढ़कर सुनाता है। यहाँ तक कि मैग्नीफायर जैसे सरल उपकरण भी उनके लिए नए थे।

शुरुआत में, गोकुल एम बहुत शांत थे। वे कक्षा में ज्यादा बात नहीं करते थे और सामूहिक गतिविधियों में जिम्मेदारी लेने से बचते थे। नए टूल्स का इस्तेमाल सीखना - जैसे कि टेक्स्ट पढ़ने वाली कंप्यूटर की आवाज़ को सुनना, बड़ी स्क्रीन का उपयोग करना और कीबोर्ड शॉर्टकट याद रखना - शुरुआत में उनके लिए निराशाजनक था, थट्टिल कहते है।

लेकिन छह महीनों में, वे कंप्यूटर के उपयोग में सहज हो गए और उनका आत्मविश्वास भी बढ़ा। जब सामुदायिक परियोजना का समय आया, तो गोकुल ने नेतृत्व संभाला। उनकी टीम ने एक उच्च प्राथमिक विद्यालय के लिए खिलौने और धन जुटाने के अभियान का आयोजन किया। उन्होंने कड़ी मेहनत की, फ़ोन किए, दान इकट्ठा किया, और हर चीज़ का तालमेल बिठाया।

कोर्स पूरा होने से पहले ही, उन्हें ग्रामीण डाक सेवक के रूप में सरकारी नौकरी मिल गई, जहाँ वे उन्हीं कंप्यूटर कौशलों का उपयोग करते हैं जिनसे वे पहले असहज महसूस करते थे।

ISRO में अप्रेंटिस के तौर पर चुना जाना मेरे लिए एक बड़ी कामयाबी थी। इससे यह साबित हुआ कि नज़र जाने से मेरी समझ कम नहीं हुई।

पूर्णिमा

2018 में, संदीप जी (30) एक नर्स के रूप में काम कर रहे थे। उनके पास भारत और विदेशों में अस्पतालों में काम करने का 10 साल से अधिक का अनुभव था।

फिर उनका जीवन बदल गया। एक पैर की चोट के कारण ऑप्टिक नर्व को नुकसान पहुँचा और वे पूरी तरह दृष्टिहीन हो गए। केरल के करुणागपल्ली में रहने वाले संदीप को अपने करियर और जीवन दोनों के बारे में फिर से सोचना पड़ा। उन्होंने मिमिक्री, गायन, फिल्म निर्माण और अभिनय के माध्यम से कुछ आय अर्जित की, लेकिन काम नियमित नहीं था।

2024 में, उन्होंने *प्रोजेक्ट सूर्य* के छह महीने के कोर्स में प्रवेश लिया। शुरुआती दिन कठिन थे क्योंकि उन्हें घर की याद आती थी, लेकिन धीरे-धीरे उन्होंने खुद को संभाला और जीवन में नई दिशा पाई। इसी दौरान मैंने सफेद छड़ी का उपयोग करना शुरू किया और एर्नाकुलम और कोल्लम के बीच खुद यात्रा करना सीखा। उन्होंने एनवीडीए जैसे स्क्रीन रीडर सॉफ़्टवेयर के साथ कंप्यूटर का उपयोग करना सीखा और वर्ड, एक्सेल व ईमेल का प्रशिक्षण लिया।

आज, संदीप केरल ब्लाइंड स्कूल सोसाइटी में सहायक प्रशिक्षक के रूप में कार्यरत हैं। दृष्टि खोने से मेरा जीवन बदला, लेकिन खत्म नहीं हुआ। इसके बजाय, मैंने एक नया रास्ता बनाया, जो दृष्टि पर नहीं, बल्कि सीखने, तालमेल बिठाने और दृढ़ संकल्प पर आधारित है, वह कहते हैं।

ब्लाइंड वॉक

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के सामने आने वाली चुनौतियों के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए, क्लब ने इन्फोपार्क में व्हाइट केन डे (15 अक्टूबर) मनाया, जिसमें प्रतिभागियों ने आँखों पर पट्टी बांधकर और सफेद छड़ी लेकर पदयात्रा में हिस्सा लिया। *प्रोजेक्ट सूर्य* के छात्रों ने भी इस कार्यक्रम में भाग लिया। ■

रोटरी समाचार

में अपनी प्रतिष्ठित परियोजना प्रकाशित करवाइए

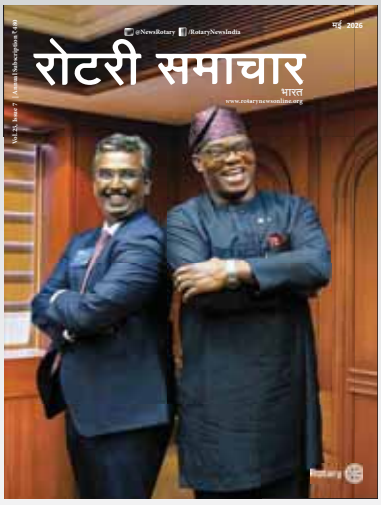

ऐसे रोटेरियन और रोटरी क्लब, या मंडल, जो सुनियोजित एवं ध्यानपूर्वक निष्पादित की गयी परियोजनाओं का बीड़ा उठाते है जिनसे लोगों की ज़िंदगियाँ परिवर्तित होती है एवं स्थानीय समुदाय लाभांवित होता है, वे अन्य रोटरी क्लबों को भी अपने बारे में ज्ञात करवाना चाहते है। आप में से बहुत से लोग सोचते है कि ऐसा करने का सबसे अच्छा तरीका है परियोजना को *रोटरी समाचार* में प्रदर्शित करना, जो कि **1.6 लाख रोटेरियनों, लगभग 1,000 पुस्तकालयों, शैक्षणिक संस्थानों, डॉक्टरों के प्रतीक्षा कक्ष, क्लीनिक,** इत्यादि में प्रसारित होती है और हर महीने लगभग 4 लाख पाठकों द्वारा पढ़ी जाती है।

रोटरी समाचार में हम इस बात से सहमत है कि बड़ी परियोजनाओं के निष्पादन में रोटेरियनों द्वारा लगाए गए कठिन परिश्रम एवं धन को आपकी पत्रिका में पर्याप्त रूप से सम्मिलित किया जाना चाहिए। लेकिन हमारी समस्या यह है कि ज्यादातर हमें ऐसी परियोजनाओं की कोई जानकारी नहीं होती है। निश्चित ही आप सूचना एवं विपणन के महत्व को समझते है। जबकि अधिकतर समय हम नियमित कल्याणकारी परियोजनाओं, जो समुदाय के लिए आवश्यक है, से घिरे हुए होते है, जैसे कि रक्त दान शिविर या एक वाहन भेंट करना या मोतियाबिंद की जांच, **हम अक्सर बड़ी, बेहतर एवं अनोखी परियोजनाओं से बस इस सरल कारण से चूक जाते है कि किसी ने भी हमें उसके बारे में नहीं बताया था।**

तो यहाँ पर आपके संचार को सही स्थान पर लाने का एक निमंत्रण है; अपने क्लब से किसी व्यक्ति को अपनी प्रतिष्ठित परियोजनाओं के बारे में *रोटरी समाचार* से बात करने का कार्य सौंपे। यदि आप सोचते है कि उन्हें बाकि के रोटरी जगत के साथ साझा किया जाना चाहिए, तो कृपया कर लिखिए, या परियोजनाओं के विभिन्न चरणों की जानकारी को क्रमबद्ध कीजिये, पत्रकारिता या रिपोर्ट लिखने के मौलिक मानदंडों को ध्यान में रखते हुए।

- उत्पत्ति - परियोजना के बारे में कब विचार किया गया।
- कारण - क्यों इसकी योजना बनाई गयी; बेशक स्थानीय समुदाय की आवश्यकता की पूर्ती के लिए। यह आवश्यकता क्या थी?
- पैसा कैसे इकट्ठा किया गया; क्या यह एक टीआरएफ अनुदान था?
- चुनौतियाँ - क्या पैसा इकट्ठा करना कोई समस्या थी? क्या सरकारी मंजूरी अपेक्षित थी; इन्हें कैसे हासिल किया गया। अन्य चुनौतियाँ और कैसे उनके समाधान ढूंढें गए।
- निष्पादन - समय सीमा जिसके अंदर परियोजना पूर्ण की गयी; विभिन्न चरण।
- लाभार्थी - *रोटरी समाचार* में आपके क्लब की परियोजना के शामिल होने का सबसे अच्छा मौका होगा यदि **आप हमें मानव हित की कहानियाँ देंगे... लाभार्थियों की तस्वीरें एवं उनसे बातचीत।**
- तस्वीरें - एक तस्वीर 1,000 शब्दों के बराबर होती है। परियोजना एवं उसके लाभार्थियों की **अच्छी, क्रियाशील तस्वीरें लीजिये।**
- परियोजना के नायक - परियोजना में पूरे जोश के साथ शामिल रोटेरियनों पर प्रकाश डालिए एवं व्यक्त कीजिये, यदि वे क्लब नेतृत्वकर्ता नहीं है और मौन कार्यकर्ता है तो भी।
- चूंकि रोटरी अधिक **महिलाओं एवं युवा सदस्यों को शामिल करने के लिए उत्सुक है, ऐसे समूहों द्वारा की गयी परियोजनाओं के बारे में हमे बताइए।**

एक बार यह सब जमा लेने पर, अपनी परियोजना का दौरा करने के लिए हमें आमंत्रित कीजिये। याद रखिये कि हमारे पास प्रति माह केवल एक पत्रिका है और इसमें जगह की बहुत अधिक मांग है। इसलिए, जैसा कि एक RNT ट्रस्टी ने हाल ही में संपन्न हुई एक बैठक में ध्यान दिलाया था, अंतर कीजिये कि क्या जीएमएल के लिए उपयुक्त है, और क्या रोटेरियनों के लिए राष्ट्रीय पत्रिका में भेजा जाना चाहिए।

कम्बल, किताबें या बेंच बांटने जैसी सभी प्रकार की गतिविधियों को भेजने के बजाय, हमें पत्रिका के लिए अपनी सर्वश्रेष्ठ परियोजना भेजिए।

अंत में, हम केवल विशाल परियोजनाओं को ही नहीं खोज रहे है जिनमें वैश्विक अनुदानों से सैकड़ों हजारों डॉलर की लागत लगी हो। यहाँ तक कि **एक छोटी परियोजना जिसमें एक अनोखा विचार हो, और जो स्थानीय समुदाय को एक सरल, अलग समाधान दे सके,** का स्वागत है।

अवश्य अपने सुझाव भेजिए:
rushbhagat@gmail.com
पर संपादक को और
rotarynewsmagazine@gmail.com
पर **रोटरी समाचार संपातकीय विभाग** से संपर्क करें।

संपादक

रशीदा भगत

रो ई मंडल 3192 डिस्ट्रिक्ट रोटरेक्ट प्रतिनिधि एवं रोटेरियन जेनिस फिलिप।

रोटरी को घर-घर तक पहुँचाना ही मेरा सपना है

रशीदा भगत

जेनिस फिलिप, जो रो ई मंडल 3192 की मंडल रोटरेक्ट प्रतिनिधि (डीआरआर) और रोटरी की सहायक आरपीआईसी हैं, वो एक रोटरेक्टर होने के साथ साथ एक रोटेरियन भी है। जब उनसे पूछा गया कि उन्होंने ये दोनों बनना क्यों चुना, तो उन्होंने कहा: मेरा परिवार समाज को वापस देने में विश्वास रखता है और हम कुछ लोगों का एक समूह हैं सभी पड़ोसी जिन्होंने 9 साल पहले रोटरी क्लब बैंगलोर विद्यारणपुरा की शुरुआत की थी। उस समय मैं एक रोटरेक्टर थी और मेरी माँ, जो तब क्लब में शामिल हुई थीं, अब उसकी नवनिर्वाचित अध्यक्ष हैं। मेरे पिता मंडल शिक्षण समन्वयक हैं।

जेनिस पाँच साल पहले उसी क्लब में शामिल हुई थीं और उन्होंने अपनी रोटरेक्ट सदस्यता भी बनाए रखी। इसी वजह से वह न केवल डीआरआर बनीं बल्कि देश की पहली ऐसी डीआरआर भी बनीं जो सहायक आरपीआईसी भी है।

रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट के कार्यालय में बैठकर वह आकर्षण और आत्मविश्वास दोनों को प्रदर्शित करती हुई कहती हैं कि रोटरी ने उनके पूरे परिवार के मन में सेवा के प्रति उचित दृष्टिकोण विकसित किया है।

जब उनसे पूछा गया कि पिछले 10 वर्षों में रोटरेक्ट ने उन्हें क्या दिया है, तो वह कहती है, बहुत सारी चीजें -नेतृत्व कौशल और बोलने का एक मंच। मैं आज जो भी हूँ, 10 साल पहले रोटरेक्ट में कदम रखते वक्त वैसी नहीं थी। मुझमें आत्मविश्वास की बहुत कमी थी, मैं हमेशा बोलने से डरती थी। मुझे यह तो यकीन था कि मुझे समाज को कुछ लौटाना है और बदलाव लाना है, लेकिन यह नहीं पता था कि कैसे!

उनकी रोटरेक्ट यात्रा ने उनके व्यक्तित्व के खुरदुरे पहलुओं को तराशकर उन्हें अवसर, मार्गदर्शन, मेंटरशिप तथा एक ऐसा तंत्र प्रदान किया जो विकास को प्रोत्साहित करता है। इसने मुझे ऐसे अनेक मंच उपलब्ध कराए जहाँ मैं एक नेता के रूप में विकसित हुई और मुझे मेरे कम्फर्ट ज़ोन से बाहर निकलने के लिए प्रेरित किया। आज जब मैं पीछे मुड़कर देखती हूँ, तो सोचती हूँ कि अगर रोटरी और रोटरेक्ट नहीं होते, तो शायद मुझे वो इंसान बनने का मौका ही नहीं मिलता जो मैं आज हूँ।

उन्होंने आगे कहा, सबसे महत्वपूर्ण बात: यह भूमिका मुझे हज़ारों अन्य युवाओं को भी वही अवसर प्रदान करने में सक्षम बनाती है। यही मेरे लिए ईश्वर की ओर से सबसे बड़ा आशीर्वाद है!

जब मैंने उनसे ज़ोर देकर पूछा कि उन्हें रोटरेक्ट और रोटरी दोनों में रहने की आवश्यकता क्यों है, तो उन्होंने उत्तर दिया: जहाँ रोटरेक्ट मुझे युवाओं के साथ जोड़कर एक नया दृष्टिकोण प्रदान करता है, वहीं एक रोटेरियन होना एक विशेषाधिकार है। इससे मुझे ऐसे स्थानों पर जाने का मौका मिलता है जो मेरी सोच और दृष्टिकोण को व्यापक बनाते हैं और ऐसे अवसर खोलते हैं जो छात्रों या युवाओं के समूह में सामान्यतः उपलब्ध नहीं होते।

विस्तार से बताते हुए वह कहती है कि जहाँ छात्र अक्सर केवल अपने कॉलेज और शुरुआती करियर की बात करते हैं, वहीं रोटेरियन आमतौर पर अगले पाँच वर्षों की योजनाओं और उन उद्यमशील लोगों से जुड़ने की संभावनाओं पर चर्चा करते हैं जिनसे वे संपर्क कर सकते हैं। बातचीत अलग होती है, अवसर अलग होते हैं। यह आपको एक बिल्कुल अलग दृष्टिकोण और कहीं अधिक व्यापक कार्यक्षेत्र प्रदान करता है।

लेकिन क्या रोटरेक्ट ने ही उन्हें इतनी कम उम्र में एआरपीआईसी बनने का अवसर प्रदान किया है?

चेन्नई में आयोजित Lead25 कॉन्क्लेव में, पूरे भारत से आए रोटरेक्टर नेताओं के साथ।

बिल्कुल और मुझे लगता है कि यह मेरे लिए एक बहुत बड़ा सम्मान और सौभाग्य है। इस भूमिका के लिए चुना जाना मेरे लिए जितनी बड़ी ज़िम्मेदारी है, उतना ही बड़ा अवसर और विशेषाधिकार भी है। यह मुझे न केवल एक नेता के रूप में विकसित होने का अवसर प्रदान करता है बल्कि अन्य अनेक रोटरेक्टरों के लिए अवसर सृजित करने में भी सक्षम बनाता है।

उन्होंने दोहराया कि उनके लिए अपने मंडल की पहली महिला डीआरआर बनना इसलिए संभव हुआ क्योंकि कई नेताओं ने उनके लिए मार्ग प्रशस्त किया। और आज मेरे पास कई अन्य लोगों को प्रेरित करने का मौका है ताकि वे उस रास्ते पर चल सकें जिस पर मैं चल रही हूँ।

रोटरी परिवार में रोटारेक्टर कौनसी ऊर्जा लाते है, इसपर जेनिस कहती है रोटरेक्टर आज की बहुत सक्रिय पीढ़ी से आते हैं जो अत्यंत जिज्ञासु है उनमें गति, ऊर्जा, चपलता और किसी भी चीज़ को शून्य से शुरू करने की क्षमता होती है। हम एक ऐसी पीढ़ी हैं जिनके मन में जिज्ञासा है; आज कोई भी किसी भी चीज़ को शुरू करने के लिए अनुमति का इंतज़ार नहीं करता, वे बस किसी ऐसी चीज़ का हिस्सा बनना चाहते हैं जिसमें वे सक्रिय रूप से योगदान दे सकें और यही हमें संगठन के भीतर बहुत कुछ करने की शक्ति देता है।

उन्होंने आगे कहा कि लंबे समय तक हमें केवल युवाओं के रूप में देखा जाता था, शायद ऐसे बच्चों के रूप में जो अभी कार्यक्षेत्र में नहीं आए थे। लेकिन आज के रोटरेक्टर डिजिटल युग में जन्मे लोग हैं और वे उचित रूप से जानते हैं कि वे क्या कर रहे हैं। वास्तव में, अगर आप मेरी पीढ़ी और आज की पीढ़ी की तुलना करें, तो बहुत बड़ा अंतर है-वे बहुत आगे की सोच रखने वाले, प्रगतिशील लोग हैं और जो गति वे लाते हैं, वो वास्तव में चीज़ों को बहुत तेजी से बदल देती है।

जब मैंने बीच में रोकते हुए कहा कि रोटेरियन उनकी आयु वर्ग को युवा पीढ़ी मानते हैं, तो जेनिस मुस्कुराते हुए जवाब देती हैं: मेरा मतलब है कि अल्फा पीढ़ी और मिलेनियल्स के बीच सोचने के तरीके में बहुत बड़ा अंतर है। हम अक्सर कुछ नया करने की अनुमति लेने की कोशिश करते हैं, लेकिन आज की पीढ़ी कोशिश करने या असफल होने से नहीं डरती; वे जोखिम लेने के लिए तैयार रहती है।

कौन-सा आयु वर्ग? उन्होंने उत्तर दिया: 18 से 20 वर्ष के बीच, जब अधिकांश लोग रोटरेक्ट में आते हैं। कॉलेज के छात्र।

वह स्वयं एक स्टार्टअप में एसएपी सलाहकार के रूप में काम करती हैं और कार्यान्वयन परियोजनाएं संभालती हैं। तो क्या रोटरेक्ट ने उनकी किसी तरह मदद की? उन्होंने कहा: बिल्कुल,।

रोटरेक्टरों के साथ अधिक सम्मानपूर्वक व्यवहार किए जाने को लेकर रोटरी के शीर्ष नेतृत्व में लंबे समय

से चल रही बहस पर जब मैंने जेनिस से पूछा कि क्या अब स्थिति बदल रही है या अभी भी उन्हें फर्नीचर हटाने जैसे कामों तक ही सीमित रखा जाता है, तो वह मुस्कुराईं और बोलीं: यह बदल रहा है और काफी हद तक बदल भी चुका है। आज के रोटेरियन अधिक खुले और सहयोगी हैं। लेकिन जब हम रोटेरियनों और रोटरेक्टरों के साथ मिलकर काम करने की बात करते हैं, तो यह केवल एकतरफा मानसिक बदलाव नहीं होता। ताली दोनों हाथों से बजती है। इसलिए जहाँ हम रोटेरियनों से अपेक्षा करते हैं कि वे अधिक सहयोगी बने, वहीं रोटरेक्टरों को भी समान स्तर की जवाबदेही और जिम्मेदारी लेनी चाहिए।

हम रोटरेक्ट सदस्यों द्वारा संचालित पहला ऐसा समूह बनना चाहते हैं, जो AKS सदस्यता हासिल करे।

तो क्या वे आगे आ रहे हैं? हाँ; वे सेवा के अवसर की मांग कर रहे हैं और यह चाहते हैं कि उन्हें समान साझेदार के रूप में देखा जाए। यहाँ तक कि वे योगदान देने के लिए आर्थिक रूप से भी तैयार हैं।

वह कहती हैं कि भारत के रोटरेक्टर विचारों से भरे हुए हैं; सभी चार ज़ोन में हम पोलियोप्लस निधि में योगदान देने के बारे में सोच रहे हैं। हम पहले रोटरेक्ट-नेतृत्व वाले समूह बनना चाहते हैं जो प्रथम रोटरेक्ट समुदाय एकेएस सदस्य बनेंगे।

इसे पूरा करने के लिए वे सभी रोटरेक्टर मिलकर 125,000 डॉलर एकत्रित करने की योजना बना रहे है और हमारे डीजीई रविशंकर डकोजू उतनी ही राशि का मिलान करेंगे।

रोटरेक्टरों द्वारा अपनी सदस्यता शुल्क के भुगतान के लिए किए जाने वाले प्रतिरोध पर - जो कि समुदाय आधारित क्लबों के लिए केवल 8 डॉलर और कॉलेजों के लिए केवल 5 डॉलर है - जब मैंने जेनिस से पूछा कि क्या यह आज के युवाओं के लिए बहुत मामूली राशि नहीं है, तो उन्होंने उत्तर दिया: मैं पूरी तरह सहमत हूँ और मुझे लगता है कि यह एक मानसिकता की समस्या है। क्योंकि लंबे समय तक रोटरेक्टरों को सदस्यता नि:शुल्क मिलती रही। लेकिन अब वे यह समझने लगे हैं कि उन्हें रोटरेक्ट से क्या मिल रहा है - वे उन कहानियों को सुन रहे हैं जो हम नेता उन्हें बताते हैं, उन अवसरों के बारे में जो हम में से प्रत्येक के लिए खुले हैं। हम उनके अवसरों का सृजन करके उन्हें शामिल करने की कोशिश करते हैं।

लेकिन डीआरआर आगे कहती हैं कि रोटरेक्टरों का एक वर्ग, जो इंस्टिट्यूशन आधारित क्लबों से आता है, वास्तव में ये शुल्क देने में कठिनाई महसूस करता है। और यहीं कुछ प्रायोजित रोटरी क्लबों ने मदद करना शुरू किया है।

वह स्पष्ट करती हैं कि आज नियमों के अनुसार 18 वर्ष का एक रोटरेक्टर, रोटरी सदस्य बन सकता है और कुछ युवा ऐसा कर भी रहे हैं। हमारे मंडल में ऐसे लगभग 50-70 लोग हो सकते हैं।

जब उनसे पूछा गया कि रोटेरियन बनने के बाद भी रोटरेक्टर, रोटरेक्ट में क्यों बने रहना चाहते हैं, तो डीआरआर कहती है कि इसका कारण यह है कि उन्हें अपनी ही आयु वर्ग के लोगों के साथ जुड़ने की आवश्यकता महसूस होती है, जहाँ उन्हें योगदान देने और बेहतर तरीके से जुड़ने के अधिक अवसर मिलते हैं। लेकिन वह मानती हैं कि अंततः यह परिवर्तन होना ही चाहिए इसलिए, बजाय इसके कि कॉलेजों में रोटरेक्टर स्नातक होने के बाद अचानक अलग हो जाएँ, हम उन्हें पहले ही रोटरी से परिचित कराते हैं ताकि वे उनसे जुड़ सकें और रोटेरियनों के साथ काम करके उनकी सोच को समझ सकें और उन बड़े अवसरों को जान सकें जिनसे वे बड़े प्रभाव ला सकते हैं।

इस परिवर्तन दर को बढ़ाने के लिए एक और पहल यह की जा रही है कि रोटरेक्ट क्लबों के पूर्व अध्यक्षों और वर्तमान अध्यक्षों पर ध्यान केंद्रित किया जाए और उन्हें एक साल के भीतर यानी उनके कार्यकाल समाप्त होने के बाद रोटरी में जाने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

रोटरेक्टरों की भी रोटरी क्लबों की तरह नियमित बैठकें होती हैं लेकिन यह अधिकतर आवश्यकता एवं परियोजना-आधारित होती हैं और इसमें अधिक लचीलापन होता है। हम महीने में दो सामान्य व्यक्तिगत बैठकें आयोजित करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, जिससे सभी को आपस में जुड़ने का अवसर मिलता है। लेकिन वे अक्सर इससे अधिक बार मिलते हैं - ऑनलाइन और व्यक्तिगत दोनों तरह से। महामारी के बाद लोगों में व्यक्तिगत संपर्क की चाह बढ़ गई है और वे आमने-सामने मिलना चाहते हैं, ज़मीनी स्तर पर काम करना चाहते हैं, अधिक रूप से शामिल होना चाहते हैं और वास्तविक प्रभाव पैदा करना चाहते हैं, वह कहती हैं।

एक सहायक आरपीआईसी के रूप में यह उनकी जिम्मेदारी है कि वह रोटरेक्टरों और रोटेरियनों के साथ-साथ इंटरेक्टरों और इनर व्हील सदस्यों द्वारा सभी मंडलों में किए जा रहे सेवा कार्यों को वैश्विक दर्शकों के सामने प्रस्तुत करें। उन्हें लगता है कि रोटरी के भीतर एक बहुत बड़ा बदलाव हो रहा है, जहाँ संगठन की सभी शाखाओं, जिसमें इनर व्हील भी शामिल है, को एक ही इकाई के रूप में देखने की सोच विकसित हो रही है।

जब उनसे पूछा गया कि वह एक युवा दृष्टिकोण के साथ रोटरी की सार्वजनिक छवि में कैसे वृद्धि कर

रही हैं और इसे एक जीवन परिवर्तक ब्रांड के रूप में कैसे प्रस्तुत कर रही हैं?

दुनिया केवल वही कहानियाँ देखती है जो हम साझा करते हैं। दुनिया पोलियो और उसमें हमारे योगदान के बारे में जानती है। लेकिन रोटरी इससे कहीं अधिक काम कर रही है। हम हृदय और मोतियाबिंद जैसी सर्जरियाँ करते हैं, पर्यावरण और जलवायु पर बड़े प्रभाव डालने वाली परियोजनाएं करते हैं, जैसे ''धन्यवाद'' परियोजना जिसे हमारे डीजीई रविशंकर डकोजू ने शुरू किया है। चुनौती यह है कि प्रत्येक क्लब और प्रत्येक मंडल की कहानियों और उनके प्रभाव को सामने लाया जाए। यह कहानी डिजिटल मीडिया सहित विभिन्न माध्यमों द्वारा एवं लोगों से बातचीत करके उन तक पहुँचाई जानी चाहिए। हमें रोटेरियनों और रोटरेक्टरों के रूप में अपने कार्यों के गर्वित प्रतिनिधि बनना होगा क्योंकि दुनिया वही सुनती और देखती है जो हम साझा करते हैं। जो हम साझा नहीं करते, वह दिखाई नहीं देता।

रोटरी को एक सेवा-उन्मुख संगठन, एक मानवीय मंच और एक जीवन परिवर्तक ब्रांड के रूप में आगे बढ़ाते हुए वह कहती हैं कि उनका उद्देश्य इसे घर-घर तक पहुँचाकर एक ऐसा आंदोलन बनाना है जो जीवन परिवर्तन करता है क्योंकि इसमें ऐसे लोग हैं जो संवेदनशील हैं, समाज में प्रभाव डाल सकते हैं और भविष्य को आकार दे सकते हैं। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वह मीडिया की शक्ति का उपयोग करने की आवश्यकता पर जोर देती हैं, विशेषकर रोटरेक्टरों की डिजिटल क्षमता को अपनाकर और हर प्रकार के मीडिया का उपयोग करने की बात करती हैं - यहाँ तक कि व्हाट्सएप फॉरवर्ड जैसे सरल माध्यमों का भी।

जब उनसे रोटरी की कहानियों को बढ़ावा देने या सदस्यता वृद्धि में एआई के उपयोग के बारे में पूछा गया, तो जेनिस ने कहा कि रोटरेक्टर पहले से ही एआई का उपयोग कर रहे हैं, लेकिन सार्वजनिक छवि के लिए हमने अभी तक इसकी पूरी क्षमता का उपयोग नहीं किया है। हमारी प्रक्रियाओं, प्रशासन और जिन कामों की योजना बनाने, उसे क्रियान्वित करने

DRR के रूप में अपनी पदस्थापना के दौरान डीजी एलिज़ाबेथ चेरियन (बाएं) के साथ जेनिस।

रशीदा भगत

अकेले एवरेस्ट बेस कैंप तक का सफर।

दाएं: बेंगलुरु में एक रोटरेक्ट कार्यक्रम में (दाएं से बैठे हुए) डीजीई रविशंकर दकोजू, रो ई अध्यक्ष ओलायिंका बाबालोला, रो ई निदेशक के पी नागेश, रो ई मंडल 3191 के डीजी बी आर श्रीधर और पीडीआरआर कार्तिक किट्टू के साथ।

और उसे लिखने में बहुत समय लगता है, उसमें एआई अधिकांश बोझ कम कर सकता है। कार्यक्रम आयोजन, उसकी योजना, सृजनात्मक कार्य जैसी अनेक चीज़ें एआई की मदद से आसानी से की जा सकती हैं।

जब उनसे पूछा गया कि क्या एआई में दक्ष रोटरेक्टर, क्लब के नेताओं को प्रशिक्षण दे सकते हैं? उन्होंने कहा: बिल्कुल और रोटरेक्ट अवसर भी प्रदान करता है। अपना ही उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि उन्होंने सुना था कि रिज़्यूमे में रोटरेक्ट लिखने से ही एक युवा और मिलनसार नेता की छवि बनती है इसलिए उन्होंने यूनाइटेड बरेवेरीस में इंटर्नशिप के दौरान इसे अपने रिज़्यूमे में शामिल किया। सौभाग्य से, उनका इंटरव्यू लेने वाला उपाध्यक्ष एक रोटेरियन था जो पहले रोटरेक्टर रह चुका था। जब उन्हें वह पद मिल गया, तो उन्होंने पूछा कि क्या उनसे कोई तकनीकी प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे। उन्होंने कहा कि अगर आप यहाँ तक पहुँच गई हैं, तो इसका मतलब है कि आपके पास क्षमता है। और अगर आप एक रोटरेक्टर हैं, तो हम जानते हैं कि आप जीवन के हर क्षेत्र में अपनी भूमिका निभाने की क्षमता रखती हैं। और यह मेरे लिए बहुत ही आसान हो गया।

इसने न केवल उनके लिए एक नए अवसर के दरवाजे खोले, बल्कि मुझे एक ऐसा मंच भी दिया जहाँ मैं अपनी कहानियाँ साझा कर सकीं और नेतृत्व की दिशा में आगे बढ़ सकीं।

डीआरआर आगे कहती है कि आज रोटरेक्टर सीएसआर के माध्यम से सामुदायिक सेवा परियोजनाएँ कर रहे हैं और सरकार, पुलिस, ट्रैफिक वार्डन, वन विभाग तथा अन्य गैर सरकारी संगठनों के साथ मिलकर काम कर रहे हैं। रोटरेक्टर इस बात पर ध्यान दे रहे हैं कि हम अनेक साझेदारों के साथ कैसे सहयोग कर सकते हैं ताकि सेवा परियोजनाओं के माध्यम से अपने प्रभाव को अधिकतम किया जा सके।

रोटेरियन और रोटरेक्टर के तौर पर हम जो काम करते हैं, हमें उसका गर्व से प्रतिनिधित्व करना चाहिए; क्योंकि हम जो कहानियाँ साझा करते हैं, दुनिया उन्हें ही सुनती और देखती है। जो बातें हम साझा नहीं करते, वे किसी को दिखाई नहीं देतीं।

रोटरेक्ट क्लब रमैया कॉलेज ने एक परियोजना की है जिसमें ई-कचरा इकट्ठा करके उससे धन जुटाकर उस धन का उपयोग एक जनजातीय क्षेत्र में खेल का मैदान बनाने के लिए किया गया। इस पहल को सरकार, वन विभाग और रो ई अध्यक्ष द्वारा मान्यता भी मिली। ऐसे कार्य बड़े पैमाने पर हो रहे हैं। लोग अब छोटे-छोटे दान जैसे भोजन या कंबल वितरण से आगे बढ़कर मोतियाबिंद या हृदय सर्जरियों को वित्तपोषित कर रहे हैं। वे अब ₹4-5 लाख या 10 लाख तक की परियोजनाएँ कर रहे हैं, जो साझेदारों के सहयोग से कृत्रिम अंग लगवाने या स्कूलों के लिए बुनियादी ढाँचा तैयार करने जैसे कार्यों पर केंद्रित हैं।

आखिरकार जब उनसे पूछा गया कि क्या वह इस बात से खुश हैं कि रोटरेक्टरों को रोटरी से अधिक सम्मान मिल रहा है? तो उन्होंने कहा: हाँ, मैं खुश हूँ कि बदलाव आया है लेकिन सुधार और बेहतर एकीकरण की अभी भी गुंजाइश है क्योंकि यह बदलाव केवल कुछ जगहों तक सीमित है, पूरे मंडल में नहीं हुआ है। मेरे मंडल में शायद केवल 20 क्लबों में ही यह परिवर्तन दिखाई देता है। हर कोई रोटरेक्ट को एकीकृत करने के लिए खुला नहीं है। दक्षिण भारत और बेंगलुरु, चेन्नई, कोयंबटूर या मैसूर जैसे स्थानों में स्थिति बेहतर है। लेकिन उत्तर

भारत में, यहाँ तक कि दिल्ली और मुंबई में एकीकरण हेतु अभी सुधार की आवश्यकता है।

उनका मानना है कि प्रत्येक रोटरी क्लब को इस एकीकरण पर ध्यान देना चाहिए और यह देखना चाहिए कि रोटरेक्टरों को प्रत्येक मंडल बैठक में कैसे शामिल किया जाए, उन्हें अपने विचार रखने का अवसर दें और रो ई की कल्पना अनुसार अन्य तरीके अपनाकर उनकी भागीदारी सुनिश्चित करें।

क्या नवनिर्वाचित रो ई अध्यक्ष और उपाध्यक्ष, जो रोटरेक्टर रह चुके हैं, वे रोटारेक्ट के विकास में मदद करेंगे। निश्चित रूप से और बहुत बड़े स्तर पर यह सहयोग प्राप्त होगा; जो लोग उस अनुभव से गुज़रे हैं, जिन्होंने रोटरेक्टर के रूप में काम किया है और उनकी सोच एवं क्षमता को समझते हैं, वे बहुत मदद करेंगे। वे पहले से ही यह जानते हैं कि रोटरेक्टर कितना योगदान दे सकते हैं। हमें अब यह साबित करने या समझाने की ज़रूरत नहीं है कि हम समान साझेदार बन सकते हैं।

रोटरी क्लब रोटरेक्ट को मार्गदर्शन देकर, उनका हाथ थामकर उन्हें कार्यक्रमों के आयोजन व प्रबंधन में प्रोत्साहित करके उनकी ताकत का उपयोग कर सकते हैं। बेशक, रोटरेक्टरों को भी जिम्मेदारियाँ लेने के लिए आगे आना होगा ताकि वे अपने प्रभाव को अधिकतम कर सकें अन्यथा यह एक व्यर्थ अवसर बन जाएगा।

वह इस बात से खुश हैं कि केवल कुछ क्लब ही नहीं बल्कि मंडल भी इस दिशा में काम कर रहे हैं। मंडल स्तर पर पूर्व डीआरआरों के लिए युवा सेवा निदेशक या सहायक गवर्नर बनने के दरवाज़े खोले जा रहे हैं।

आखिरकार, युवाओं को यह समझना चाहिए कि एक रोटरेक्टर होना आपके आत्मविश्वास को बढ़ाता है, आपको बेहतर अभिव्यक्ति की क्षमता और नेतृत्व कौशल प्रदान करता है। उनमें बहुत सारी खूबियाँ हैं; वे नेतृत्व करने के लिए तैयार रहते हैं, आत्मविश्वास के साथ बोलते हैं, अपने आप पर भरोसा रखते हैं और जानते हैं कि किसी कार्यक्रम को कैसे आयोजित करना है। वे जिम्मेदार होने के साथ ही जवाबदेह भी है। वे बड़े नेतृत्व की भूमिकाएँ लेने से पीछे नहीं हटते।

मंडल स्तर पर, पूर्व DRR के लिए युवा सेवा निदेशक या सहायक गवर्नर बनने के द्वार खोले जा रहे हैं।

दिल्ली में तेजस जोन इंस्टीट्यूट में रो ई अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो, रो ई मंडल 3011 इंटरेक्ट प्रतिनिधि अहाना रॉय और अन्ना मारिया अरेज़ो के साथ जेनिस।

रोटरेक्ट की एक और बड़ी ताकत उसका लैंगिक संतुलन है। हालांकि जेनिस नव गठित रो ई मंडल 3192 की पहली महिला DRR हैं, लेकिन अविभाजित रो ई मंडल 3190 में उनसे पहले चार और महिला डीआरआर रह चुकी हैं और उनके मंडल में महिला क्लब अध्यक्षों की संख्या काफी अधिक है।

लेकिन वह यह भी स्वीकार करती हैं कि यहाँ एक महिला नेता होने में सामान्य लैंगिक रूढ़िवादी चुनौतियाँ भी मौजूद हैं। इस मंच और अवसर को पाने के लिए आपको खुद को साबित करना पड़ता है और दोगुनी मेहनत करनी पड़ती है। मैं यह कहना चाहूँगी कि भले ही लोगों के दृष्टिकोण बदल गए हैं, लेकिन यह वास्तविकता अभी भी मौजूद है। जो बदलाव आया है, वह यह है कि महिलाएँ अब अन्य महिलाओं को आगे लाने के लिए अवसर पैदा कर रही हैं। और पुरुष रोटरेक्टर भी महिलाओं के साथ काम करना चाहते हैं।

आप स्वयं को 10 साल बाद रोटरी में कहाँ देखती हैं? मैं एक ऐसी नेता बनना चाहती हूँ जो कई अन्य नेताओं के लिए मार्ग प्रशस्त कर सके।

यह स्मार्ट और आत्मविश्वासी महिला खुद को अगले दो वर्षों में अपने रोटरी क्लब की अध्यक्ष के रूप में देखती हैं। वह पिछले वर्ष सचिव थीं और मैं सौभाग्य से ऐसे क्लब से जुड़ी हूँ जो रोटरेक्टरों को प्रोत्साहित करता है! अंततः, रोटरी की सबसे खास बात यह है कि एक आम इंसान होकर मैं कितना प्रभाव ला सकती हूँ। रोटरी सामान्य लोगों को अन्य सामान्य लोगों के साथ मिलकर असाधारण काम करने और लोगों के जीवन को बदलने का अवसर देता है और साथ ही आप स्वयं भी एक व्यक्ति के रूप में विकसित होते हैं।

उन्होंने अंत में कहा कि रोटरी ने उन्हें बहुत कुछ दिया है। व्यक्तिगत रूप से, मैं आज जिस तरह की नेता हूँ, वह पूरी तरह रोटरी की वजह से है। मैं जिस तरह बोलती हूँ, समाज को कुछ लौटाने का मेरा दृष्टिकोण और तेजस ज़ोन इंस्टिट्यूट का हिस्सा बनने जैसे इतने सारे अवसर पाकर मैं आशा करती हूँ कि मैं ताइपे में अपने पहले सम्मेलन में भी शामिल हो पाऊँगी! ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

मैक्सिकन रोटेरियन ने भारतीय मेहमाननवाज़ी को अपनाया

जयश्री

रो ई मंडल 4110, मेक्सिको के पाँच रोटेरियन ने मार्च के पहले हफ़्ते में भारत के 11-दिवसीय यात्रा शुरू की। यह यात्रा रो ई मंडल 3203 के रोटरी फ्रेंडशिप एक्सचेंज (आरएफई) अध्यक्ष के नागेश के निमंत्रण पर आयोजित की गई। इस मंडल में तिरुपुर, पोल्लाची, इरोड, नीलगिरि और कोयंबटूर क्षेत्र शामिल हैं।

यह हमारा तीसरा आदान-प्रदान है, नागेश कहते हैं और याद करते हैं कि उन्होंने रो ई मंडल 4110 की RFE अध्यक्ष अन्ना मियर से संपर्क किया था तथा मेक्सिको के रोटेरियन्स को रो ई मंडल 3203 की संस्कृति और सेवा पहलों का अनुभव करने के लिए आमंत्रित किया था। उन्होंने तुरंत सहमति दे दी। यह उस विश्वास, मित्रता और मज़बूत संबंध को दर्शाता है, जिसे हमारे मंडलों ने समय के साथ विकसित किया है।

विज़िटिंग टीम की ओर से अन्ना की एक विशेष इच्छा थी कि उन्हें ताजमहल देखने का मौका मिले और वे दिल्ली घूमने के लिए कुछ दिन बिता सकें। इसके लिए रो ई मंडल 3203 के डीजी बी धनशेखर ने रो ई मंडल 3011 के डीजी रवि गुगनानी के साथ मिलकर व्यवस्थाओं का समन्वय किया; रवि गुगनानी ने दिल्ली में मेज़बानी की ज़िम्मेदारी मंडल के आरएफई अध्यक्ष विक्रम को सौंपी।

मेक्सिको के आए मेहमान ताजमहल की कालातीत सुंदरता से मंत्रमुग्ध हो गए और आगरा तथा दिल्ली के ऐतिहासिक स्मारकों के समृद्ध इतिहास और वास्तुकला से गहराई से प्रभावित हुए। नागेश कहते हैं, उन्होंने गुगनानी के फार्महाउस में होली के उत्सव का भरपूर आनंद लिया और उत्तर भारतीय व्यंजनों तथा पारंपरिक मिठाइयों का स्वाद भी चखा।

होज़री उद्योग के लिए मशहूर तिरुपुर में प्रतिनिधिमंडल को

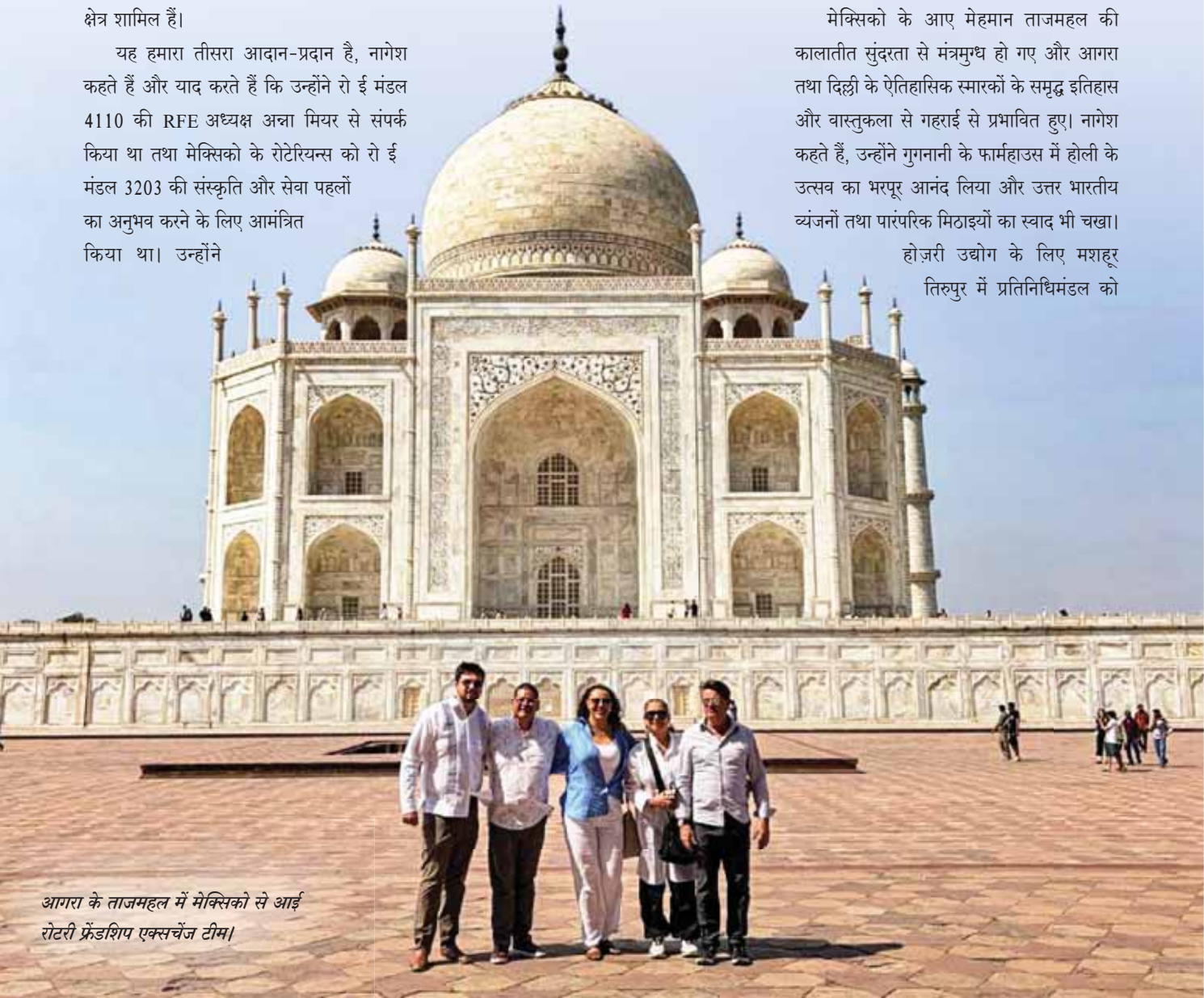

आगरा के ताजमहल में मेक्सिको से आई रोटरी फ्रेंडशिप एक्सचेंज टीम।

पोल्लाची, तमिलनाडु में एक घुड़सवारी शो का दौरा करते हुए। रोटरी क्लब पोल्लाची के अध्यक्ष सतीश चंद्रन और सचिव टी एन श्रीकांत दाईं ओर चित्र में शामिल हैं।

दिल्ली में होली मनाते हुए।

दिल्ली के कुतुब मीनार में।

रो ई मंडल 3203 के डीजी बी धनशेखर कोयंबटूर में टीम का स्वागत करते हुए। RFE के अध्यक्ष के नागेश बाईं ओर दिखाई दे रहे हैं।

तिरुपुर के रोटरी स्कूल के छात्रों के साथ RYE के सदस्य।

औद्योगिक दौरे पर ले जाया गया। नागेश बताते हैं, वे धागे से लेकर तैयार कपड़ों तक की पूरी प्रक्रिया को देखकर बेहद प्रभावित हुए। हमारे वस्त्र उद्योग की व्यापकता, सटीकता और कार्यकुशलता को देखकर यह उनके लिए यह एक रोमांचक अनुभव था।

आगंतुकों को मंडल की कई प्रमुख सेवा परियोजनाओं से भी परिचित कराया गया, जिनमें तिरुपुर सरकारी अस्पताल में बनने वाला 100 करोड़ रुपये का कैंसर केंद्र, रोटरी ब्लड बैंक, रोटरी श्मशान घाट, रोटरी डायलिसिस केंद्र तथा 1963 में स्थापित रोटरी स्कूल शामिल हैं।

नीलगिरि की तलहटी में स्थित मेट्टुपालयम में टीम ने रोटरी क्लब मेट्टुपालयम की तीन प्रमुख परियोजनाओं का दौरा किया- हील, जो एक मोबाइल मैमोग्राम और सर्वाइकल स्क्रीनिंग वाहन है; मकेयरफ़, जो सर्जरी के बाद की गहन देखभाल इकाई है; और मलाइफ़लाइनफ़, जो रक्त रक्त अवयव पृथक्करण सुविधा है। रो ई मंडल 4110 ने इन पहलों को समर्थन में अंतरराष्ट्रीय साझेदार के रूप में सहयोग किया था।

रोटेरियन परिवारों ने मेहमानों को अपने घरों में ठहराकर उन्हें भारतीय पारिवारिक जीवन का एक वास्तविक अनुभव कराया। मुस्कुराते हुए नागेश कहते हैं, वे हाथों से भोजन करना सीखकर बहुत खुश हुए - जो हमारी संस्कृति का एक प्यारा हिस्सा है। साथ ही उन्होंने दक्षिण भारतीय नाश्ते की लोकप्रिय चीज़ों जैसे इडली, डोसा, पोंगल, उपमा और पोहा

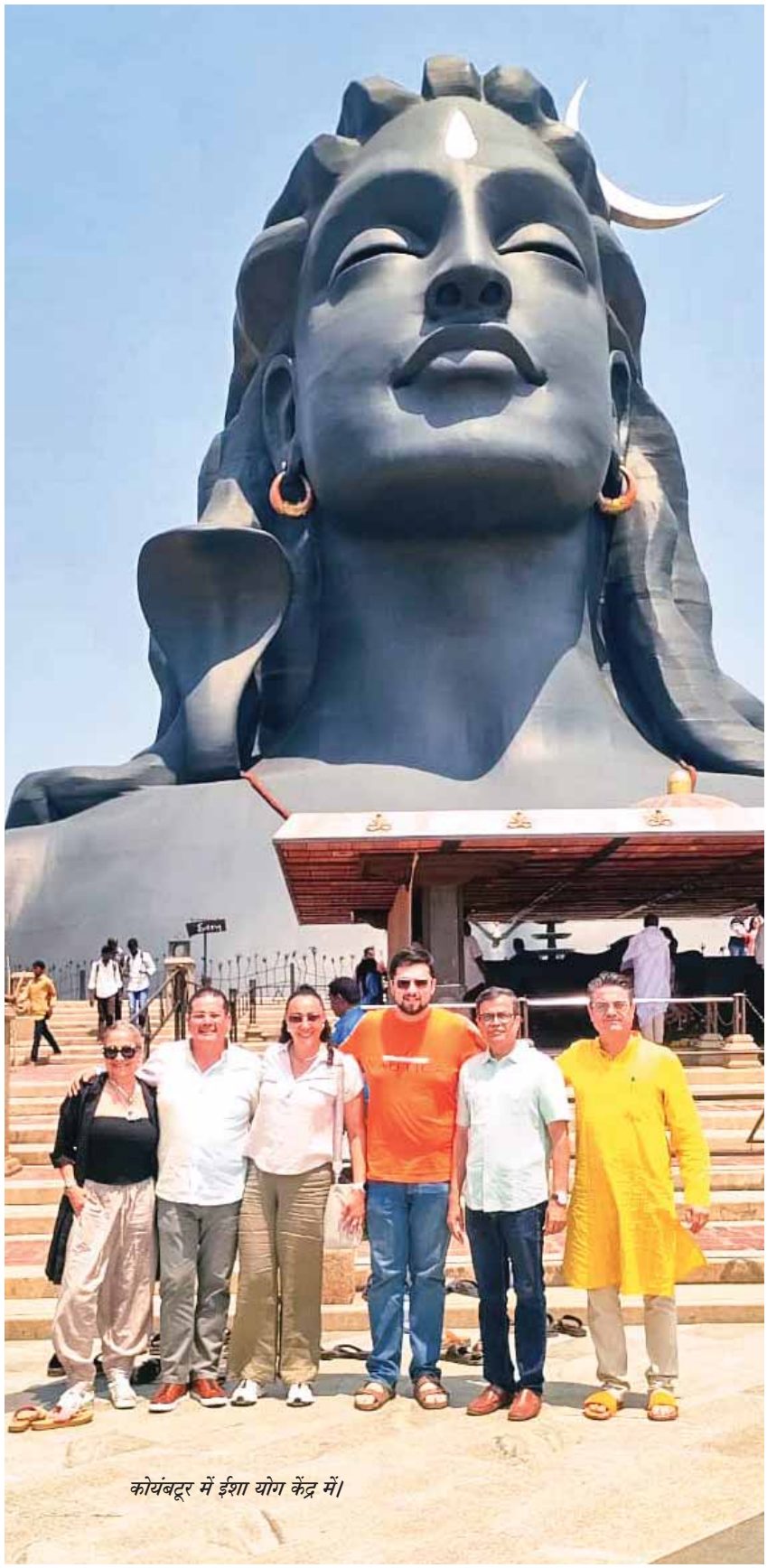

कोयंबटूर में ईशा योग केंद्र में।

भारतीय संयुक्त परिवार संस्कृति की गर्मजोशी का अनुभव करना हमारे लिए बेहद सार्थक रहा। यह हमारे लिए एक नया अनुभव था, लेकिन इसने हमें पारिवारिक रिश्तों के महत्व और मूल्य को समझने में मदद की।

का भी भरपूर आनंद लिया। बेशक, उनकी सुविधा को ध्यान में रखते हुए अंडे और ब्रेड भी परोसे गए।

आने वाले मेहमानों के लिए, यह अनुभव केवल घूमने-फिरने तक सीमित नहीं था। भारतीय संयुक्त परिवार की संस्कृति की गर्मजोशी को महसूस करना हमारे लिए बहुत गहरा और सार्थक अनुभव था। यह हमारे लिए बिल्कुल नया था, लेकिन इसने हमें पारिवारिक रिश्तों के महत्व और उनके मूल्य को समझने का अवसर मिला। यहाँ की भाषा, भोजन और संस्कृति उत्तर भारत से पूरी तरह अलग थे, फिर भी उतनी ही सुंदर थे। यहीं आकर मैंने सचमुच 'अनेकता में एकता' के असली सार को समझा, आरएफई के मेहमानों में से एक, लुइस रोकेनी रेल्लो ने मेक्सिको लौटने के बाद नागेश को लिखे एक ईमेल में कहा। उन्होंने ताजमहल की यात्रा को पूरी टीम के लिए एक सपना सच होने जैसा अनुभव बताया।

अपने प्रवास के दौरान, मैक्सिकन रोटेरियन्स ने तिरुपुर, इरोड, ऊटी, मेट्टुपालयम और अविनाशी में आयोजित क्लब बैठकों में भाग लिया, जिससे मंडल के कई क्लबों के बीच आपसी मेलजोल और भाईचारा और अधिक सुदृढ़ हुआ। भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करने के लिए, रो ई मंडल 3203 ने भरतनाट्यम, योग प्रदर्शन, नादस्वरम और थविल की जीवंत प्रस्तुतियों तथा ग्रामीण लोक संगीत पर आधारित कार्यक्रमों का आयोजन किया।

नागेश कहते हैं, भले ही हमारा रुकना कम समय के लिए था, लेकिन हमने जो रिश्ते बनाए, वे गहरे और अर्थपूर्ण थे। कुछ ही दिनों में हम केवल मेज़बान और अतिथि नहीं रहे; हम एक परिवार बन गए। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

युवा नेताओं को मिली RYLA में आत्मविश्वास और दोस्ती

किरण ज़ेहरा

डीजी अमित जायसवाल और उनकी पत्नी पल्लवी RYLA प्रतिभागियों के साथ।

मध्य प्रदेश के बालाघाट के हरे-भरे जंगलों के बीच स्थित, जो कान्हा-पेंच टाइगर कॉरिडोर का हिस्सा है, भारत के विभिन्न हिस्सों से आए 125 युवा प्रतिभागी और 10 अंतरराष्ट्रीय यूथ एक्सचेंज छात्र रो ई मंडल 3261 के अंतर्राष्ट्रीय और अंतर-मंडल RYLA के लिए एक साथ आए। यह तीन-दिवसीय नेतृत्व शिविर था, जिसमें प्रशिक्षण सत्र, बाहरी गतिविधियाँ और सांस्कृतिक आदान-प्रदान शामिल थे।

रोटरी क्लब बालाघाट रॉयल और रोटरी क्लब रायपुर द्वारा आयोजित यह कार्यक्रम मटीम अमित - असीम मित्रता की ताकतफ (असीम दोस्ती की शक्ति) के सहयोग से संपन्न हुआ; यह डीजी अमित जायसवाल के नेतृत्व में रो ई मंडल 3261 की लीडरशिप थीम है। डीजी अमित जायसवाल ने कहा, RYLA केवल लीडरशिप ट्रेनिंग के बारे में नहीं है, बल्कि यह युवाओं को दोस्ती, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और टीमवर्क के माध्यम से आत्मविश्वास बढ़ाने, सामाजिक ज़िम्मेदारी समझने और एक वैश्विक दृष्टिकोण विकसित करने में मदद करने का माध्यम है। जब अलग-अलग राज्यों और देशों के छात्र इस तरह के माहौल में एक साथ आते हैं, तो वे न केवल नए कौशल लेकर लौटते हैं, बल्कि लीडरशिप और समाज के प्रति एक व्यापक दृष्टिकोण भी हासिल करते हैं।

बलजीत सिंह RYLA के अध्यक्ष थे; जबकि नवीन भवसार और कंवलजीत सिंह छाबड़ा ने सलाहकार की भूमिका निभाई। IYE के छात्र अमेरिका, मेक्सिको, ब्राज़ील, फ्रांस, बेल्जियम और जर्मनी से आए थे।

संचार कौशल और पब्लिक स्पीकिंग पर सत्रों का संचालन डॉ संतोष राय ने किया। वे छत्तीसगढ़ के एक शिक्षाविद और 'डॉ संतोष राय इंस्टीट्यूट' के संस्थापक हैं, जिन्हें दस वर्षों के भीतर 20 से अधिक अकादमिक डिग्रियां प्राप्त करने के लिए 'गोल्डन बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स' में मान्यता मिली है। रोटरी क्लब रायपुर के अध्यक्ष उत्तम कुमार गर्ग ने कहा, उनकी कार्यशाला प्रतिभागियों में आत्मविश्वास बढ़ाने और नेतृत्व क्षमता के विकास पर केंद्रित थी।

इस कार्यक्रम में योग और ज़ुम्बा सेशन के साथ-साथ करियर गाइडेंस, लीडरशिप में नैतिकता, मानसिक स्वास्थ्य और स्ट्रेस मैनेजमेंट पर वर्कशॉप भी शामिल थीं। उन्होंने बताया कि जंगल ट्रेकिंग एक्टिविटी RYLA के मुख्य आकर्षणों में से एक थी, क्योंकि इसमें शामिल लोगों ने अनजान जंगल के रास्तों पर टीमों में मिलकर काम किया, जिससे उनमें आपसी भरोसा, तालमेल और भाईचारा विकसित हुआ। छत्तीसगढ़ की एक प्रतिभागी मोना ने बताया कि इस कार्यक्रम ने उन्हें अपने कम्फर्ट ज़ोन से बाहर निकलने और दुनिया भर के छात्रों से जुड़ने में मदद की। मेरे लिए RYLA का सबसे अच्छा हिस्सा नए दोस्त बनाना और जंगल ट्रेक का अनुभव लेना था। हमें पूरी गतिविधि के दौरान मिलकर काम करना पड़ा, और इससे हम बहुत जल्दी एक-दूसरे से जुड़ गए। मैं यहाँ से बहुत ज़्यादा आत्मविश्वास और कई अच्छी यादें लेकर जा रही हूँ। सांस्कृतिक कार्यक्रमों, जिनमें बैगा आदिवासी नृत्य प्रदर्शन भी शामिल था, ने इस शिविर के अनुभव में स्थानीय और सांस्कृतिक रंग भर दिया।■

Rotary PEOPLE OF ACTION

पूर्वोत्तर में रोटरी एग पुशकार्ट उद्यम की शुरुआत

रशीदा भगत

मैं कोई अमीर आदमी नहीं हूँ; मैं एक सामान्य व्यक्ति हूँ जिसके पास अपने आसपास के लोगों की मदद करने के लिए केवल दो हाथ हैं। लेकिन चूंकि मैं एक रोटेरियन हूँ इसलिए रोटरी के साथ मिलकर मेरे पास ज़रूरतमंदों की सहायता करने के लिए हजारों हाथ हैं, रोटरी क्लब सिकंदराबाद, रो ई मंडल 3150 के एक सदस्य, हरी किशन वाल्मीकि कहते है, जो अनेक रोटरी एग बैंक और अपने पारिवारिक धर्मार्थ संस्थान वाल्मीकि फाउंडेशन के संस्थापक हैं।

भारत के कुपोषित बच्चों, विशेषकर अनाथालयों में रहने वाले बच्चों, वरिष्ठ नागरिकों और अन्य वंचित लोगों को अंडों के माध्यम से पोषण उपलब्ध कराने के प्रति गहरी लगन रखने वाले हरी किशन वाल्मीकि के प्रयासों की शुरुआत वर्ष 2003 में हुई जब उन्होंने अपनी संस्था वाल्मीकि फाउंडेशन की स्थापना की। बाद में, वर्ष 2017 में उन्होंने एग बैंक की शुरुआत की क्योंकि उन्हें अपने अनाथालय के 45 बच्चों के लिए रियायती दर पर अंडे खरीदने हेतु आवश्यक आर्थिक सहायता नहीं मिल पा रही थी।

जब उन्हें उस समय एक भी दानदाता नहीं मिला, तब उनका रोटरी क्लब उनकी मदद के लिए आगे आया। क्लब के सहयोग से उन्होंने न केवल अपने अनाथालय की सहायता की बल्कि रो ई मंडल 3150 से परे अनेक संस्थाओं तक भी मदद पहुँचाई।

जल्द ही उन्होंने नैशनल एग कोऑर्डिनेशन कमिटी (NECC) के साथ साझेदारी की, जो भारत में पोल्ट्री किसानों का सबसे बड़ा गैर-सरकारी संगठन है।

अपने एग-प्रमोशन अभियान की नवीनतम पहल के बारे में बताते हुए वह कहते है कि इसके

रोटरी क्लब सिकंदराबाद के सदस्य हरि किशन वाल्मीकि, रोटरी क्लब गुवाहाटी लुइट की पूर्व अध्यक्ष पामी दास का अभिवादन करते हुए। रोटरी क्लब गुवाहाटी, गुवाहाटी वेस्ट, साउथ और मेट्रो के रोटेरियन भी चित्र में शामिल हैं।

अंतर्गत पूर्वोत्तर भारत में 50 बेरोजगार लोगों को एग पुशकार्ट प्रदान किए गए हैं, वाल्मीकि कहते हैं कि हाल ही में उनसे NECC ने संपर्क किया जो भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में अंडों के सेवन को बढ़ावा देना चाहता था क्योंकि वहाँ पोषण और आय सृजन से जुड़ी अनेक चुनौतियाँ मौजूद हैं। यह संगठन 50 बेरोजगार लोगों को पुशकार्ट देना चाहता था ताकि वे इसके माध्यम से स्थानीय लोगों को अंडों से बने व्यंजन बेचकर अपनी आजीविका कमा सकें।

लेकिन उनके सामने सबसे बड़ी चुनौतियाँ थीं पुशकार्ट का निर्माण कराना और ऐसे वास्तविक एवं योग्य लाभार्थियों की पहचान करना जो मेहनत और ईमानदारी से काम कर सकें। वे एक विश्वसनीय साझेदार की तलाश में थे और इसलिए उन्होंने मुझसे संपर्क किया क्योंकि वे रोटरी एग बैंक के माध्यम से किए गए मेरे कार्यों से परिचित थे, वाल्मीकि कहते है।

अब इस रोटेरियन के सामने असली चुनौती आई जिसके लिए कठिन मेहनत की आवश्यकता थी। रोटरी और अन्य खाद्य एवं और पोषण से जुड़े अन्य सामाजिक संगठनों में एग मैन के नाम से प्रसिद्ध वाल्मीकि ने लगभग एक वर्ष तक पूर्वोत्तर भारत के सभी सेवन सिस्टर्स राज्यों की लगातार यात्राएँ कीं। उनका उद्देश्य था साझेदारों को जोड़ना, नेताओं को समझाना, संवेदनशील लोगों के दिलों में प्रेरणा जगाना और असम, मेघालय, मणिपुर तथा त्रिपुरा जैसे चार पूर्वोत्तर राज्यों में एग बैंक शुरू करने के लिए विश्वास का माहौल तैयार करना। सबकुछ जमीनी स्तर पर करना था और इसके लिए स्थानीय रोटरी नेताओं की साझेदारी अत्यंत आवश्यक थी, वह कहते है।

इन 50 एग पुशकार्टों के लिए आवश्यक कुल ₹25 लाख की वित्तीय सहायता NECC द्वारा दी गई। वाल्मीकि ने असम, मेघालय, त्रिपुरा और मणिपुर के रोटरी क्लबों की पहचान की और स्थानीय क्लबों ने प्रत्येक पुशकार्ट के लिए आवश्यक बर्नर स्टोव, बर्तन, इलेक्ट्रिक बल्ब और स्टूल की व्यवस्था हेतु ₹5 लाख जुटाए। पूर्वोत्तर भारत में अवसरों की पहचान करने के लिए की गई उनकी व्यापक यात्राओं का पूरा खर्च उन्होंने स्वयं अपनी जेब से वहन किया।

पुशकार्ट दिए जाने के लिए लाभार्थियों की खोज शुरू हुई और यहीं पर स्थानीय रोटरी क्लबों के सदस्यों ने विभिन्न क्षेत्रों की आवश्यकताओं का आंकलन किया। उन्होंने ऐसे लोगों की पहचान की और उनका चयन किया जो पात्र हों और स्मार्ट तरीके से मेहनत करते हुए छोटे व्यवसाय को सफलतापूर्वक चला सकें। चयन के बाद लाभार्थियों से ₹200 के स्टाम्प पेपर पर एक समझौता कराया गया जिसमें यह शर्त थी कि वे उन्हें दिया गया पुशकार्ट नहीं बेचेंगे। यदि किसी कारणवश वे इस उद्यम को नहींचला पाते, तो वह उस एग कार्ट को रोटरी क्लब को लौटा देंगे, जो फिर किसी नए व्यक्ति का चयन करेगा। यह भी उल्लेखनीय है कि लैंगिक समानता को ध्यान में रखते हुए लाभार्थियों में आधी महिलाएँ शामिल की गई!

वाल्मीकि ने आगे बताया कि प्रत्येक लाभार्थी को अपने व्यवसाय को शुरू करने और उसे सुचारु रूप से चलाने के लिए ₹16,000 की सहायता राशि प्रदान की गई। वह आने वाले दिनों को लेकर काफी उत्साहित हैं। उनका कहना है, हम इन विक्रेताओं को अंडे से बनने वाली 100 अलग-अलग प्रकार की रेसिपी सिखाने की योजना बना रहे हैं। अगर वे केवल उबले अंडे या ब्रेड-ऑमलेट ही बेचेंगे, तो वे ज्यादा कमाई नहीं कर पाएंगे।

हम इन विक्रेताओं को 100 अलग-अलग तरह की अंडे की रेसिपी सिखाएँगे। अगर वे सिर्फ़ उबले हुए अंडे या ब्रेड और ऑमलेट बेचेंगे, तो वे ज़्यादा पैसे नहीं कमा पाएँगे।

साझेदारी बनाने में विशेषज्ञ वाल्मीकि इन एग कार्ट संचालकों को रोचक और विविध अंडे व्यंजन सिखाने के लिए इंटरनेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ हास्पिटैलिटी मैनेजमेंट के साथ भी जुड़े ताकि उनके उत्पादों में मूल्यवर्धन हो सके। वाल्मीकि का अनुमान है कि ये विक्रेता प्रतिदिन लगभग ₹10,000 की बिक्री कर पाएंगे, जिसमें उनका मुनाफा लगभग ₹2,500 से 3,000 के बीच हो सकता है।

इस परियोजना की शुरुआत के लिए चारों राज्यों में स्थानीय रोटरी क्लबों की मदद से एग बैंक स्थापित किए गए। इस परियोजना का आधिकारिक उद्घाटन रो ई मंडल 3240 के डीजी डॉ कामेश्वर सिंह एलंगबम द्वारा किया गया, जो मेघालय से गुवाहाटी पहुँचे थे, जबकि NECC के चीफ ऑपरेटिंग ऑफिसर डॉ एळिल अन्नामलाई कुमार और वाल्मीकि हैदराबाद से आए। चारों पूर्वोत्तर राज्यों के अब तक बेरोजगार रहे 50 विक्रेताओं के लिए यह दिन आशा और नए आरंभ का प्रतीक बन गया।

इस पूरी परियोजना का जमीनी कार्य तैयार करने में रोटरी की महत्वपूर्ण भूमिका के लिए उसे धन्यवाद देते हुए डॉ कुमार ने कहा कि भले ही NECC ने पुशकार्ट बनाने की लागत का निधीयन

किया था लेकिन उन्हें यह स्पष्ट नहीं था कि इन राज्यों में कार्ट का निर्माण कैसे कराया जाए और उन्हें लाभार्थियों तक कैसे पहुँचाया जाए। वाल्मीकि ने रोटरी क्लब गुवाहाटी मेट्रो के सदस्य और सहायक गवर्नर विकास बजाज के योगदान को सराहा जिन्होंने स्वयं स्थानीय फैब्रिकेटर खोजने, समयसीमा का पालन कराने और उच्च गुणवत्ता वाले पुशकार्ट समय पर तैयार कराने की जिम्मेदारी ली। एक अन्य रोटेरियन दिनेश मंगलुनिया ने भी इसमें मूल्यवर्धन करते हुए बर्तन, बर्नर और अन्य आवश्यक सामानों के लिए सर्वोत्तम सौदों की पहचान की और उन्हें अंतिम रूप देने में मदद की।

गुवाहाटी की हरिजन बस्ती से आने वाली लाभार्थी फहीमीना रहमान ने रोटेरियनों एवं अन्य सहयोगियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस आजीविका के अवसर ने उन्हें और उनके परिवार को नई आशा दी है और वह पूरी ईमानदारी और मेहनत से काम करके इस उद्यम को सफल बनाएंगी तथा उन पर जताए गए विश्वास को सही साबित करेंगी। वाल्मीकि ने बताया कि यह इस परियोजना का केवल पहला चरण है और अगले चरण में पूर्वोत्तर के अन्य राज्यों में 100 और ऐसे एग पुशकार्ट लाभार्थियों को दिए जाएंगे।

वाल्मीकि की एग बैंक से जुड़ी पहलें काफी चर्चा में हैं और चूंकि वह हैदराबाद से है और यहाँ भी एग मैन के नाम से प्रसिद्ध होने के चलते, तेलुगु सुपरस्टार चिरंजीवी, जो अपनी स्वयं की चैरिटी के माध्यम से सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहते हैं और सामाजिक कल्याण की परियोजनाओं को बढ़ावा देने में रुचि रखते हैं, उन्होंने इस परियोजना को हैदराबाद में एक प्रकार से अनौपचारिक रूप से शुरू किया। यह कार्यक्रम गुवाहाटी में औपचारिक उद्घाटन से एक दिन पहले हुआ। उत्साहित वाल्मीकि ने *रोटरी न्यूज़* को बताया कि चिरंजीवी लंबे समय से उनकी फाउंडेशन की गतिविधियों पर नज़र रखे हुए थे... इसके पहले भी वाल्मीकि ने 500 अनाथ बच्चों को हवाई यात्रा कराई थी, जिसकी खबर भी इस अभिनेता तक पहुँची थी। इसके बाद चिरंजीवी चैरिटेबल ट्रस्ट ने उन्हें एग बैंक की गतिविधियों को समझने के लिए आमंत्रित किया और उस चर्चा के दौरान चिरंजीवी ने एग बैंक और नॉर्थ ईस्ट पुशकार्ट पहल का एक प्लेकार्ड

अपने कार्यालय में मंगवाया और वहाँ इसका इसका अनावरण किया।

उन्होंने *रोटरी न्यूज़* का भी आभार व्यक्त किया जिसने सितंबर 2020 (https://rotarynewsonline.org/reaching-eggs-to-

रोटेरियन अंडे के सेवन को बढ़ावा देते हुए।

ऊपर: गुवाहाटी में अंडे की गाड़ी वाली परियोजना का शुभारंभ करते हुए DG कामेश्वर सिंह एलांगबम। उनके दाईं ओर वाल्मीकि हैं।

तेलुगु एक्टर चिरंजीवी के साथ वाल्मीकि।

the-nutritionally-deficient/) में उनकी इस पहल पर पहली रिपोर्ट प्रकाशित की थी। उन्होंने बताया कि इस लेख के प्रकाशित होने के बाद कई रोटरी क्लब और अन्य संगठन उनसे संपर्क करने लगे और अंडों से जुड़ी सामाजिक एवं पोषण-आधारित परियोजनाओं में साझेदारी और सहयोग के लिए उनकी मदद और मार्गदर्शन मांगने लगे।

शेष पूर्वोत्तर भारत में 100 और एग कार्ट शुरू करने की योजना के अलावा, अब वाल्मीकि अफ्रीका में भी अफ्रीकी रोटेरियनों और रोटारेकटरों के सहयोग से पहला एग बैंक स्थापित करने हेतु काम कर रहे हैं। जैसा कि हम सभी जानते है कि अफ्रीकी देशों में कुपोषण की समस्या गंभीर है और अंडे पोषक तत्वों का एक सर्वोत्तम स्रोत हैं। एक रोटेरियन बनने से पहले, मैं एक इंटरेक्टर और एक रोटरेकटर था, इसलिए मैं गरीबों और वंचितों के लिए इस तरह के कार्य करने में युवा शक्ति से भली-भांति परिचित हूँ। रोटरी की सबसे बड़ी खूबसूरती यह है कि जब आप कोई अच्छा काम करने की ठान लेते है तो आप अकेले नहीं होते बल्कि बहुत सारे हाथ आपके साथ जुड़ जाते हैं।■

मदुरै में RIPE बाबालोला का आतिथ्य

टीम रोटरी न्यूज़

आरआईपीई ओलायिंका बाबालोला ने फरवरी में अपने भारत दौरे के दौरान तमिलनाडु के मदुरै का दौरा किया; यह रोटरी के सदस्यों की संख्या बढ़ाने, मानवीय सेवाओं के विस्तार और समावेशी सेवा को बढ़ावा देने के प्रयासों की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था।

उनके लिए हवाई अड्डे पर एक भावुक क्षण प्रतीक्षा कर रहा था, जहाँ बेथसन स्पेशल चिल्ड्रन स्कूल के छात्रों ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। उसी शाम, प्रेसिडेंट-इलेक्ट ने स्कूल के नए बने इंटरेक्ट क्लब को चार्टर प्रदान किया और उसके अध्यक्ष तथा सचिव को पदस्थापित किया। मदुरै नॉर्थ वेस्ट के रोटरी क्लब, रो ई मंडल 3000 के सहयोग से संचालित यह स्कूल उन बच्चों की सेवा करता है जिन्हें विकास संबंधी ज़रूरतों की आवश्यकता होती है। क्लब सचिव एस. एस. शिवकुमार ने कहा, बाबालोला ने बच्चों के साथ प्यार से बातचीत की और इस बात पर ज़ोर दिया कि वे हर बच्चे द्वारा उन्हें दिए गए छोटे-छोटे गुलदस्तों को खुद ही स्वीकार करेंगे।

बाबालोला ने, रो ई निदेशक एम मुरुगानंदन के साथ, क्लब द्वारा प्रायोजित एक सर्वाइकल कैंसर टीकाकरण शिविर में भी भाग लिया, जहाँ गुहान मैट्रिकुलेशन स्कूल के इंटरेक्ट क्लब के 50 इंट्रक्टर्स को टीका लगाया गया।

एक संयुक्त सदस्यता शिखर सम्मेलन को संबोधित करते हुए, उन्होंने 'विज़न 2030' के बारे में विस्तार से बताया। यह रोटरी का एक वैश्विक आह्वान है, जिसका लक्ष्य 2030 तक रोटेरियन्स की संख्या बढ़ाकर 1.25 मिलियन करना और 125,000 रोटरेक्टर्स को बनाए रखना है। वर्ष 2030 में रोटरी अपनी 125वीं वर्षगांठ भी मनाएगी। इस कार्यक्रम में रो ई मंडल 2981, 2982, 3000, 3203, 3206 और 3212 के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। डिस्ट्रिक्ट गवर्नर्स-इलेक्ट से सदस्यता का विस्तार करने और उसे मजबूत बनाने के लिए तुरंत काम शुरू करने का

ऊपर: RIPE ओलायिंका बाबोलोला का बेथसन स्पेशल स्कूल के छात्रों द्वारा गुलदस्तों के साथ स्वागत किया गया। उनके पीछे रो ई निदेशक एम मुरुगानंदम चीते में शामिल हैं।

दाएँ: RIPE बाबालोला सर्वाइकल कैंसर टीकाकरण शिविर में एक लड़की से बातचीत करते हुए। चित्र में (दाएँ से) RID मुरुगानंदम, DG जे कार्तिक, DGE सुब्रमणि रामानुजम और रोटरी क्लब मदुरै नॉर्थ वेस्ट के सचिव एस एस शिवकुमार।

बाएँ: RIPE बाबालोला और RID मुरुगानन्दम, रोटरेक्टर्स के साथ।

नीचे: सदस्यता शिखर सम्मेलन में PRID सी बास्कर दीप प्रज्वलित करते हुए, RIPE बाबालोला, RID मुरुगानन्दम और सुमति भी चित्र में शामिल हैं।

आग्रह करते हुए उन्होंने कहा, मैं चाहता हूँ कि आप इस बात पर विचार करें कि रोटरी ने एक इंसान के तौर पर आपको कैसे बदला है। रोटरी के विकास के लिए, हर रोटेरियन को अपनी यह कहानी दोस्तों और परिवार के साथ साझा करने में सक्षम होना चाहिए और उन्हें रोटरी से जुड़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि व्यक्तिगत बदलाव की कहानियाँ ही सदस्यता में सार्थक वृद्धि का प्रमुख आधार हैं।

उन्होंने रोटरी नेताओं से यह भी आग्रह किया कि वे रोटरेक्टर्स की क्षमताओं और उनकी नेतृत्व क्षमता को महत्व दें।

मुरुगनंदम ने अलग-अलग ज़ोन में सदस्यों की संख्या के आधार पर क्लबों के रेड-एम्बर-ग्रीन (आरएजी) वर्गीकरण के बारे में जानकारी दी और 1:2:3 फ़ॉर्मूले पर आधारित एक व्यापक सात-सूत्रीय कार्ययोजना प्रस्तुत की - जिसमें 100 रोटरी क्लब, 200 रोटरेक्ट क्लब और 300 इंटरेक्ट क्लब जोड़ने के साथ-साथ 100 नए रोटरी कम्युनिटी कॉर्प्स स्थापित करने का लक्ष्य रखा गया। उन्होंने कहा कि इस पहल से अगले चार सालों तक हर साल 10,000 रोटेरियन और 10,000 रोटरेक्टर्स की संख्या में वृद्धि होगी। उन्होंने महिलाओं की सदस्यता में 5 प्रतिशत वृद्धि का भी आह्वान किया।

मौजूदा कमियों की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए उन्होंने बताया कि लगभग 3,000 क्लबों ने अभी तक एक भी रोटरेक्ट क्लब शुरू नहीं किया है, जबकि 3,800 क्लबों ने अभी तक कोई इंटरेक्ट क्लब स्थापित नहीं कर सके हैं। उन्होंने मंडल नेताओं से आग्रह किया कि वे इस समस्या का तुरंत समाधान करें। उन्होंने कहा, रोटरी का भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि आज हम अपने इंट्रक्टर्स और रोटरेक्टर्स का कितना अच्छी तरह विकसित करते हैं और कल उन्हें रोटेरियन के रूप में कितना अपनाते हैं।

पीआरआईडी सी बास्कर, छह सहभागी मंडलों के डीजी, पीडीजी तथा अन्य मंडल नेता भी इस शिखर सम्मेलन में उपस्थित रहे। इससे पहले, बाबालोला और मुरुगानंदम ने विशेष रूप से रोटरेक्ट प्रतिनिधियों के साथ बातचीत की थी।

इस समिट में कई प्रमुख सेवा परियोजनाओं की भी शुरुआत की गई। इनमें पुडुचेरी के स्वास्थ्य संस्थानों में 14 डायलिसिस मशीनें स्थापित करने के लिए ₹1.12 करोड़ का जीजी परियोजना शामिल थी। इसके अलावा, रो ई मंडल 2981 द्वारा 300 ज़रूरतमंद महिलाओं को सिलाई मशीनें वितरित की गईं। रो ई मंडल 2982 ने सेलम के सरकारी मोहन कुमारमंगलम अस्पताल में डायबिटीज़ केयर ब्लॉक के निर्माण और होसुर में एक चेक डैम के निर्माण के लिए 137,362 अमेरिकी डॉलर की जीजी परियोजना शुरू की। रो ई मंडल 3000 का लक्ष्य 10,000 सर्वाइकल कैंसर के टीके लगाना, 40 स्कूलों में शौचालय ब्लॉक बनाना तथा स्कूलों में डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए स्मार्ट बोर्ड स्थापित करना है। रो ई मंडल 3206 की योजना जलन से प्रभावित लोगों के लिए रिकंस्ट्रक्टिव सर्जरी उपलब्ध कराना और हर महीने 720 मरीज़ों को डायलिसिस सुविधा प्रदान करना है। डीजीई गांधी कृष्णन ने घोषणा की कि रो ई मंडल 3212 के 125 रोटरी क्लबों में से हर क्लब अगले वर्ष के दौरान एक गांव को गोद लेकर उसके समग्र विकास के लिए कार्य करेगा। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

रोटरी स्थायी प्रभाव उत्पन्न करता है

वी मुत्तुकुमारन

चेन्नई के एग्मोर स्थित सरकारी बच्चों के अस्पताल, इंस्टीट्यूट ऑफ चाइल्ड हेल्थ में दो चिकित्सा उपकरणों की स्थापना के अवसर पर आरआईपीई के यिंका बाबालोला ने कहा, रोटेरियन स्थायी प्रभाव पैदा कर रहे हैं, और इन उच्च-तकनीकी मशीनों की लागत से कहीं अधिक मूल्य उन जीवनों का है जिन्हें वे बचाएँगी।

चेन्नई अपस्केल रोटरी क्लब, रो ई मंडल 3234 को चिकित्सा परियोजना के लिए बधाई देते हुए, उन्होंने आगे चलकर रोटेरियनों के ऐसे प्रयासों के व्यापक सामुदायिक प्रभाव की ओर इशारा किया, क्योंकि वे न केवल अनमोल जिंदगियां बचाते हैं, बल्कि अपने समुदायों में एक स्थायी प्रभाव भी पैदा करते हैं। अस्पताल में ₹41 लाख का हाई फ्रीक्वेंसी ऑसिलेटरी वेंटिलेटर (एचएफओवी), ₹8 लाख का एनेस्थीसिया वर्कस्टेशन और प्री-ऑपरेशन असेसमेंट एरिया में ₹46,000 का फर्नीचर सेट स्थापित किया गया। ये सभी उपकरण फोर्ड बिजनेस सॉल्यूशंस इंडिया से प्राप्त सी एस आर अनुदान के माध्यम से उपलब्ध कराए गए। डीजी विनोद सराओगी ने कहा, एचएफओवी अपनी तरह का एक अनूठा वेंटिलेटर है, जिसकी काफी मांग थी, क्योंकि अस्पताल 10-18 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों की विशेष जरूरतों को पूरा करने में सक्षम नहीं था इसलिए उनके अनुरोध पर हमने इस मशीन को जापान से आयात किया। उन्होंने क्लब अध्यक्ष जगजीत सिंह की पहल और परियोजना को समय पर पूरा करने के लिए उनकी सराहना की।

अपने संबोधन में जगजीत ने कहा कि एचएफओवी एक अत्यंत लचीला वेंटिलेटर है, जो विभिन्न आयु वर्ग के बच्चों की जरूरतों को पूरा करेगा, जिनमें हल्के शिशु (300 ग्राम) से लेकर 13 वर्ष के 40 किलोग्राम वजन वाले बच्चे शामिल हैं। यह एक जीवनरक्षक तकनीक है, जो बाल चिकित्सा शल्य-चिकित्सा के बाद की देखभाल में एक महत्वपूर्ण कमी को पूरा करती है। उन्होंने आगे कहा कि एनेस्थीसिया वर्कस्टेशन सर्जरी या जटिलताओं के बाद बच्चों को लंबे समय तक होने वाले दर्द से

RIPE ओलायिंका बाबालोला ने चेन्नई के इंस्टीट्यूट ऑफ चाइल्ड हेल्थ में एक एनेस्थीसिया वर्कस्टेशन का उद्घाटन किया। इस अवसर पर (बाएं से) RID 3234 के DG विनोद सरावगी, रोटरी क्लब चेन्नई अपस्केल के अध्यक्ष जगजीत सिंह, रो ई निदेशक एम मुरुगानंदम, PDG जे श्रीधर और PRID महेश कोटबागी (एकदम दाईं ओर) भी उपस्थित थे।

राहत देगा, और इस उपकरण का उपयोग आमतौर पर बायोप्सी जैसी प्रक्रियाओं के दौरान किया जाता है, जहाँ मरीजों को बेहोश रखा जाता है। उन्होंने कहा कि दोनों मशीनें मृत्यु दर को कम करेंगी, बाल चिकित्सा देखभाल को मजबूत करके परिणामों में सुधार करेंगी और आईसीयू में एक आरामदायक वातावरण सुनिश्चित करेंगी। उन्होंने यह भी बताया कि इन उच्च-तकनीक उपकरणों से हर वर्ष आईसीएच, एग्मोर में इलाज करा रहे 130-150 गंभीर रूप से बीमार बच्चों को लाभ होगा। क्लब ने मरीजों के लिए क्लिनिकल टेबल, कुर्सियां और तीन-सीटर धातु के सोफों के तीन सेट भी प्रदान किए।

गतिशीलता सहायता

रो ई मंडल 3234 के लगभग 35 क्लबों ने मिलकर विभिन्न आयु वर्ग के लाभार्थियों को 140 जोड़ी श्रवण यंत्र, 25 ठेले, 20 व्हीलचेयर और 13 एआई-सक्षम स्मार्ट विज़न चश्मे वितरित किए। इस परियोजना का कुल मूल्य ₹30.15 लाख है, जिसे सी एस आर अनुदान

RIPE बाबालोला एक बच्ची को सुनने की मशीन भेंट करते हुए। बाएं से: डीजी सरावगी, पीडीजी अबिरामी रामनाथन, ट्रस्टी इलेक्ट पीआरआईडी ए एस वेंकटेश, रो ई निदेशक मुरुगानंदम, पीआरआईडी पी टी प्रभाकर और डीजीएनडी रवि सुंदरेशन (दाएं से दूसरे) भी चित्र में शामिल हैं।

RIPE यिंका बाबालोला ने लाभार्थियों से बातचीत की और उनके इस सवाल पर उनकी प्रतिक्रिया सुनी: आपको क्या लगता है कि रोटरी का यह उपहार मिलने के बाद अब आपकी ज़िंदगी कैसे बदलेगी?

और सदस्य प्रायोजन के संयोजन से पूरा किया गया है। अन्ना विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र क्लब के खचाखच भरे हॉल में, सैकड़ों विशेष बच्चे, दिव्यांग छात्र, उनके माता-पिता और अन्य परियोजना लाभार्थी नाइजीरिया के आरआईपीई बाबालोला से प्राप्त इन सहायक उपकरणों को पाकर उत्साहित थे।

उन्होंने उन्हें हौसला बढ़ाया और उनमें से कुछ के इस सवाल के जवाब सुने: रोटरी से यह उपहार मिलने के बाद आपको क्या लगता है कि आपका जीवन अब कैसे बदलेगा?

ठेले गाड़ियों के शुभारंभ के अवसर पर, रो ई निदेशक मुरुगनंदम के साथ।

रोटरी क्लब मीनाम्बक्कम ने बच्चों को हियरिंग एड उपलब्ध कराने में अग्रणी भूमिका निभाई, जिसके लिए मेरिडियन ग्लोबल वेंचर्स से ₹18.9 लाख का सी एस आर अनुदान प्राप्त हुआ। चौदह क्लबों ने धनराशि जुटाकर 25 ठेले उपलब्ध कराए, जिनमें से प्रत्येक की कीमत ₹19,000 थी। रोटरी क्लब चेन्नई माम्बलम ने 20 व्हीलचेयर (₹1.5 लाख) दान कीं, जिन्हें पुनर्वास विशेषज्ञ और क्लब सदस्य डॉ एस सुंदर द्वारा संचालित फ्रीडम ट्रस्ट ने प्रायोजित किया था। उन्होंने कहा, पिछले 10 वर्षों में हमारे क्लब ने लगभग 1,000 अंगविहीन लोगों को कृत्रिम अंग वितरित किए हैं; यह दक्षिण भारत में चल रही एक सतत परियोजना है। रोटरी क्लब मद्रास ईस्ट ने 13 एआई-सक्षम स्मार्ट विज़न चश्मे दान किए (सी एस आर निधि: ₹5 लाख)।

डीजी सराओगी ने सेवा परियोजनाओं के लिए क्लब अध्यक्षों का आभार व्यक्त किया और आश्वासन दिया कि जैसे ही वाहन तैयार होंगे, 27 महिलाओं को पिंक ऑटो प्रदान किए जाएंगे। उन्होंने कहा, रो ई मंडल 3234 के क्लबों ने सी एस आर अनुदान और सदस्यों के योगदान के माध्यम से प्रति ऑटो ₹3 लाख की लागत से अब तक कुल 128 पिंक ऑटो वितरित किए हैं। रोटरी क्लब मद्रास अशोकनगर के संतोष कुमार कार्यक्रम के अध्यक्ष थे।

चित्र: वी मुत्तुकुमारन

केरल बाढ़
पीड़ितों को मिले घर

रशीदा भगत

जब 2019 में केरल भीषण बाढ़ से तबाह हो गया और सैकड़ों लोगों के घर मलबे में तब्दील हो गए तब रो ई मंडल 3211 के पीडीजी डॉ ए के जॉर्ज और उनकी पत्नी रमणी, जो दोनों ए के एस सदस्य हैं, यह सोच रहे थे कि उन्होंने टीआरएफ को जो धनराशि दान की है, उसके कुछ हिस्से को प्रत्यक्ष निधि में बदलकर किसी प्रकार सहायता की जाए। इस प्रकार इन रोटेरियनों को अपनी पसंद की सेवा परियोजना के लिए अपने योगदान का 95 प्रतिशत हिस्सा वापस प्राप्त हो सकता है।

मदद करने की उनकी प्रबल इच्छा के परिणामस्वरूप कोट्टायम ज़िले में बाढ़ पीड़ितों के लिए ₹1.14 करोड़ की लागत से 12 सुंदर घर बनाए गए। रो ई निदेशक एम मुरुगानंदम द्वारा अप्रैल में इन घरों का उद्घाटन किया गया।

परियोजना का उद्घाटन करते हुए मुरुगानंदम, जो अपनी पत्नी सुमति के साथ उपस्थित थे, ने कहा कि इस मानवीय परियोजना का उद्देश्य 12 बाढ़-प्रभावित परिवारों को आवास उपलब्ध कराना है। मुझे खुशी है कि ये घर स्थानीय पंचायत द्वारा लाभार्थियों के नाम पर आवंटित भूमि पर बनाए गए हैं, जिससे इन लोगों के स्वामित्व, गरिमा और दीर्घकालिक सुरक्षा सुनिश्चित रहेगी।

यह महान पहल पीडीजी जॉर्ज द्वारा दिए गए प्रत्यक्ष दान के माध्यम से संभव हुई और अनेक चुनौतियों, बाधाओं और अड़चनों के बावजूद पूरी की गई जो आज करुणा और सेवा के प्रति एक सच्चे सम्मान का प्रतीक है। यह उन तबाह हो चुके परिवारों को अपने जीवन को स्थिरता, आशा और नए उद्देश्य की भावना के साथ एक नई शुरुआत करने में मदद करेगी।

इन घरों के निर्माण की परियोजना की शुरुआत को याद करते हुए डॉ जॉर्ज कहते हैं कि उस समय उनके रोटरी मंडल में आश्रय स्थल बनाने और घरों के निर्माण की एक परियोजना चल रही थी और इस परियोजना की जिम्मेदारी पीडीजी ई के ल्यूक के पास थी।

केरल सरकार ने उन लोगों की एक सूची प्रकाशित की थी जिन्होंने लगातार आई प्राकृतिक आपदाओं में अपने घर खो दिए थे और जिन्हें पुनर्निर्माण के लिए सहायता और धन की आवश्यकता थी। इसलिए, हर पंचायत और हर नगर पालिका के पास उन नामों की सूची थी क्योंकि बाढ़ से हुई तबाही बहुत बड़ी थी। वैथ्यम के पास थलेवला परमबाक की सूची में ऐसे 12 लोग थे जिनके घरों का पुनर्निर्माण होना था। ल्यूक ने मुझसे संपर्क करके पूछा कि क्या मैं मदद कर सकता हूँ, वह याद करते हैं।

ईमानदारी से स्वीकार करते हुए डॉ जॉर्ज बताते हैं कि शुरू में उन्हें इस परियोजना में रुचि नहीं थी क्योंकि वह कोल्लम में रहते हैं, जो इस स्थान से लगभग 100 किलोमीटर दूर है। इसलिए मैंने कहा कि मुझे इस परियोजना में कोई रुचि नहीं है। लेकिन मेरी पत्नी, जो कोट्टायम ज़िले से हैं और पूर्व इनर व्हील मंडल 321 की अध्यक्ष भी रह चुकी हैं, ने कहा, ''तुम हिचकिचा क्यों रहे हो? यह मेरा मंडल है और तुम मेरे मंडल पर ध्यान क्यों नहीं दे रहे?''

इसके बाद पति इस योजना से सहमत हो गए और उन्होंने निर्णय लिया कि वह अपनी एकेएस निधि का कुछ हिस्सा इन 12 घरों के निर्माण में लगाएंगे।

लेकिन 2022 में एक दुखद त्रासदी घटी, जब एक गंभीर दिल का दौरा पड़ने से उनकी पत्नी का निधन हो गया।

इस समय तक शिलान्यास समारोह पहले ही संपन्न हो चुका था और उनके क्लब रोटरी क्लब किलोन वेस्ट एंड ने सुझाव दिया कि चूँकि यह एक प्रत्यक्ष निधि थी जो इन घरों के निर्माण

रो ई निदेशक एम मुरुगानंदम और उनकी पत्नी सुमति, हाउसिंग साइट में (बाएँ से) PDG ई के ल्यूक, थॉमस वर्वानिकुनेल, गिजू अलेक्जेंडर जॉर्ज, DG टीना एंटनी और DGN मीरा डेनियल के साथ। PDG के श्रीनिवासन, जॉन डेनियल, शिरीष केशवन, के पी रामचंद्रन नायर, ए मणि और DGE कृष्णन जी नायर भी चित्र में शामिल हैं। PDG जॉर्ज की बेटी अंजना बाएँ ओर चित्र में शामिल हैं।

के लिए एक वैश्विक अनुदान से आई थी इसलिए इसका नाम रोटेरियन रमानी जॉर्ज मेमोरियल हाउसिंग प्रोजेक्ट रखा जाना चाहिए और ऐसा ही किया गया।

डॉ जॉर्ज रोटरी क्लब क्विलोन वेस्ट एंड के सदस्यों के बहुत आभारी हैं, जिन्होंने इस परियोजना को पूरा करने में मेरी मदद की। कुछ सदस्यों ने निर्माण कार्य की निगरानी की। हमारे दो सदस्य अपने करियर में मुख्य अभियंता रह चुके हैं और एक अन्य सदस्य आर्किटेक्ट हैं और उन सभी ने परियोजना की देखरेख सुनिश्चित करने में मेरी बहुत बड़ी सहायता की।

यह महान कदम तबाह हो चुके परिवारों को स्थिरता, उम्मीद और एक नए उद्देश्य के साथ अपने जीवन को फिर से संवारने में मदद करेगा।

एम मुरुगानंदम
रो ई निदेशक

जब उनसे विस्तार से पूछा गया कि उद्घाटन समारोह के दौरान रो ई निदेशक मुरुगनंदम ने किन चुनौतियों, बाधाओं और अड़चनों के बावजूद परियोजना को जारी रखने और उसे पूरा करने के लिए उनकी प्रशंसा की थी, तो डॉ जॉर्ज ने समझाया कि पहली चुनौती यह थी कि यह क्षेत्र एक पहाड़ी इलाका था, जो बाढ़ के दौरान हुए भूस्खलनों से बुरी तरह क्षतिग्रस्त और कटावग्रस्त हो गया था।

एक पठार (समतल भूमि) बनाना पड़ा, जिसके लिए काफी खुदाई और मिट्टी हटाने का काम करना आवश्यक था और इसके लिए भी

सरकारी अनुमति लेनी पड़ी। जैसे ही अनुमति मिलती, बारिश हो जाती और कलेक्टर उन्हें सभी काम रोक देने के लिए कह देते।

''पर्यावरण से जुड़ी बड़ी चिंताएँ थीं और हमें उस समतल भूमि (पठार) को तैयार करने में लगभग दो साल लग गए। इसके अलावा, जिस ठेकेदार ने यह काम लिया था, वह बीमार पड़ गया, जिससे एक और साल की अतिरिक्त देरी हो गई।''

रो ई मंडल 3211 की डीजी टीना एंटनी, जिनके पास एक अन्य स्वप्न-परियोजना थी - एक रोटेरियन द्वारा दान की गई भूमि पर एक रोटरी गाँव बनाने की - वह परियोजना कुछ नियमों और विनियमों से जुड़ी समस्याओं के कारण सफल नहीं हो सकी, वह इस परियोजना से जुड़कर बहुत खुश हुईं। यह अपेक्षाकृत छोटी परियोजना थी लेकिन वह चाहती थीं कि यह उनके कार्यकाल के दौरान ही पूरी हो जाए और ऐसा हुआ भी।

डॉ जॉर्ज ने पीडीजी जॉन डेनियल द्वारा दिखाई गई रुचि और सहायता की भी सराहना की, जो मेरे घर से मुश्किल से 10 किलोमीटर दूर रहते हैं और वैश्विक अनुदान के बारे में जानकारी देने में हमेशा मदद के लिए उपलब्ध रहते थे - वह पूर्व आरआरएफसी भी रह चुके हैं - और उन्होंने इस परियोजना में भी गहन रुचि दिखाई। इससे पहले, कोविड के समय में

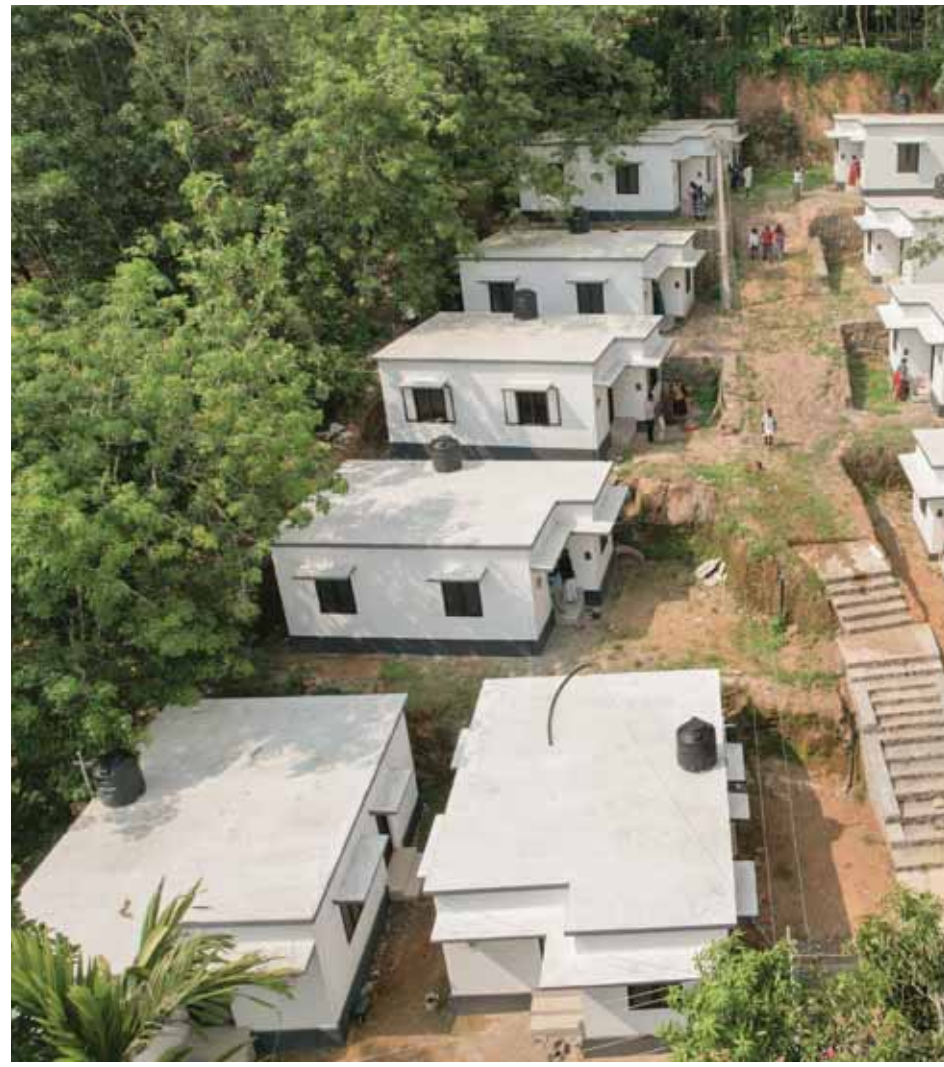

RID मुरुगानंदम एक लाभार्थी को घर की चाबी सौंप रहे हैं। उनकी पत्नी सुमति और बेटे प्रवीण कार्तिक भी चित्र में शामिल हैं। DG टीना, अंजना जॉर्ज, PDG जी ए जॉर्ज, रामचंद्रन नायर और DGN मीरा भी चित्र में शामिल हैं।

कोट्टायम में बाढ़ पीड़ितों के लिए बनाए गए घरों का एक ऊपर से नज़ारा।

बाढ़ से प्रभावित परिवार घर की चाबियां मिलने का इंतज़ार करते हुए।

डीजी टीना एक महिला को चाबी देती हुई। चित्र में सुमति भी शामिल हैं।

हाउसिंग साइट पर पट्टिका का अनावरण करते हुए।

हमने मिलकर ₹3.6 करोड़ मूल्य के वेंटिलेटर वितरित किए थे।

वह आगे कहते हैं कि इतने सारे लोगों के उत्साह और रुचि ने इस परियोजना का पूरा होना सुनिश्चित किया जो एक वैश्विक अनुदान था, जिसमें यूके से एक गुप्त अंतर्राष्ट्रीय साझेदार भी शामिल था, जिसने केवल पर्यवेक्षक की भूमिका निभाई और कोई वित्तीय योगदान नहीं दिया।

उनकी बेटी और उसी क्लब की सदस्य, डॉ अंजना जॉर्ज ने क्लब के सभी सदस्यों के सहयोग के लिए तथा जिला पंचायत अधिकारियों के प्रति आभार व्यक्त किया, जिन्होंने इस परियोजना को पूरा करने में सहायता की। इस कार्यक्रम में क्लब के सदस्य, डीजी टीना, डीजीएन मीरा जॉन, उनके पति जॉन डेनियल तथा अन्य पूर्व गवर्नर और रो ई अधिकारी उपस्थित थे।■

सेवा के पथ पर एक आदर्श रोटेरियन

अतुल भिडे

उन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान कोलकाता में अपनी नानी के घर की सीढ़ियों के नीचे बने एक अस्थायी बिस्तर पर जन्म लिया, जब जापानी बमबारी का खतरा शहर पर मंडरा रहा था। माता-पिता के बीच मतभेदों के कारण मात्र छह वर्ष की आयु में उन्हें बोर्डिंग स्कूल भेज दिया गया और कुछ ही समय बाद घर से 1,200 किलोमीटर दूर एक अन्य विद्यालय में स्थानांतरित कर दिया गया।

पूर्व रो ई अध्यक्ष कल्याण बेनर्जी के शुरुआती वर्ष सीमाओं से घिरे हुए प्रतीत होते है लेकिन उन्हीं परिस्थितियों ने उन्हें मानसिक रूप से दृढ़ और सहनशील बनाया। टायरलेसली योर्स - *द लाइफ़ एण्ड वर्क ऑफ़ कल्याण बेनर्जी* की लगभग 200 पृष्ठों की जीवनी, जिसे गणेश वंचीसवरण ने लिखा है, एक ऐसे योद्धा की प्रेरक यात्रा हमारे सामने प्रस्तुत करती है, जो आत्ममंथन में विश्वास रखता है, स्वयं पर भरोसा करता है और कर्म को ही अपनी पहचान बनाता है।

अपने जीवन के हर महत्वपूर्ण मोड़ पर कल्याण बेनर्जी ने परंपराओं और परिस्थितियों से अधिक अपने आत्मविश्वास और निर्णयों पर भरोसा किया। चाहे आर्थिक, शैक्षणिक और जातिगत पृष्ठभूमि के कारण परिवार की असहमति के बावजूद अपनी पसंद की लड़की बिनोटा से विवाह करने का निर्णय हो;

PRIP कल्याण बेनर्जी और बिनोता, वापी, गुजरात में अपनी शादी की 50वीं सालगिरह के जश्न के दौरान।

या फिर आईआईटी खड़गपुर जैसे प्रतिष्ठित संस्थान से स्नातक होने के बाद करियर की शुरुआत के लिए केवल दस वर्ष पुरानी एक छोटी कंपनी को चुनना हो; अथवा पेशेवर उन्नति के लिए सबसे उपयुक्त माने जाने वाले मुंबई जैसे महानगर को छोड़कर वापी जैसे छोटे और अनजान स्थान में एक नई कंपनी से जुड़ना हो उन्होंने हर बार अपनी क्षमताओं और विश्वास का ही अनुसरण किया। यही संदेश यह किताब प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती है।

कल्याण बेनर्जी के जीवन को सामान्य सफलताओं की कहानियों से जो बात अलग करती है वो है उनकी मानवीय संवेदनाएँ और समाज के प्रति उनकी अथक प्रतिबद्धता। अपने पेशेवर जीवन में आगे बढ़ते हुए उन्होंने केवल अपने विकास तक स्वयं को सीमित नहीं रखा बल्कि दूसरों के दुःख-दर्द को समझने, उनके लिए सोचने और उस दिशा में निरंतर कार्य करने को अपने जीवन का उद्देश्य बना लिया।

तीन अलग-अलग शिक्षण संस्थानों में पढ़ाई के दौरान युवा कल्याण बेनर्जी ने हर विद्यालय से जीवन के महत्वपूर्ण गुण आत्मसात किए। टैगोर के शांतिनिकेतन में कविता-पाठ और वाद-विवाद कला के माध्यम से उन्होंने मंच संचालन की कला सीखी; ब्रिटिश परंपरा वाले लेडी हार्टली स्कूल से जीवन के शिष्टाचार और अनुशासन को अपनाया; तथा ग्वालियर के सिंधिया पब्लिक स्कूल से उन्होंने अपने सार्वजनिक वक्तृत्व कौशल को निखारा। उनके सहपाठियों के अनुसार आँखों में चमक और आत्मविश्वास लिए यह बालक अपने प्रारंभिक वर्षों में अनेक क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त करता चला गया।

शांतिनिकेतन में युवा कल्याण बेनर्जी अपने वरिष्ठ छात्रों के बीच एक और दिलचस्प कारण से भी बेहद लोकप्रिय थे - वह बड़ी चतुराई और आत्मविश्वास के साथ उनके प्रेम-पत्र लड़कियों के हॉस्टल तक पहुँचाने में माहिर थे, जो वहाँ से दो ब्लॉक दूर स्थित था।

जहाँ शांतिनिकेतन ने कल्याण बेनर्जी के भीतर आदर्शों, संस्कारों और नैतिक मूल्यों की नींव रखी, वहीं सिंधिया स्कूल ने उनके मन में खेलों के प्रति गहन प्रेम विकसित किया। वह एक उत्कृष्ट एथलीट होने के साथ-साथ फुटबॉल और हॉकी के कुशल खिलाड़ी भी रहे और वह ईस्ट बंगाल फुटबॉल टीम के प्रबल समर्थक हैं।

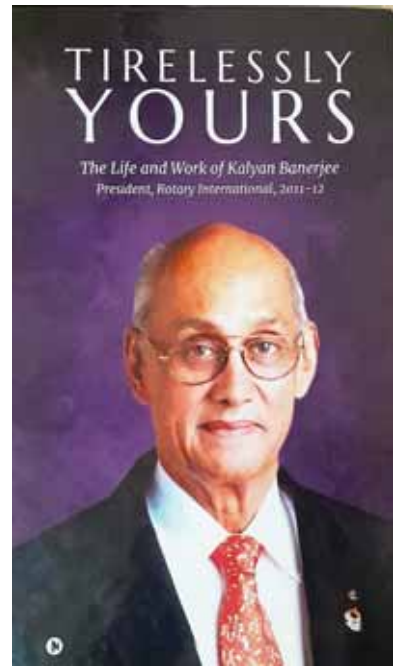

Tirelessly Yours
The Life and Work of
Kalyan Banerjee,
President,
Rotary International, 2011-12

लेखक: गणेश वांचीश्वरन
नोशन प्रेस

कीमत: ₹1,465

Amazon हार्डकवर: ₹1,319;
पेपरबैक: ₹1,179

उन्होंने सिंधिया स्कूल में अध्ययन के दौरान सीनियर कैम्ब्रिज परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसी विद्यालय में उनकी मित्रता माधव राव और आनंद शंकर से हुई जिसने आगे चलकर उनके जीवन और व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

1960 में उन्होंने आईआईटी खड़गपुर में प्रवेश प्राप्त किया। वहाँ से केमिकल इंजीनियरिंग में स्नातक होने के बाद उन्होंने अपने चचेरे भाई की सलाह पर एक साहसिक निर्णय लिया और मुंबई स्थित एक अपेक्षाकृत नई कंपनी, एक्सेल इंडस्ट्रीज़ से अपने करियर की शुरुआत की, जिसका स्वामित्व के. सी. श्रॉफ के पास था।

उनकी प्रतिभा और मेहनत से प्रभावित होकर जब के सी श्रॉफ के चचेरे भाई, रजनीकांत ने गुजरात के छोटे शहर वापी में शून्य से एक नई कंपनी शुरू करने का निर्णय लिया, तो उन्होंने अपनी संस्थापक टीम में शामिल होने के लिए बेनर्जी को आमंत्रित किया। इस निर्णय पर उनके पिता असंतुष्ट थे क्योंकि वह मुंबई की स्थापित कंपनी एक्सेल इंडस्ट्रीज़ को छोड़ने के उनके फैसले से सहमत नहीं थे। फिर भी, अपने फैसले पर अडिग रहते हुए कल्याण बेनर्जी वापी स्थानांतरित हुए और एक नए उद्यम यूनाइटेड फास्फरस लिमिटेड के निर्माण में अपना सर्वोत्तम योगदान दिया।

यह 1967 की बात है; तभी से UPL के संस्थापक, रजूभाई श्रॉफ और उनकी पत्नी सांद्रा श्रॉफ, कल्याण बेनर्जी के लिए न केवल उनके पेशेवर जीवन में बल्कि उनके रोटरी कार्यों में भी मार्गदर्शक और मजबूत समर्थक बने रहे।

रोटरी - भाईचारे और सेवा का संसार

1972 में रोटरी क्लब वापी ने कल्याण बेनर्जी को सदस्य बनने के लिए आमंत्रित किया। इस निर्णय ने न केवल उनके लिए बल्कि क्लब के लिए भी नए अवसरों और संभावनाओं के द्वार खोल दिए। इतने वर्षों के दौरान, श्रॉफ के समर्थन से बेनर्जी ने कर्मचारियों के कल्याण के लिए खेल, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों में आधारभूत संरचनाओं के विकास की दिशा में कार्य किया और रोटरी ने समाजसेवा के उनके व्यापक दृष्टिकोण को साकार करने के लिए उन्हें एक सशक्त मंच प्रदान किया। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप, उन्होंने वापी के परिवर्तन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जहाँ कभी टूटी-फूटी सड़कें, रेस्तरां की कमी और पानी की गंभीर समस्या थी, वहाँ धीरे-धीरे एक विकसित और आधुनिक नगर के रूप में परिवर्तन की नींव रखी गई।

हालाँकि उनकी अपनी कंपनी बढ़िया प्रगति कर रही थी, पर बेनर्जी यह जानते थे कि उद्योगों की सामूहिक समस्याओं और हितों को सरकार तक प्रभावी ढंग से पहुँचाने के लिए एक संगठित मंच आवश्यक है। इसी सोच के अंतर्गत उन्होंने रजूभाई श्रॉफ और कुछ अन्य उद्योगपतियों के साथ मिलकर वापी इंडस्ट्रियल एसोसिएशन के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके नेतृत्व, दूरदर्शिता और अधिकारियों से संवाद स्थापित कर उद्योग की समस्याओं के समाधान की उनकी क्षमता के कारण वह बाद में इस संघ के अध्यक्ष भी बने।

अपने अध्यक्षीय वर्ष के दौरान फिलीपींस में गोल्फ खेलते हुए बेनर्जी।

UPL में उनकी बढ़ती जिम्मेदारियों और UPL बोर्ड में निदेशक के रूप में उनकी नियुक्ति के साथ-साथ रोटरी में उनकी भागीदारी भी और बढ़ती रही जिससे उन्हें अधिक महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाने का अवसर मिला जैसे 1975-76 में क्लब अध्यक्ष की जिम्मेदारी और 1980-81 में उन्होंने मंडल गवर्नर के रूप में जिम्मेदारी संभाली।

एक रोटरी गवर्नर के रूप में उनके कार्यकाल के दौरान उन्हें तब उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल हुई जब उन्होंने तत्कालीन रो ई अध्यक्ष को अपने मंडल सम्मेलन में आमंत्रित किया, जिसमें रिकॉर्ड 1,500 प्रतिभागियों ने पंजीकरण कराया। इस सफलता के बाद रोटरी मुख्यालय में उन्हें विशेष रूप से पहचाना जाने लगा और रोटरी के उनके गहरे ज्ञान और उत्कृष्ट अभिव्यक्ति कौशल के कारण उन्हें 1983 की अंतर्राष्ट्रीय सभा में एक प्रशिक्षक के रूप में आमंत्रित किया गया।

वापी में रोटरी अस्पताल को मात्र दो-बिस्तरों वाले क्लिनिक से बढ़कर 200-बिस्तरों के बहुविशेषता वाले संस्थान में विकसित किया जाना, शिक्षा के क्षेत्र में नए संस्थानों की स्थापना और साथ ही दांग जिले के किसानों के लिए उनके द्वारा शुरू की गई पहले वाकई प्रेरणादायक है।

''लोग मतलब के रिश्ते बनाते हैं, लेकिन बेनर्जी वास्तविक रिश्ते बनाते हैं,'' बेनर्जी के लिए दोस्ती का मतलब समझाते हुए रोटेरियन माधव मोहन उचित रूप से कहते है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इस सरल स्वभाव वाले और शास्त्रीय संगीत प्रेमी (भारतीय और पश्चिमी दोनों प्रकार के संगीत - अमज़द अली खान से लेकर यन्नी तक)

ने अपने इन्हीं गहरे संबंधों और मित्रता के कारण, अपने विद्यालयी मित्र माधवराव सिंधिया के माध्यम से भारतीय रेल को भी जोड़ने में सफलता पाई, जिससे वापी में महत्वपूर्ण रेलगाड़ियां रुकने लगी।

बेनर्जी के पोलियो उन्मूलन और साक्षरता अभियानों में किए गए व्यापक प्रयास इस किताब में विस्तार से वर्णित किए गए हैं। उन्होंने दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों का व्यक्तिगत रूप से दौरा किया, मुस्लिम समुदायों से मिलकर टीकाकरण को लेकर उनकी शंकाओं और प्रतिरोध को दूर करने का प्रयास किया और रोटरी अंतर्राष्ट्रीय की सलाह के विपरीत जाकर उन्होंने रो ई अध्यक्ष के रूप में युद्ध-ग्रस्त परिस्थितियों में भी अफगानिस्तान की यात्रा करने का साहसिक निर्णय लिया। उन्होंने वहाँ जाकर उस देश के राष्ट्रपति से मुलाकात की और वहाँ के बच्चों के लिए पोलियो टीकाकरण के महत्व पर चर्चा की - यहाँ तक कि इस यात्रा के दौरान उनकी पत्नी बिनोटा को भी वापस भेज दिया गया था। उनका यह दृढ़ संकल्प और एक कदम आगे बढ़कर सेवा करने का दृष्टिकोण यह दर्शाता है कि वह हमेशा रोटरी के सेवा-उद्देश्यों के लिए दुनिया भर में अतिरिक्त प्रयास करते रहे हैं।

यह किताब उनके रो ई अध्यक्षीय कार्यकाल से जुड़े अनेक रोचक पहलुओं पर प्रकाश डालती है और यह भी बताती है कि वह टीआरएफ के न्यासी अध्यक्ष बनने से पहले आर्च क्लम्फ सोसाइटी के सदस्य कैसे बने, जिससे उन्हें अन्य लोगों से दान और सहयोग की अपेक्षा करने के लिए नैतिक आधार की प्राप्ति हुई। इस किताब में रोटेरियनों, क्लब सदस्यों, वैश्विक नेताओं तथा उनके मित्रों एवं सहयोगियों के साक्षात्कारों पर आधारित अनेक संस्मरण शामिल हैं, जिनमें UPL के पूर्व लेखाकार और वर्तमान में गुजरात के वित्त मंत्री, कानू भाई, उनके परिवारजन और निजी मित्रों की कहानियाँ भी सम्मिलित हैं, जो इस किताब को अत्यंत जीवंत और रोचक बनाती हैं। इसके साथ ही उनकी दिवंगत पत्नी बिनोटा का उनके जीवन में दिए गए योगदान का भी विशेष रूप से वर्णन किया गया है जिससे उनके व्यक्तिगत, पेशेवर और रोटरी जीवन- तीनों स्तरों पर उनके विशेष योगदान का पता चलता है। अपनी पत्नी की बीमारी के दौरान बेनर्जी द्वारा उनकी देखभाल का वर्णन उनके एक संवेदनशील, प्रेमपूर्ण और समर्पित जीवनसाथी के स्वरूप को भी उजागर करता है।

बेनर्जी की उपस्थिति में बिनोता पोप से हाथ मिलाती हुई।

इस किताब में बेनर्जी के जीवन के विभिन्न चरणों की अनेक रोचक और दुर्लभ तस्वीरें भी शामिल हैं।

इस किताब की भूमिका मोहन पटेल द्वारा लिखी गई है, जो एक उद्योगपति, उनके मित्र और मुंबई के पूर्व शेरिफ रहे हैं। इस किताब का समापन कृषित शाह की टिप्पणियों के साथ होता है, जिन्होंने इस किताब की अवधारणा को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसे स्वयं रोटरी क्लब वापी द्वारा कमीशन किया गया न कि बेनर्जी द्वारा। ''कल्याण के बिना वापी, वापी नहीं होता और बिनोटा के बिना कल्याण, कल्याण नहीं होते'' रोटेरियन संदीप शाह कहते है।

कल्याण बेनर्जी की कहानी आराम के बजाय उद्देश्य को बार-बार चुनने की कहानी है। गुजरात की ही धरती से आए मिल्क-मैन ऑफ इंडिया डॉक्टर वर्घीस कुरियन की तरह ही बेनर्जी ने सिर्फ करिअर का निर्माण नहीं किया बल्कि अपने कार्यों से समुदायों, संस्थाओं और सेवा-परिस्थितियों का एक ऐसा मजबूत तंत्र खड़ा किया जो लंबे समय तक लोगों के जीवन को प्रभावित करता रहेगा।

उनका जीवन वास्तव में परिवर्तनकारी नेतृत्व का एक सशक्त उदाहरण है।

लेखक रोटरी क्लब ठाणे हिल्स के सदस्य हैं।

अपने पोते बोदी के साथ।

Rotary PEOPLE OF ACTION

लड़कियों के लिए साइकिलें; थैलेसीमिया मरीजों के लिए रक्तदान

रशीदा भगत

रो ई मंडल 3142 के लगभग 30 क्लबों ने धन इकट्ठा करके महाराष्ट्र के कुछ ग्रामीण क्षेत्रों - जैसे कल्याण, भिवंडी, शाहपुर और टिटवाला - में रहने वाले गरीब परिवारों की आदिवासी स्कूली लड़कियों को 500 साइकिलें उपहार में दी।

₹16 लाख से अधिक खर्च वाली यह परियोजना वीवो जैसी कंपनियों द्वारा दी गई आर्थिक सहायता (जिसमें वीवो ने ₹4 लाख दिए) और विभिन्न क्लब सदस्यों के योगदान से संभव हो पाई। हाल ही में रो ई मंडल 3142 की साक्षरता टीम द्वारा भिवंडी में दो रोटेरियनों के स्वामित्व वाले प्रणायु अस्पताल में आयोजित किए गए एक वितरण समारोह में लड़कियों को ये साइकिलें वितरित की गईं।

ये साइकिलें यह सुनिश्चित करेंगी कि कक्षा 7 से 10 तक की वे लड़कियाँ, जो स्कूल की 3-4 किलोमीटर लंबी दूरी तय करने की वजह से अपनी पढ़ाई छोड़ने के खतरे में थीं, अब अपनी शिक्षा जारी रख सकेंगी।

कन्या नामक इस परियोजना की शुरुआत कैसे हुई, इस बारे में जानकारी देते हुए मंडल साक्षरता अध्यक्ष और रोटरी क्लब नवी मुंबई लिंक टाउन ऐरोली के एक सदस्य, विनया हेबर ने कहा: हमारी टीम सरकारी स्कूलों में सुविधाओं और

रो ई मंडल 3142 की साक्षरता टीम, स्कूल छात्रों को साइकिलें वितरित करने के बाद।

रो ई मंडल 3142 द्वारा उपहार में दी गई साइकिलों के साथ छात्राएं।

बुनियादी ढांचों को बेहतर बनाने के लिए अनेक परियोजनाएँ करती है। पिछले कुछ महीनों में मैंने इन क्षेत्रों के ग्रामीण और आदिवासी इलाकों के सरकारी स्कूलों का दौरा किया ताकि कुछ स्कूलों को हैप्पी स्कूलों में बदला जा सके। इस दौरान जब हमने प्राचार्यों और शिक्षकों से बात की तो पता चला कि सबसे बड़ी समस्या यह थी कि लड़कियाँ उच्च माध्यमिक स्कूलों से पढ़ाई छोड़कर जा रही थीं क्योंकि उनके घर स्कूल से 3-4 किलोमीटर दूर थे।

यह आम बात है कि ग्रामीण क्षेत्रों में माता-पिता किशोरी लड़कियों को स्कूल भेजने में हिचकिचाते हैं, खासकर तब जब स्कूल पहुँचने और वापस घर आने के लिए लंबी दूरी पैदल तय करनी पड़े। लड़कियों की शारीरिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए वे उन्हें

यह साइकिल केवल आवागमन का साधन ही नहीं, बल्कि शिक्षा, गरिमा और आत्मनिर्भरता का एक सशक्त माध्यम है।

स्कूल से निकाल लेते हैं, जिससे उनकी शिक्षा दुखद रूप से बीच में ही समाप्त हो जाती है। हमें बताया गया कि लड़कियाँ प्राथमिक स्कूलों में बिना किसी समस्या के नियमित रूप से पढ़ने जाती हैं क्योंकि ऐसे स्कूल अधिक संख्या में होते हैं और उनके घरों के पास होते हैं। लेकिन हाई स्कूल अक्सर उनके घर से 3-4 किलोमीटर दूर होते हैं और इन गाँवों में उचित सार्वजनिक परिवहन उपलब्ध नहीं होने के कारण कई छात्राएँ स्कूल छोड़ देती हैं।

दुख की बात यह थी कि आमतौर पर लड़कियाँ अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिए बहुत उत्साहित रहती हैं लेकिन जब माता-पिता उनकी शारीरिक सुरक्षा को प्राथमिकता देते हैं तो उन्हें मजबूर होकर पढ़ाई छोड़नी पड़ती है। इन लड़कियों के माता-पिता ज्यादातर खेतों में मजदूरी करते हैं, ईंट-भट्टों में काम करते हैं या अन्य दिहाड़ी मजदूरी से अपना जीवनयापन करते हैं। इसलिए हमने परियोजना में थोड़ा बदलाव करने का फैसला किया और इन लड़कियों को सशक्त बनाने तथा उनका स्कूल जाना सुनिश्चित करने के लिए उन्हें साइकिल देने का निर्णय लिया, विनया कहती हैं।

इसका परिणाम 500 प्रसन्न चेहरों और उनके उज्ज्वल भविष्य के रूप में सामने आया। इस परियोजना की सबसे अच्छी बात यह है कि इससे केवल उन 500 लड़कियों की ही मदद नहीं हुई

जिन्हें साइकिलें मिलीं। विभिन्न स्कूलों से कुल 850 साइकिलों की मांग आई थी और इस परियोजना टीम ने शुरुआत में लगभग 1,000 साइकिलों के लिए धन जुटाने का लक्ष्य रखा था, लेकिन वे इतनी बड़ी राशि इकट्ठा नहीं कर सके।

अब रोटेरियन और स्कूल प्रशासन दोनों ही लड़कियों को प्रोत्साहित कर रहे हैं कि वे जब भी संभव हो दूसरी छात्राओं को अपनी साइकिल पर साथ ले जाकर उनकी मदद करें, इससे आपसी सहयोग, देखभाल और समावेशिता की भावना बढ़ेगी। हमें बहुत खुशी है कि अब कई लड़कियों को कक्षा 5 के बाद स्कूल नहीं छोड़ना पड़ेगा और वे सुरक्षा, सम्मान और आत्मविश्वास के साथ अपनी शिक्षा पूरी कर सकेंगी, विनया कहती हैं।

उन्होंने आगे कहा, असल में लड़कों ने भी हमसे साइकिल देने का अनुरोध किया था; चूँकि हम सभी की इच्छाएँ पूरी नहीं कर सके इसलिए हमने तय किया है कि इस परियोजना को अगले वर्ष भी जारी रखेंगे। क्योंकि आखिरकार हमें लगता है कि हमें लड़कों और लड़कियों के बीच भेदभाव नहीं करना चाहिए। लाभार्थियों का चयन उनके घर और स्कूल के बीच की दूरी के आधार पर किया गया। इसके अलावा, कुछ ऐसे बच्चों को भी चुना गया जिनके पास केवल एक ही अभिभावक है।

इस परियोजना की पहुँच को बढ़ावा देने के लिए रोटेरियनों ने स्कूलों के प्राचार्यों से अनुरोध किया कि जिन लड़कियों को साइकिलें मिली है और जिनकी छोटी बहनें स्कूल में नहीं हैं, वे कक्षा 10 पूरी करने के बाद अपनी साइकिलें स्कूल को वापस कर दें ताकि वही साइकिलें दूसरी जरूरतमंद लड़कियों को दी जा सकें।

साइकिलें एक कार्यक्रम में वितरित की गईं, जिसमें डीजी हर्ष मकोल, डीजीई नीलेश जयवंत, परियोजना समन्वयक बी वी रविप्रकाश, मंडल साक्षरता अध्यक्ष विनया हेबर, सहायक गवर्नर रोहीदास भोईर और प्रणायु अस्पताल के एमडी और एक रोटेरियन, डॉ राजेश भोईर के साथ ही मुख्य प्रायोजक वीवो के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

रविप्रकाश ने परियोजना की जानकारी साझा की और वीवो, वेन्टुरा सिक्युरिटीस (₹1.5 लाख) और सायरस टूर्स एंड ट्रैवल्स (₹2 लाख) सहित विभिन्न क्लबों के अध्यक्षों और दाताओं के योगदान को स्वीकार किया जिसे उन्होंने सामूहिक सेवा की शक्ति का प्रमाण बताया। डीजी मकोल ने कहा: ये सिर्फ साइकिलें नहीं हैं-ये शिक्षा के रास्ते हैं और इन लड़कियों के लिए एक उज्ज्वल भविष्य की ओर बढ़ने के कदम हैं।

विनया ने आगे कहा, इन लड़कियों के चेहरों पर जो खुशी, उत्साह और कृतज्ञता थी, उसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। उनके लिए यह साइकिल केवल एक परिवहन का साधन नहीं है बल्कि शिक्षा, सम्मान और आत्मनिर्भरता को सक्षम बनाने वाला एक शक्तिशाली माध्यम है। डीजीई नीलेश जयवंत ने छात्राओं को प्रोत्साहित किया कि वे दृढ़ संकल्प के साथ अपनी पढ़ाई जारी रखें।

थेलेसेमिया केंद्र

इसी अवसर पर एक महत्वपूर्ण स्वास्थ्य पहल के अंतर्गत एक थैलेसीमिया देखभाल केंद्र का भी उद्घाटन किया गया, जिससे शिक्षा के साथ-साथ स्वास्थ्य सेवाओं के प्रति भी रोटरी की प्रतिबद्धता मजबूत होती है।

बाएँ: स्कूली बच्चों को साइकिलें भेंट करने के बाद डिस्ट्रिक्ट लिटरेसी चेयर विनया हेब्बार (बाएँ से छठे), प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर बी वी रवि प्रकाश (पीली टी-शर्ट में), और लिटरेसी डिप्टी डायरेक्टर कैलाश सोनवणे (प्रकाश के बाएँ)।

यह केंद्र प्रणायु अस्पताल में स्थित है, जो भोइर बंधुओं के स्वामित्व में है और दोनों ही रोटेरियन हैं। यह अस्पताल भिवंडी में स्थित है और यह इस मंडल की चौथी थैलेसीमिया परियोजना है, जिसे यहाँ के रोटेरियनों ने पूर्ण किया है।

जब विनया से पूछा गया कि इस केंद्र में थैलेसेमिया मरीजों को जो रक्त दान किया जाता है, उसे कैसे एकत्रित किया जाता है, तो वह बताती हैं कि मंडल के विभिन्न रोटरी क्लबों द्वारा नियमित रूप से इंजीनियरिंग कॉलेजों, अन्य कॉलेजों और गुरुद्वारों आदि स्थानों पर रक्तदान शिविर आयोजित किया जाता है, जहाँ स्वयंसेवक रक्तदान करते हैं।

इस कार्यक्रम में बोलते हुए डॉ राजेश भोईर ने इस पहल के बारे में जानकारी दी और थैलेसेमिया के बारे में समय पर जागरूकता और इलाज की आवश्यकता पर जोर दिया। यह एक अनुवांशिक रक्त रोग है, जिसमें मरीजों को नियमित रूप से रक्त चढ़ाने और जीवनभर देखभाल की जरूरत होती है। यह केंद्र थैलेसीमिया के मरीजों को नि:शुल्क इलाज प्रदान करेगा, जिससे उन परिवारों को बड़ी राहत मिलेगी जो आर्थिक और स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। यह पहल शुरुआती पहचान, परामर्श और जागरूकता फैलाने पर भी ध्यान देगी ताकि इस बीमारी को बेहतर तरीके से रोका और नियंत्रित किया जा सके।

यह कार्यक्रम रोटरी की शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और समुदाय के उत्थान के प्रति प्रतिबद्धता का एक शक्तिशाली उदाहरण है। इस पहल के माध्यम से यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि युवा लड़कियाँ अपनी शिक्षा जारी रख सकें और ज़रूरतमंद लोगों तक आवश्यक स्वास्थ्य सेवाएँ पहुँच सकें, विनया ने आगे कहा। ■

जब भारतीय पत्नियों ने अफ्रीका में हमारी भूखी क्रिकेट टीम को खाना खिलाया

एस आर मधु

भारत के पसंदीदा खेल क्रिकेट के प्रति मेरा जुनून तब शुरू हुआ जब मैं छह साल का था और बैंगलोर के एक मोहल्ले के मैदान में टेनिस बॉल से क्रिकेट खेलता था। मेरी प्रतिभा शून्य थी - मैंने न तो अधिक रन बनाए और न ही विकेट लिए - लेकिन मैं क्रिकेट से जुड़े किस्सों और आँकड़ों के सहारे लोगों का ध्यान खींच लेता था, जिसका श्रेय जैक फिंगलटन की किताब ब्राइटली फेड्स दी डॉन जैसी किताबों को जाता है। मेरे चाचा, जो एक क्रिकेट प्रेमी थे, अपने कार्यालय की लाइब्रेरी के प्रभारी थे। वह क्रिकेट से जुड़ी हर किताब मंगवाते थे - जिन्हें मैं तुरंत पढ़कर विस्तृत नोट्स बनाकर वापस लौटा देता था। मुझे प्रसिद्ध क्रिकेट लेखक नेविल कार्डस को उद्धृत करना बहुत पसंद था, विशेषकर उनका सबसे प्रसिद्ध वाक्य: दी बेट्समेन डिस्मिस्ड दी बॉल फ्रॉम हिस प्रेज़न्स। इस वाक्य को मुंबई से लेकर मेलबर्न तक के कमेंटेटर आज भी दोहराते हैं।

मुझे बीबीसी के कमेंटेटर जॉन आरलोट बहुत पसंद थे, जो एक कवि और वाइन के पारखी भी थे और बेहद बुद्धिमत्ता और आकर्षक शैली में टिप्पणी करते थे। जब दक्षिण अफ्रीकी स्पिनर तुफटी मान ने अंग्रेज़ी बल्लेबाज़ जॉर्ज मान को अपनी ऑफ-स्पिन से परेशान किया, तब जॉन आरलोट ने मज़ाकिया अंदाज़ में कहा: यह तो मान द्वारा मान के प्रति अमानवीय व्यवहार का स्पष्ट मामला है।

जब मैं बड़ा हुआ, तो मेरा क्रिकेट-प्रेम और भी तीव्र हो गया। अपने जैसे जुनूनी लोगों की तरह, मैं दफ़्तर की मेज़ की दराज में अपना ट्रांजिस्टर छिपाकर गुप्त रूप से क्रिकेट कमेंट्री सुनता था। जब भारत ने 1983 का विश्व कप जीता, तो मैंने अपनी पत्नी निर्मला को एक सोने का हार उपहार में देकर इसका जश्न मनाया। उसके रिश्तेदार उसे चिढ़ाते हुए पूछते थे कि इस जीत में उसका आखिर क्या योगदान था।

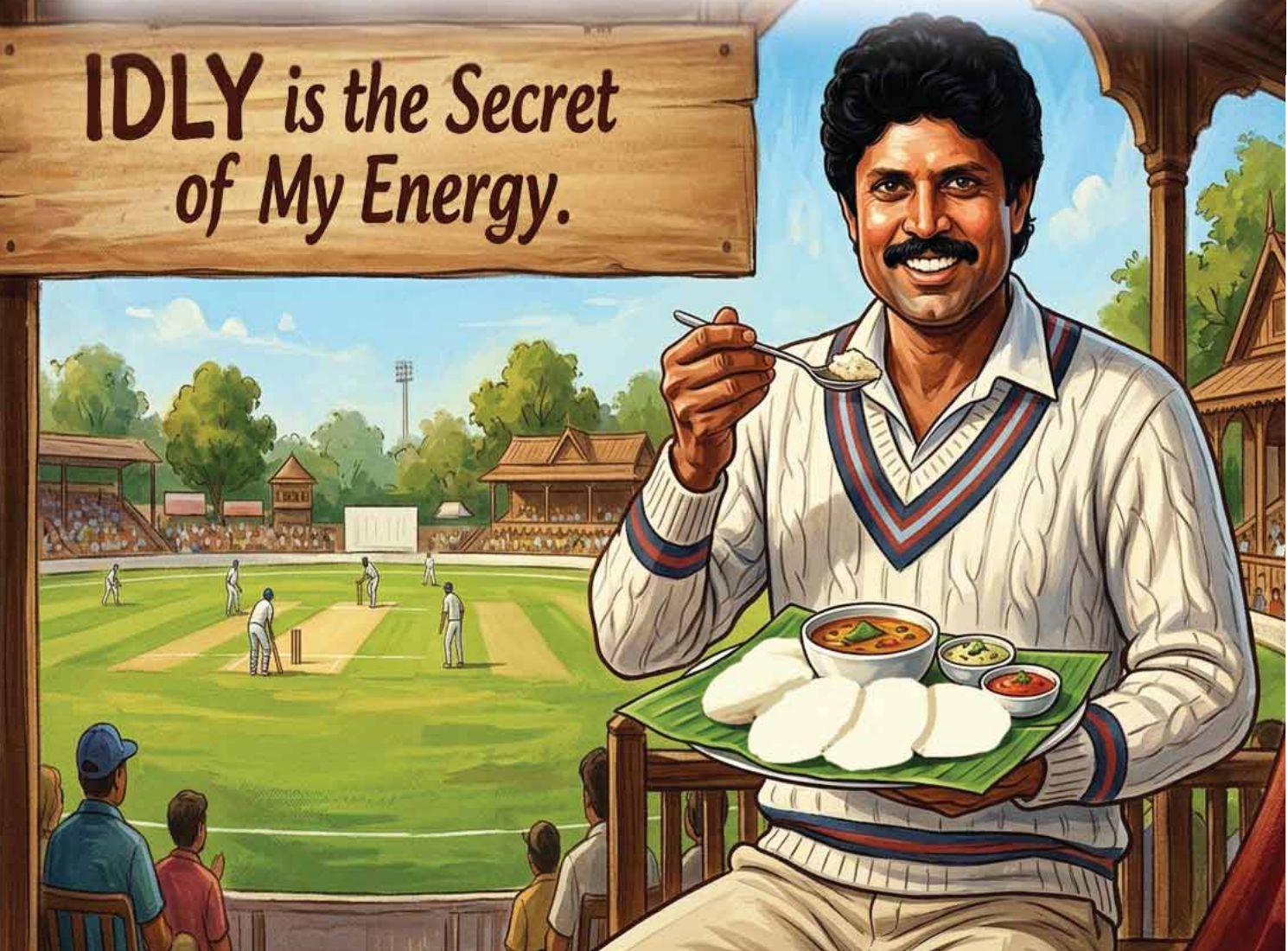

लेकिन निर्मला को क्रिकेट पसंद नहीं था और वह अक्सर शिकायत करती थीं कि मैं इस पर बहुत समय बर्बाद करता हूँ। लंदन की छुट्टियों के दौरान भी वह तब नाराज़ हो गईं जब मैं टीवी पर पूरी तरह से इंग्लैंड-भारत के एक टेस्ट मैच में डूबा हुआ था। तेंदुलकर उस समय शानदार फॉर्म में थे और मैं मैच से हट ही नहीं पा रहा था। उधर, निर्मला ने अकेले ही बाहर जाने का फैसला किया और बकिंघम पैलेस के लिए एक गाइडेड टूर कर लिया।

हालाँकि, एक बार निर्मला ने भारतीय क्रिकेट टीम के लिए एक ऐसा महान काम किया जो मैं कभी नहीं कर सकता था। यह घटना अक्टूबर 1992 की है, जब मैं ज़िम्बाब्वे के हरारे में संयुक्त राष्ट्र की एक परियोजना पर चार वर्षों से कार्यरत था। भारतीय समुदाय तब बहुत उत्साहित था जब हमारी क्रिकेट टीम दक्षिण अफ्रीका जाते समय ज़िम्बाब्वे पहुँची, जहाँ उन्हें तीन टेस्ट मैच खेलने थे। हरारे में एक टेस्ट और एक एकदिवसीय मैच खेला गया। उस समय टीम के कप्तान अज़हरुद्दीन थे और प्रमुख खिलाड़ियों में कपिल देव, तेंदुलकर, मनोज प्रभाकर, जवागल श्रीनाथ शामिल थे।

ज़िम्बाब्वे में भारतीय सरकार ने एक अधिकारी अरुण काजला को नियुक्त किया था, ताकि वह राष्ट्रीय क्रिकेट टीम से समन्वय स्थापित करके टीम को आवश्यक सेवाएँ उपलब्ध करा सकें। उन्होंने हमें कुछ चिंताजनक जानकारी दी: क्रिकेट टीम को ठीक से खाना नहीं मिल रहा था क्योंकि होटल का भोजन बेहद खराब था। उन्होंने यह भी कहा कि ऐसा जानबूझकर किया जा रहा है ताकि टीम खराब प्रदर्शन करे। मैं इसे मज़ाक समझकर हँस दिया, लेकिन अरुण काजला गंभीर थे और उन्होंने साफ कहा, यह मज़ाक नहीं, सच है।

हरारे में रहने वाली भारतीय महिलाएँ हमारे क्रिकेटरों की इस स्थिति के बारे में सुनकर बेहद नाराज़ हो गईं। उन्होंने तुरंत कहा, हम उनकी देखभाल करेंगे।

निर्मला भी उन महिला रसोइयों की राहत टीम में शामिल हो गईं। वह चेन्नई से एक खास इडली बनाने की मशीन लेकर हरारे पहुँची थीं। अगले दिन वह सुबह 4 बजे उठीं और उसने लगभग 100 इडली तैयार कीं एकदम फूली हुई, फूल जैसी मुलायम और बेहद स्वादिष्ट और साथ ही तीखा और लाजवाब सांभर भी बनाया। काजला ने उस कीमती पैकेट को टीम तक पहुँचाने की व्यवस्था की।

आधी इडली बिना खाए वापस आ गई। काजला ने माफी मांगते हुए कहा, टीम को आपकी इडली बहुत पसंद आई, निर्मला। लेकिन वे कितना खा सकते हैं? उनके पास पंजाबी, गुजराती, बंगाली और दक्षिण भारतीय भोजन का ढेर लग गया था खासकर गुजराती महिलाओं ने तो बहुत बड़ी मात्रा में स्वादिष्ट खाना भेजा था। कल जहाँ अकाल जैसी स्थिति थी, आज आप सभी प्यारी महिलाओं की वजह से वहाँ दावत हो गई।

लेकिन उन्होंने निर्मला से वादा किया कि शनिवार को मैं दूसरी महिलाओं से कुछ भी नहीं लूँगा। आप वही मसाला डोसा बनाइएगा जो आप बहुत अच्छे से बनाती हैं। निर्मला इस बात से थोड़ी परेशान हो गईं। लगभग 25 भूखे खिलाड़ियों के लिए मसाला डोसा बनाना कोई आसान काम नहीं था, खासकर जब उसके पास कोई सहायक नहीं था और हरारे में सही सामग्री भी आसानी से उपलब्ध नहीं थी। उसने कहा, नहीं, गुजराती महिलाओं को ही यह अवसर दीजिए।

अक्टूबर 1992 में, जब भारतीय टीम मैचों की एक श्रृंखला खेलने के लिए ज़िम्बाब्वे गई थी, तो खिलाड़ियों को जान-बूझकर खराब खाना परोसा जा रहा था, ताकि वे खराब खेलें।

अंततः उन ऊर्जावान भारतीय महिलाओं और संसाधन-संपन्न काजला की वजह से खाने की समस्या का समाधान हो गया। इसके साथ ही, भारत से हुई शिकायतों और विरोध के बाद होटल के खाने की गुणवत्ता भी बेहतर कर दी गई।

क्रिकेट की बात करें तो भारत-ज़िम्बाब्वे टेस्ट मैच ऐतिहासिक था क्योंकि यह ज़िम्बाब्वे का पहला टेस्ट मैच था। ज़िम्बाब्वे की टीम ने अच्छा प्रदर्शन किया, जबकि भारत उतना प्रभावी नहीं रहा। भारतीय टीम हरारे की ऊँचाई पर खेलने की आदी नहीं थी और खासकर गेंदबाज़ों को काफी कठिनाई हुई। मैच मुख्य रूप से इसलिए ड्रॉ रहा क्योंकि ज़िम्बाब्वे के बल्लेबाज़ बहुत धीमी गति से खेल रहे थे। यहाँ तक कि चार में से तीन पारियाँ भी पूरी नहीं हो पाईं।

एकदिवसीय मैच दिवाली के दिन, रविवार को आयोजित किया गया था। निर्मला ने उदास मन से भारत में होने वाले पारिवारिक दिवाली मिलन को याद किया लेकिन मैं इतनी उत्सुकता में था कि मुझे कोई पुरानी याद नहीं आ रही थी। मैंने उत्साह में कहा, दिवाली मनाने का इससे बेहतर तरीका क्या हो सकता है कि हम एकदिवसीय मैच देखें! पूरा भारतीय समुदाय मैच देखने आया था। इस बार भी भारतीय टीम ने खास चमकदार प्रदर्शन नहीं किया लेकिन फिर भी जीत हासिल कर ली। भारत ने 50 ओवर में लगभग 205 रन बनाए और ज़िम्बाब्वे 16 रन से पीछे रह गया। मैं राहत महसूस कर रहा था क्योंकि मैं भारतीय टीम की हार स्वीकार नहीं कर पाता और न ही वहाँ मौजूद बाकी उत्साही भारतीय दर्शक कर पाते!

हम भारतीय उच्चायोग और एयर इंडिया द्वारा क्रिकेटरों के सम्मान में आयोजित दो सुखद रात्रिभोज के मेहमान थे। वहाँ सबकी पत्नियाँ भी बड़ी संख्या में मौजूद थीं। उच्चायोग के डिनर में पुरुष और महिलाएँ अलग-अलग समूहों में बैठे थे। किसी ने टिप्पणी की, महिलाएँ तो क्रिकेटरों को देखने आई हैं और वे सभी पुरुषों के साथ ही बैठे हैं। कपिल देव ने विनम्रतापूर्वक अपनी प्लेट उठाई और जाकर महिलाओं के साथ बैठ गए। उन्होंने उनसे पूछा कि वे भारत में कहाँ से है, ज़िम्बाब्वे में उनके जीवन के बारे में जाना और हरारे में शुरुआती दिनों में उनकी टीम को भोजन कराने के लिए उनको धन्यवाद दिया। खाना इतना अच्छा था कि हमने तो बहुत ज़्यादा ही खा लिया उन्होंने हँसते हुए कहा।

एयर इंडिया रात्रिभोज के दौरान हमने होटल की लिफ्ट के पास खड़े संजय मांजरेकर को देखा। मैंने तुरंत उनसे बातचीत शुरू कर दी। लिफ्ट से बाहर आने के बाद मैं बेहद खुश था कि मेरी मुलाकात पूरी भारतीय टीम से हो गई और उन्हें लगा कि मैं मांजरेकर का मित्र हूँ। मैंने सभी खिलाड़ियों से हाथ मिलाया और अपने आदर्श खिलाड़ियों तेंदुलकर और कपिल देव से भी बातचीत की। कुछ क्रिकेटरों ने निर्मला से भी बातचीत की और उसकी कांजीवरम साड़ी की तारीफ की जिससे वह बहुत प्रसन्न हुईं।

निर्मला ने कहा, क्रिकेट एक उबाऊ खेल है लेकिन हमारे खिलाड़ी अच्छे इंसान हैं।

लेखक रोटरी क्लब मद्रास साउथ के सदस्य हैं।

खोई हुई ध्वनियों को फिर से लौटाना

जयश्री

तीन साल के कृत भाटिया के लिए अब दुनिया की आवाज़ें कुछ अलग सी लगने लगी हैं। परिवार वालों की हंसी, आस-पास की आवाज़ें और रोज़मर्रा की ज़िंदगी की धुनें-ये वे ध्वनियाँ हैं जिन्हें ज़्यादातर लोग आम बात मान लेते हैं-लेकिन अब ये कृत की विकसित होती दुनिया का हिस्सा बन गई हैं। कृत उन 10 लाभार्थियों में से एक है जिन्हें 'गिफ्ट ऑफ़ साउंड' परियोजना से लाभ मिला है। यह कोक्लियर इम्प्लांट परियोजना रोटरी क्लब मुंबई ब्रेव हार्ट्स (रो ई मंडल 3141) और रोटरी क्लब बनेश्वर (रो ई मंडल 3292) की साझेदारी में ग्लोबल ग्रांट के माध्यम से संचालित की गई।

कृत की माँ ने कहा, कोक्लियर इम्प्लांट प्रोग्राम ने हमारी ज़िंदगी बदल दी है। इसने हमारे बच्चे को सुनने और बोलने का अवसर दिया है। उनकी यह बात इस पहल से लाभान्वित कई परिवारों की भावनाओं को भी व्यक्त करती है।

ये सर्जरियाँ मार्च 2026 में क्रिटिकेयर एशिया हॉस्पिटल में की गईं। इन सर्जरियाँ के लाभार्थियों में 11 महीने के शिशु से लेकर 17 साल के किशोर शामिल थे। इन सभी ने अब मस्विच-ऑन थेरेपीफ का पहला चरण पूरा कर लिया है और अपनी बोलने तथा भाषा संबंधी क्षमताओं के विकास के लिए मऑडिटरी वर्बल थेरेपीफ शुरू कर दी है।

यह परियोजना तब शुरू की गई, जब क्लब के सदस्यों को पता चला कि गरीब बच्चों के लिए कोक्लियर इम्प्लांट सर्जरी तक पहुँच में एक बहुत बड़ी कमी है। पूर्व अध्यक्ष खुज़ेम सकारवाला कहते हैं, हमें इस आवश्यकता की गंभीरता का एहसास हमारे क्लब के सदस्य डॉ संजय हेलाले के माध्यम से हुआ, जिन्हें कोक्लियर इम्प्लांट के मरीज़ों के साथ काम करने का लगभग तीन दशकों का अनुभव है।

क्रिटिकेयर एशिया हॉस्पिटल में ईएनटी और कोक्लियर इम्प्लांट प्रोग्राम के प्रमुख डॉ हेलाले के अनुसार, शुरुआती इलाज बेहद महत्वपूर्ण है। वे बताते हैं, सुनने की क्षमता ही बोलने और भाषा के विकास की नींव है। यदि शुरुआती वर्षों में सुनने की क्षमता में कमी का इलाज न किया जाए, तो इसका बच्चे के संज्ञानात्मक, भावनात्मक और सामाजिक विकास पर गंभीर प्रभाव पड़ सकता है।

जन्म लेने वाले हर 1,000 बच्चों में से लगभग चार को कोक्लियर इम्प्लांट की आवश्यकता होती है, लेकिन फ़िलहाल केवल लगभग पाँच प्रतिशत बच्चों को ही यह सुविधा मिल पाती है। बाकी 95 प्रतिशत

ऊपर: कृत भाटिया अपनी मां और दादी के साथ।

बच्चे अक्सर सुनने और बोलने की क्षमता विकसित किए बिना बड़े होते हैं-विशेषकर तब, जब उनके परिवार इस महँगे इलाज का खर्च नहीं उठा पाते।

किसी प्राइवेट अस्पताल में कोक्लियर इम्प्लांट सर्जरी का खर्च ₹8 से 10 लाख के बीच हो सकता है। क्रिटिकेयर एशिया हॉस्पिटल, जो ईएनटी देखभाल और कोक्लियर इम्प्लांट सर्जरी में अपनी विशेषज्ञता के लिए जाना जाता है, इस रोटरी कार्यक्रम के तहत पूरी प्रक्रिया प्रति मरीज लगभग ₹6 लाख की रियायती दर पर उपलब्ध करता है।

इस पहल में न केवल सर्जरी शामिल है, बल्कि उसके बाद होने वाला व्यापक पुनर्वास भी शामिल है। डॉ हेलाले कहते हैं, सर्जरी तो बस शुरुआत है। असली सफलता सर्जरी के बाद की थेरेपी, लगातार फ़ॉलो-अप और परिवार के सहयोग पर निर्भर करती है। इनके बिना, बच्चा अपनी सुनने और बोलने की क्षमता को पूरी तरह विकसित नहीं कर सकता।

इसलिए इस कार्यक्रम में सर्जरी से पहले और बाद की देखभाल, स्पीच और लैंग्वेज थेरेपी, ऑडिटरी वर्बल थेरेपी (AVT), काउंसलिंग और लंबे समय तक निगरानी शामिल है। पेशेवर पुनर्वास सहायता सुनिश्चित करने के लिए क्लब ने मएजुकेशन ऑडियोलॉजी एंड रिसर्चफ (EAR) के साथ एक एम ओ यू पर हस्ताक्षर किए हैं; यह संस्था सुनने संबंधी समस्याओं वाले बच्चों को शिक्षा और पुनर्वास के लिए समर्पित है। EAR, मुंबई के बाहर रहने वाले लाभार्थियों के लिए ऑनलाइन AVT सेशन भी उपलब्ध कराता है। वयस्कों के लिए एवीटी की प्रक्रिया 3-4 महीने तक चल सकती है, जबकि उन बच्चों के लिए, जिन्होंने अभी बोलना शुरू नहीं किया है, यह अवधि तीन वर्ष तक हो सकती है।

लाभार्थियों का चयन बहुत सावधानी और विस्तृत प्रक्रिया के माध्यम से किया जाता है। जिन बच्चों और वयस्कों में सुनने की क्षमता में कमी का संदेह होता है, उन्हें सबसे पहले ईएनटी विशेषज्ञों या ऑडियोलॉजिस्ट द्वारा रेफर किया जाता है। क्रिटिकेयर अस्पताल में चिकित्सीय जाँच के बाद, अस्पताल का मेडिकल सोशल वर्कर परिवारों की आर्थिक स्थिति का मूल्यांकन करता है; इसके बाद ही इन मामलों की समीक्षा क्लब के सदस्य करते हैं।

सकारवाला कहते हैं, रोटेरियन और एन्स सर्जरी और रिकवरी के दौरान बच्चों से व्यक्तिगत रूप से मिलने जाते हैं। हम चाहते थे कि परिवारों को यह महसूस हो कि इस सफ़र में वे अकेले नहीं हैं। भावनात्मक सहयोग भी उतना ही महत्वपूर्ण है, जितनी आर्थिक सहायता।

इस जीजी परियोजना के तहत, क्लब का लक्ष्य अगले दो वर्षों में 200 कोक्लियर इम्प्लांट सर्जरियाँ पूरी करना है। जागरूकता फैलाना भी इस मिशन का एक अहम हिस्सा बन गया है। दिसंबर 2025 में क्लब ने 'साउंड ऑफ़ म्यूज़िक' नामक एक म्यूज़िकल फ़ंडरेज़र आयोजित किया, जिसमें कोक्लियर इम्प्लांट सहायता की आवश्यकता पर ज़ोर दिया गया। साकारवाला और आदि पोचा द्वारा इस परियोजना पर बनाई गई एक डॉक्यूमेंट्री फ़िल्म ने जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

रोटरी क्लब बॉम्बे बेव्यू, क्वीन्स नेकलेस और मुंबई एलिगेंट ने इस परियोजना में सहयोग दिया है। साकारवाला बताते हैं कि इस कार्यक्रम के लिए एक और जीजी परियोजना लगभग अंतिम चरण में है, जिससे सुनने की समस्या से जूझ रहे और भी बच्चों को सहायता मिल सकेगी।

अन्य जीजी परियोजनाएँ

रोटरी क्लब मुंबई ब्रेव हार्ट्स स्वास्थ्य क्षेत्र में तीन अन्य जीजी परियोजनाओं का संचालन कर रहा है - शिशुओं में रेटिनोपैथी ऑफ़ प्रीमैच्योरिटी (आरओपी) का इलाज, जिसके लिए प्रति बच्चे इलाज का खर्च लगभग ₹35,000 है; बच्चों की हार्ट सर्जरी (सत्य साई संजीवनी सेंटर फ़ॉर चाइल्ड हार्ट केयर में क्लब के लिए लगभग ₹1.75 लाख की रियायती फीस पर); और मासिक धर्म स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम, जिसके तहत महिलाओं और लड़कियों को पुन: उपयोग योग्य सैनिटरी पैक्स वितरित किए जाते हैं।■

नीचे: क्रिटिकेयर एशिया हॉस्पिटल में कॉक्लियर इम्प्लांट के बाद बेबी छायांशी तिवारी (बाएं से) माता-पिता भाग्येश और प्रियंका तिवारी, क्लब अध्यक्ष जीनत हस्ता, संयुक्त सचिव मानेक चित्तलवाला, चिकित्सा निदेशक डॉ संजय हेलाले और क्लब सचिव सुलक्षणा हेरेकर के साथ।

स्कॉटलैंड के रोटेरियन ने दिव्यांगों के लिए खेल के उपकरण उपलब्ध कराए

सैम मुर्रे

स्कॉटलैंड के एबरडीन शहर को उसका पहला व्हीलचेयर-सुलभ झूला और ट्रैम्पोलिन मिला, जो रोटरी क्लब एबरडीन बोन अकॉर्ड, रो ई मंडल 1010 स्कॉटलैंड के प्रयासों से संभव हुआ।

यह सब 2024 के वसंत में शुरू हुआ, जब क्लब के एक सदस्य ने बताया कि उनकी व्हीलचेयर पर निर्भर पोती को झूले पर झूलना बहुत पसंद है; लेकिन हाल ही में लगाया गया सार्वजनिक व्हीलचेयर-झूला उनके घर से लगभग 19 मील दूर एक अन्य शहर में स्थित था।

हमने इस बारे में कुछ करने का फ़ैसला किया, इसलिए हमारे क्लब ने इस बात की योजना बनाना शुरू किया कि एबरडीन में एक उपयुक्त झूला खरीदने और स्थापित करने के लिए ज़रूरी फ़ंड सबसे बेहतर तरीके से कैसे जुटाया जाए। यह तय किया गया कि शारीरिक रूप से दिव्यांग और सक्षम, दोनों प्रकार के लोगों के लिए झूले लगाए जाएँ, ताकि उनके साथी, दोस्त या देखभाल करने वाले भी झूले का आनंद ले सकें।

यह एक महत्वपूर्ण विचार था, क्योंकि अक्सर ऐसी बहुत कम गतिविधियाँ होती हैं जिन्हें व्हीलचेयर पर निर्भर व्यक्ति और सक्षम व्यक्ति साथ मिलकर कर सकते हैं।

अपने शोध के दौरान हमें पता चला कि हमारे क्षेत्र में एनएचएस द्वारा 9,000 से अधिक व्हीलचेयर उपयोगकर्ताओं को सहायता प्रदान की जाती है। चूंकि यह उपकरण वयस्कों के लिए भी उपयुक्त हैं, इसलिए इससे स्थानीय उपयोगकर्ताओं का एक बड़ा आधार तैयार हुआ है और यह इस क्षेत्र में आने वाले आगंतुकों के लिए भी एक महत्वपूर्ण सुविधा साबित होगा।

हमारे प्रयासों को प्रेरित करने वाली एक घटना 33 वर्षीय एक महिला से जुड़ी थी, जो व्हीलचेयर पर निर्भर

डूथी पार्क में व्हीलचेयर पर बैठी एक लड़की झूले का मज़ा लेते हुए।

पार्क में व्हीलचेयर झूले का एक सेट।

उद्घाटन समारोह में क्लब के सदस्य।

थी; उसने तब तक झूले पर झूलने का आनंद कभी नहीं लिया था, जब तक कि उसके घर के पास एक व्हीलचेयर-अनुकूल झूला स्थापित नहीं किया गया।

एबरडीन सिटी काउंसिल के साथ हुई चर्चाओं के बाद, जो उस समय ड्युथी पार्क में खेल के मैदान का नवीनीकरण कर रही थी, उन्होंने यह सहमति दी कि यदि हम आवश्यक :24,000 पौंडस् की राशि जुटा सकें, तो वे व्हीलचेयर-अनुकूल झूला भी शामिल करेंगे।

हमारे धन-संग्रह अभियान और जागरूकता पहल 'ऑलप्ले' के माध्यम से सार्वजनिक दान, अन्य रोटरी क्लबों के योगदान, स्थानीय संगठनों और कंपनियों से प्राप्त दान तथा विभिन्न फंडिंग संस्थाओं से मिले अनुदानों के ज़रिए कुल :43,000 पौंडस् की उल्लेखनीय राशि जुटाई गई। इन अनुदानों में एनएचएस ग्रैम्पियन चैरिटी, द स्टैफर्ड ट्रस्ट और यूके सरकार का प्रॉस्पेरिटी फंड शामिल हैं।

हमारे क्लब की चैरिटेबल ट्रस्ट स्थिति ने इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जुटाई गई राशि की मदद से न केवल आवश्यक व्हीलचेयर-अनुकूल झूला खरीदा गया, बल्कि एक सुलभ ट्रैम्पोलिन भी स्थापित किया गया। ये दोनों सुविधाएँ अब पूरी तरह कार्यशील हैं।

दिन के अंत में, हम उन सभी लोगों की उदारता देखकर हैरान रह गए, जिन्होंने हमारे लक्ष्य तक पहुँचने और उसे पार करने में हमारी मदद की। बड़े अनुदानों से लेकर स्कूल के बच्चों द्वारा आयोजित बेक सेल और एक छोटे लड़के द्वारा जूते साफ़ करने तक, हमारे समुदाय ने इस चुनौती को स्वीकार किया और इसे सफलतापूर्वक पूरा किया।

हमारा सबसे बड़ा पुरस्कार उन बच्चों के चेहरों पर मुस्कान देखना रहा है, जब वे झूले पर झूलने और हवा में उछलने के आनंद का अनुभव करते हैं।

रोटरी का उद्देश्य समुदाय की भलाई के लिए काम करना है, और यह परियोजना इसी का एक बेहतरीन उदाहरण है।

शहर के ड्युथी पार्क में आयोजित एक संक्षिप्त समारोह में क्लब के सदस्यों के साथ आमंत्रित अतिथि भी शामिल हुए, जहाँ डिस्ट्रिक्ट गवर्नर ग्राहम लीथ ने औपचारिक रूप से खेल उपकरण एबरडीन सिटी काउंसिल के पर्यावरण प्रबंधक स्टीवन शॉ को सौंपे।

लेखक रोटरी क्लब एबरडीन बॉन अकॉर्ड, रो ई मंडल 1010 के पूर्व अध्यक्ष हैं।

सेवा में निहित रजत जयंती

जयश्री

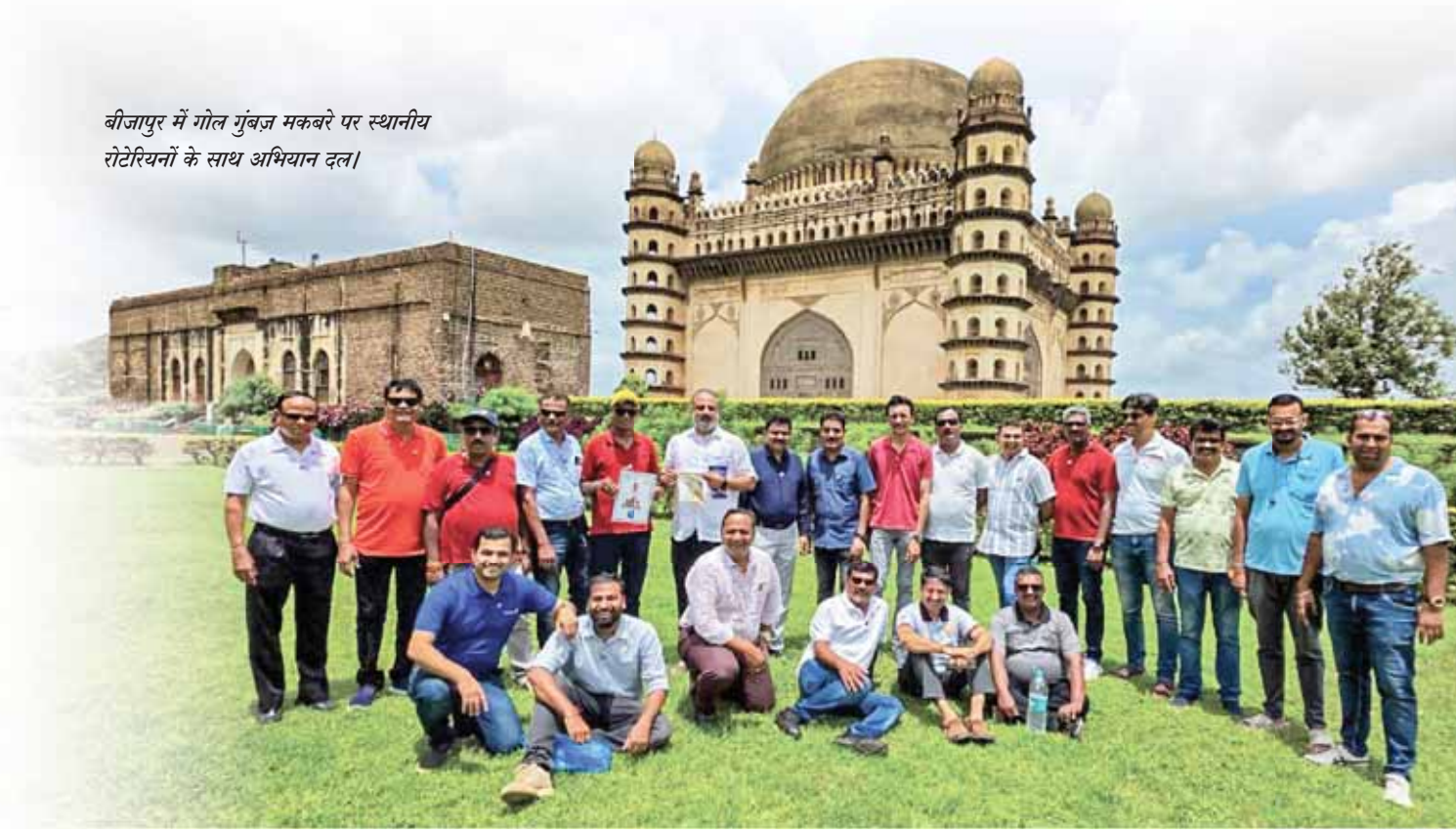

बीजापुर में गोल गुंबज़ मकबरे पर स्थानीय रोटेरियनों के साथ अभियान दल।

कर्नाटक का सुरम्य हिल स्टेशन, चिक्कमगलुरु, अब एक प्रमुख बाज़ार में स्थापित शानदार 'रोटरी टावर क्लॉक' और तीन एकड़ में फैला एक नए श्मशान स्थल के नवीनीकरण जैसी दो उल्लेखनीय परियोजनाओं से समृद्ध हुआ है। ये दोनों परियोजनाएँ रोटरी क्लब चिकमगलुरु-कॉफ़ीलैंड, रो ई मंडल 3182 के रजत जयंती समारोहों के उपलक्ष्य में पूरी की गई हैं।

25 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में 2,300 किमी का एक उल्लेखनीय अभियान भी आयोजित किया गया, जिसमें क्लब के 25 सदस्यों ने छह कारों के माध्यम से भाग लिया। डीजी के. पलाक्षा द्वारा रवाना की गई यह रैली पाँच दिनों में पुणे तक जाकर वापस पूरी की गई। क्लब के अध्यक्ष नागेश केंजिगे ने बताया, इस यात्रा के दौरान हमने पाँच मंडलों

क्लब अध्यक्ष नागेश केंजिगे (दाएँ से पाँचवें स्थान पर), क्लब सदस्यों के साथ मिलकर, चिक्कमगलुरु के सरकारी प्रसूति अस्पताल में एक महिला को शिशु गद्दा और किट भेंट करते हुए।

ऊपर से: बाज़ार में लगाई गई एक टावर घड़ी; कार अभियान के दौरान रास्ते में सवारों को वितरित किए गए हेलमेट।

के 25 रोटरी क्लबों का दौरा किया और उनके साथ झंडों का आदान-प्रदान किया।

यात्रा के दौरान पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए रास्ते में 10,000 से अधिक सीडबॉल्स वितरित किए गए, जबकि सड़क सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए युवा सवारों को हेलमेट बांटे गए। कई ठहराव स्थलों पर टीम ने जागरूकता अभियान भी चलाए, जिनमें पर्यावरण की संरक्षण और सुरक्षित सवारी के नियमों का पालन करने के महत्व पर ज़ोर दिया गया।

जुबली वर्ष के दौरान शुरू की गई सेवा पहलों में पूरे शहर में 15,000 पौधे लगाना, एक सार्वजनिक पार्क का नवीनीकरण करना और एक महीने तक चलने वाला विशाल सफ़ाई अभियान आयोजित करना शामिल है। क्लब ने 75 साल पुराने एक सरकारी स्कूल को 'हैप्पी स्कूल' में भी परिवर्तित किया; इसके लिए स्कूल को फ़र्नीचर, बिजली के उपकरण, नया रंग-रोगन, स्मार्ट क्लासरूम की सुविधाएँ, वॉटर प्यूरीफ़ायर, हाथ धोने के स्टेशन और शौचालय ब्लॉक उपलब्ध कराए गए। छात्रों को यूनिफ़ॉर्म, जूते-चप्पल, पानी की बोतलें और स्टेशनरी किट भी प्रदान की गईं। सब्ज़ी बेचने वालों और सड़क किनारे भोजन बेचने वालों को बड़ी छतरियाँ वितरित की गईं।

केंजिगे ने बताया, हमने 80 साल पुराने सरकारी मातृत्व अस्पताल में एक रोटरी थीम पार्क भी विकसित किया है। इस पार्क में सीमेंट की बेंचें, बच्चों के खेलने के उपकरण और एक पब्लिक अनाउंसमेंट सिस्टम है, जिससे मरीज़ों की देखभाल करने वालों के साथ संवाद करने में सुविधा होती है। क्लब ने टीआरएफ को ₹6 लाख का योगदान भी दिया।

क्लब की यात्रा को याद करते हुए, पिछले 17 वर्षों से क्लब से जुड़े नागेश केंजिगे ने 2001 के चार्टर वर्ष की दो परियोजनाओं को विशेष रूप से यादगार बताया: स्थानीय पुलिस स्टेशन के लिए एक जीप प्रायोजित करना और चिक्कमगलुरु में महिलाओं के लिए 50 शौचालयों का निर्माण करना। उस समय एस. विजय राज क्लब के अध्यक्ष थे।

क्लब ने चिक्कमगलुरु इंस्टीट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंसेज में दो इंटरेक्ट क्लब और एक रोटरेक्ट क्लब को भी प्रायोजित किया है। हाल ही में, एम्बर वैली रेजिडेंशियल स्कूल के इंटरेक्ट क्लब के सदस्यों ने कैंपस को सुंदर बनाने की एक पहल के ज़रिए एक सरकारी स्कूल में रंग और नई ऊर्जा का संचार किया। 152 सदस्यों वाला यह क्लब, समाज सेवा के कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेता है। इंटरेक्ट क्लब के सदस्य नियमित रूप से अनाथालयों, वृद्धाश्रमों और दृष्टिबाधित लोगों के घरों का दौरा करते हैं, वहाँ रहने वालों के साथ समय बिताते हैं और उनका उत्साह बढ़ाने के लिए अलग-अलग तरह की गतिविधियाँ आयोजित करते हैं।

रोटरी क्लब चिकमगलूर-कॉफीलैंड में कुल 67 सदस्य हैं, जिनमें चार महिला सदस्य भी शामिल हैं। ■

ADVT.

Rotary

CREATE LASTING IMPACT

BK AD GIFTS - INDIA

AUTHORISED LICENSEE ROTARY INTERNATIONAL

Off :130 - C Kottur Road, Palayamkottai,
Tirunelveli, Tamilnadu. 627 002, INDIA.

www.bkadgifts.com

Sales Contact

94431 57569,
94422 75691, 82201 84868

netparkkannan@gmail.com
tkannan491@gmail.com

Rotary OFFICIAL LICENSEE

Special Collar for District Governor / President name along with all PDGs / Past President names

We Supply the following club materials : -

Rotary, Rotaract, Interact, RCC, Innerwheels, RMB etc.,

Available Products :

President collar, Secretary collar, Attandance & Club Record, Gong, Gavel, Sergeant-at-arms Accessories, New Member kit, Board of Officers pin, T-shirt, Shirt, Modi Coat, Blazer, Fancy pin, Hanging pins, Club Flag, Cap, Pen, Table Cross flag, Belt, Plastic pin, Podium banner, Name badges etc.,

Corporate Gift Articles

Vijay Calendars & Gifts

Products

- Wall clock, Table clock, Table clock with penstand,
- MDF Key hanger,
- Wrist watch, Keychain,
- Desk organisers, Paper Weight,
- Plastic mobile stand,
- MDF Photo frame,
- New year Diary & Calendar.

आपके गवर्नर्स से मिलिए

वी मुत्तुकुमारन

विनोद सरावगी
परिधान उद्योग
रोटरी क्लब मद्रास सेंट्रल
रो ई मंडल 3234

थैलेसीमिया शिविरों पर विशेष ध्यान

यह सर्जन थैलेसीमिया की रोकथाम के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए बेहद समर्पित हैं। ''यह हमारी प्रमुख परियोजना है। हमने 300 से अधिक मेडिकल और रक्त परीक्षण शिविर (जीजी: 35,806 डॉलर) आयोजित किए हैं, जिनमें लगभग 10 लाख लोगों की जाँच की गई है,'' और इस रोटरी वर्ष के अंत तक हम 100 और शिविर आयोजित करेंगे। रक्त परीक्षण अभियान के लिए एक पैथोलॉजी वैन (जीजी: 45,000 डॉलर) को भी रवाना किया गया।

150 क्लबों और लगभग 4,000 रोटेरियन के साथ, उनका सदस्यता विस्तार का लक्ष्य 4,500 का आंकड़ा पार करना है। अब तक, 10 नए क्लब स्थापित किए हैं, जिनमें तीन सैटेलाइट क्लब भी शामिल हैं। सर्वाइकल कैंसर जागरूकता और टीकाकरण शिविरों के माध्यम से 5,000 से अधिक स्कूली और कॉलेज की लड़कियों को टीका लगाया गया; ''हम 30 जून तक 550 और लड़कियों तक पहुँचेंगे।''

क्लबों ने हेडमास्टर्स एंड हेडमिस्ट्रेस एसोसिएशन के साथ साझेदारी की है, जो बंगाल के 1,000 से अधिक सरकारी स्कूलों का संचालन करती है। साथ ही, थैलेसीमिया और रक्त परीक्षण शिविरों के लिए 1,000 मैरिज रजिस्ट्रार और डायग्नोस्टिक केंद्रों के साथ भी सहयोग स्थापित किया गया है। पुरुलिया मंडल के गोद लिए हुए गांव धस्का में, क्लब के निधि से कई परियोजनाएँ (अब तक: ₹20 लाख) संचालित की जा रहे हैं।

टाटा ग्रुप की एक कंपनी की सहायता से, हमने सरकारी स्कूलों को पीने का पानी उपलब्ध कराया (जीजी: 36,000 डॉलर)। टीआरएफ योगदान के लिए, उनका लक्ष्य 200,000 डॉलर है। उन्होंने 2006 में रोटरी से जुड़कर 12 एम्बुलेंसों के संचालन के माध्यम से मप्री-हॉस्पिटल ट्रॉमा केयर सर्विसफ की शुरुआत की, जिससे कोलकाता में 2,500 से अधिक दुर्घटना पीड़ितों को लाभ मिला। वे मुस्कुराते हुए कहते हैं, रोटरी गरीबों की सेवा के लिए एक 'बहुत बड़ा मंच' प्रदान करती है, जहाँ कोई भी अनगिनत लोगों तक पहुँच सकता है।

रामेंदु होमचौधरी
ऑर्थोपेडिक सर्जन
रोटरी क्लब कलकत्ता सन सिटी
रो ई मंडल 3291

स्थायी प्रभाव के लिए जीवन को छूना

विनोद सारोगी कहते हैं कि रोटरी वंचितों की सेवा करने और उनके जीवन में स्थायी परिवर्तन लाने का अवसर प्रदान करती है। 84 क्लबों और 3,500 से अधिक रोटेरियन के साथ, उन्हें 800 सदस्यों की शुद्ध वृद्धि और 10 नए क्लबों की स्थापना का पूरा भरोसा है।

तमिलनाडु भर के विभिन्न सरकारी और चैरिटी अस्पतालों में 100 डायलिसिस मशीनें स्थापित की जा रही हैं (कई जीजी: ₹8 करोड़); रोटरी क्लब मद्रास ईस्ट द्वारा अपोलो अस्पतालों में 750 जन्मजात हृदय सर्जरी के लिए सहायता (सी एस आर अनुदान: ₹3 करोड़); 15,000 स्कूली और कॉलेज की छात्राओं तक पहुँचने वाला एक व्यापक एचपीवी टीकाकरण अभियान (कई जीजी: ₹4 करोड़); 50 'हैप्पी स्कूल' (जीजी+सी एस आर निधि: ₹3 करोड़), जिनसे 15,000 विद्यार्थियों को लाभ मिल रहा है; तथा अकेली महिलाओं को आजीविका कमाने में सहायता देने के लिए 150 'पिंक ऑटो' का वितरण (जीजी+सी एस आर निधि: 2 करोड़)। ये परियोजनाएँ रो ई मंडल 3234 के क्लबों की प्रमुख उपलब्धियों में शामिल हैं।

एक प्रमुख फ्लैगशिप परियोजना के तहत अब तक 125 आदिवासी परिवारों के लिए घर बनाए जा चुके हैं (जीजी+सी एस आर निधि: ₹8 करोड़)। टीआरएफ-योगदान के लिए उनका लक्ष्य 2.5 मिलियन अमेरिकी डॉलर है।

सरावगी दंपति ने 'एकेएस अध्यक्ष सर्कल' के सदस्य बनने का संकल्प लिया है। 1982 में रोटरी में शामिल होने के बाद, डीजी दोस्त बनाने और ज़रूरतमंदों की सहायता करने से बेहद खुश हैं। ■

रोटरी क्लब कुंभकोणम के स्वर्णिम 75 वर्ष

वी मुत्तुकुमारन

रोटरी क्लब कुंभकोणम के प्लैटिनम जुबिली समारोह में रो ई निदेशक एम मुरुगानन्दम ने पाँच सेवा परियोजनाओं का शुभारंभ किया। उन्होंने क्लब के सभी 75 पूर्व अध्यक्षों की सराहना करते हुए कहा कि उन्हीं के प्रयासों से यह रोटरी क्लब आज इस ऊँचाई तक पहुँचा है। हमारा क्लब रो ई मंडल 2981 का दूसरा सबसे पुराना और सबसे बड़ा क्लब है जिसमें 155 सदस्य हैं। लोगों के कल्याण के लिए हमने कई स्थायी परियोजनाएँ की हैं, पिछले 15 वर्षों से इस क्लब के सदस्य, एस बालाजी कहते है।

उपहार वितरण, संपत्ति हस्तांतरण, रोटरी केंद्र का उन्नयन और नेत्र शल्य चिकित्सा जैसी नई परियोजनाओं की श्रृंखला को लेकर अत्यंत प्रसन्न क्लब अध्यक्ष वी सी भास्करन ने कहा, रोटरी, कुंभकोणम और उसके आसपास के लोगों के लिए अत्यंत लाभकारी पहल करने के लिए जानी जाती है। कुंभकोणम एक मंदिरों का नगर है, जो दक्षिण तमिलनाडु के तंजावुर जिले में स्थित है और अपने विरासती स्थलों के माध्यम से तमिल संस्कृति की झलक प्रस्तुत करता है। मुरुगानन्दम और डीजी जे लियोन ने 75 ग्रामीण महिलाओं को बछड़ों सहित दूध देने वाली गायें (₹45 लाख) प्रदान कीं, ताकि वे डेयरी खेती के माध्यम से स्थायी आजीविका कमा सकें, वह कहते है। इसके बाद क्लब के व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र तथा दो निजी कौशल विकास केंद्रों में एक माह का प्रशिक्षण पूरा करने वाली 75 युवतियों, विधवाओं और गरीब महिलाओं को सिलाई मशीनें वितरित की गईं।

सितंबर 2025 में अपने निधन से पहले, भास्करन के दादाजी एस पी थेवर (75), जो एक जमींदार थे, ने अपनी ₹1.25 करोड़ मूल्य की व्यावसायिक इमारत को क्लब के नाम कर दिया था। भव्य समारोह के दौरान, हमें इस 2,500 वर्गफुट की इमारत के संपत्ति दस्तावेज प्राप्त हुए। इस भवन में एक सुपरमार्केट है, जिससे हमें हर महीने ₹20,000 का किराया प्राप्त होगा।

इसके अलावा, क्लब ने अपने 10 वर्ष पुराने रोटरी ब्लड बैंक के किराए के परिसर को ₹1.5 करोड़ में खरीद लिया है और उसका बिक्री विलेख तथा संबंधित दस्तावेज हमें समारोह में प्राप्त हुए, क्लब अध्यक्ष ने बताया। मुरुगानन्दम ने 60,000 डॉलर मूल्य के वैश्विक अनुदान के माध्यम से एक नेत्र शल्य चिकित्सा परियोजना का शुभारंभ किया जो ज्योति आई केयर सेंटर, पुदुचेरी और महात्मा आई अस्पताल, त्रिची के सहयोग से संचालित की जा रही है। रोटरी ऑरेंज विज़न केंद्रों में चिन्हित 3,000 मरीजों के लिए मोतियाबिंद सहित अन्य नेत्र रोगों की सर्जरी की जाएगी। साझेदार अस्पताल भी इस शल्य चिकित्सा परियोजना में समान राशि का निवेश करेंगे।

रो ई मंडल 2981 के एजी एस वेंकटेशन ने जरूरतमंद परिवारों को दूध देने वाली गायें और बछड़े भेंट किए। उनके पीछे रोटरी क्लब कुंभकोणम के अध्यक्ष वी सी बास्करन भी चित्र में शामिल हैं।

रोटरी भवन

स्थापना के बाद से रोटरी ब्लड बैंक द्वारा लगभग 40,000 यूनिट रक्त एकत्रित, वर्गीकृत, संसाधित और स्थानीय अस्पतालों तथा क्लीनिकों तक पहुँचाया गया है। हर वर्ष लगभग 2,500 दाता इस केंद्र में रक्तदान कर सकते हैं। यह ब्लड सेंटर कुंभकोणम का एक लोकप्रिय स्थल बन चुका है, पीडीजी बालाजी कहते है। उन्होंने बताया कि इसकी स्थापना तत्कालीन क्लब अध्यक्ष मोहम्मद जियाउद्दीन और उनकी टीम के प्रयासों से स्थानीय परोपकारियों तथा सीएसआर निधि के सहयोग से की गई थी, जिसकी कुल लागत ₹1.25 करोड़ थी।

2019 में नगर निगम की एक इमारत में पाँच मशीनों वाला एक रोटरी डायलिसिस केंद्र (वैश्विक अनुदान: 35,000 अमेरिकी डॉलर) स्थापित किया गया। हमने इस केंद्र के संयुक्त संचालन के लिए सिटी यूनियन बैंक और नगर निगम के साथ एक समझौता ज्ञापन किया था, जिसमें प्रति सत्र केवल ₹700-750 की नाममात्र राशि ली जाती है। अब तक 5,000 किडनी रोगियों को इसका लाभ मिल चुका है, बालाजी कहते है। उन्होंने कहा कि इस केंद्र का ₹1.5 लाख का मासिक खर्च बैंक द्वारा वहन किया जाता है और हर महीने लगभग 250 मरीज यहाँ उपचार प्राप्त करते हैं।

रो ई निदेशक एम मुरुगानंदम का प्लैटिनम जुबली समारोह में स्मृति चिन्ह देकर स्वागत किया गया। बाएं से: समारोह अध्यक्ष पी राधाकृष्णन, क्लब अध्यक्ष बास्करन, पीडीजी एस बालाजी और पी एस रमेश बाबू, रो ई मंडल 2981 के डीजी जे लियोन और पीडीजी आर पलनिवेलु।

रो ई मंडल 2981 में चार वर्ष पहले स्थापित किए गए 16 नेत्र केंद्रों में से रोटरी ऑरेंज विज़न सेंटर (वैश्विक अनुदान: 3,00,000 डॉलर) एक है। कुंभकोणम विज़न सेंटर में हम हर महीने 100 निःशुल्क मोतियाबिंद सर्जरियाँ करते हैं और 1,500 मरीजों की जाँच एवं निदान करते हैं।

क्लब की कुछ प्रतिष्ठित परियोजनाओं और पहलों को याद करते हुए, डीजी जे लियॉन ने इस ऐतिहासिक समारोह में कहा: रोटरी क्लब कुंभकोणम ने रो ई मंडल 2981 के अन्य क्लबों के लिए एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है। उन्होंने विविध प्रकार के कार्यक्रमों के साथ-साथ दीर्घकालिक और स्थायी परियोजनाएँ भी संचालित की हैं, जिन्होंने लोगों के बीच रोटरी की बेहतर छवि बनाई है। इस अवसर पर रो ई निदेशक द्वारा 30 पूर्व अध्यक्षों का सम्मान किया गया। रोटरी वर्ष 2025-26 में क्लब ने ₹5 करोड़ मूल्य की सेवा परियोजनाएँ संचालित की हैं। ■

किशोर गृहों को मिली राहत

टीम रोटरी न्यूज़

जैसे-जैसे हैदराबाद में गर्मियों का तापमान 42 डिग्री सेल्सियस से ऊपर पहुँचा, पुराने सैदाबाद में लड़कों के लिए बने सरकारी किशोर और ऑब्ज़र्वेशन होम में रहने वाले बच्चों का रोज़मर्रा का जीवन और भी मुश्किल होता गया। इस केंद्र में 8 से 18 साल की उम्र के लगभग 110 लड़के रहते हैं; इनमें से कई परित्याग, गरीबी और उपेक्षा जैसे संवेदनशील और कठिन परिस्थितियों से आए हैं।

रोटरी क्लब बंजारा हिल्स हैदराबाद, रो ई मंडल 3150 ने स्पर्श हॉस्पिस के सहयोग से, 'प्रोजेक्ट हेल्पिंग हैंड्स' पहल के तहत 10 एयर कूलर और एक हॉरिजॉन्टल डीप फ्रीज़र दान किए। प्रोजेक्ट संपर्क दुर्गा प्रसाद मदासु का कहना है कि यह पहल गर्मी के चरम मौसम के दौरान बच्चों के आराम और स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए की गई थी। एयर कूलर आवासीय हिस्सों में लगाए गए, जबकि फ्रीज़र भोजन और आवश्यक सामग्री को सुरक्षित रखने में मदद करेगा।

बाएँ से: DG राम प्रसाद, क्लब अध्यक्ष जी नीरजा और ए जी दुर्गा प्रसाद मदासु, सुविधाओं के उद्घाटन के अवसर पर।

यह पहल लड़कियों के लिए सरकारी किशोर गृह तक भी विस्तारित हुई, जहाँ क्लब ने एक जूट लूम मशीन दान की; इसका उद्देश्य 7 से 18 वर्ष की आयु की लड़कियों के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण और कौशल विकास में सहायता प्रदान करना है। ■

मुझे गाउट से कैसे राहत मिली

राज खूबलाल

मैंने डॉ गीता मथाई द्वारा लिखित गाउट पर आपके हालिया लेख *(अंडरस्टैंडिंग गाउट, रोटरी न्यूज़,* अप्रैल 2026) बहुत रुचि के साथ पढ़ा। यह लेख मुझसे केवल एक चिकित्सकीय पर्यवेक्षक के रूप में ही नहीं, बल्कि उस व्यक्ति के रूप में ही गहराई से जुड़ गया, जिसने इस बीमारी की कठिन वास्तविकता को स्वयं अनुभव किया है।

लगभग 10 वर्षों तक मैं गाउट से पीड़ित रहा। वर्ष 2016 तक इसके दौरे लगभग हर हफ़्ते पड़ने लगे थे, और कई बार तो चलना भी एक चुनौती बन गया था। मैंने कई विशेषज्ञों से सलाह ली और अलग-अलग इलाज (मॉरीशस और दक्षिण अफ्रीका में) भी आज़माए, लेकिन राहत हमेशा केवल कुछ समय के लिए ही मिलती थी।

शुरुआत में, मुझे लंबे समय तक यूरिक एसिड को नियंत्रित रखने के लिए एलोप्यूरिनॉल दी गई थी। जब अचानक से तेज़ दर्द उठता था, तो मेरा इलाज सूजन कम करने वाली दवाओं से किया जाता था-जिनमें कॉर्टिसोन और कोल्चिसीन जैसी दवाएँ शामिल थीं। और जब दर्द बहुत ज़्यादा और असहनीय हो जाता था, तब डॉक्टरों को इंजेक्शन लगाने पड़ते थे-आमतौर पर कॉर्टिकोस्टेरॉयड और शक्तिशाली सूजन-रोधी दवा के संयोजन के रूप में। इससे मुझे दर्द से राहत तो मिल जाती थी, लेकिन यह उसके दोबारा होने से रोक नहीं पाता था।

2018 में, एक स्थायी समाधान खोजने के संकल्प के साथ, मैं व्यापक चिकित्सीय जाँच और उपचार के लिए भारत आया। मैंने कई तरह की जाँचें करवाईं, जिनमें मेरी किडनी, लिवर और यहाँ तक कि हड्डियों की जाँच भी शामिल थी, ताकि यह पता लगाया जा सके कि कहीं कोई स्थायी नुकसान तो नहीं हुआ है। वह यात्रा मेरे जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुई।

उपचार के बाद गोल्डन टेम्पल की अपनी यात्रा मुझे आज भी याद है। मैं विशेष रूप से धार्मिक नहीं हूँ, लेकिन उस दिन, जब मैंने दिसंबर की कड़कड़ाती ठंड में अपने पैर ठंडे पानी में डुबोए, तो मुझे एक ऐसी राहत और शांति का अनुभव हुआ जिसे शब्दों में बयान करना मुश्किल है। जब मैं अपने पैर ठंडे पानी में डाले वहीं बैठा था, तो मुझे भजनों की गूंज सुनाई दे रही थी-संभवतः वे *गुरु ग्रंथ साहिब* की पवित्र पंक्तियाँ थीं जो मंदिर के भीतर से आ रही थीं; वहीं, मेरी पत्नी और बहन नियमित आरती के लिए भीतर गई हुई थीं। वह एक ऐसा क्षण था, जिसने अपनी शांत गहराई में लगभग किसी चमत्कार जैसा अनुभव कराया।

उस समय, मॉरीशस या दक्षिणी अफ्रीकी क्षेत्र में फेबुक्सोस्टैट दवा उपलब्ध नहीं थी। भारत में मुझे यह दवा लिखकर दी गई और यही मेरे लिए सबसे प्रभावी उपचार साबित हुई। करीब दो वर्षों तक मुझे इसे मुंबई से मँगवाना पड़ता था, उसके बाद यह दवा अंततः स्थानीय स्तर पर उपलब्ध होने लगी।

आज, लगभग आठ साल बाद, मैं कृतज्ञता के साथ यह कह सकता हूँ कि मुझे गाउट का एक भी दौरा नहीं पड़ा है। साप्ताहिक कष्ट से लेकर पूर्ण मुक्ति तक, यह परिवर्तन बेहद गहरा रहा है। मैंने अपने आहार और जीवनशैली में महत्वपूर्ण बदलाव किए, और मेरा मानना है कि इनका मेरे ठीक होने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ये परिवर्तन जीवनशैली में संशोधन संबंधी डॉ. मथाई की सलाह के अनुरूप हैं (पृष्ठ 77)। अब मैं केवल कभी-कभार ही दवा लेता हूं, यह इस बात का संकेत है कि मेरी स्थिति में कितना सुधार हुआ है।

नामीबिया में अपनी पोस्टिंग से मॉरीशस लौटने के बाद, मैंने जीवन जीने का एक सरल तरीका अपनाया। वर्ष 2000 में मैं रोटरी क्लब में शामिल हुआ, जिसने सेवा और मानवीय संबंधों का एक नया अध्याय खोला। मैं साधारण भोजन करता हूं, और अपना ताजा जूस (अनानास, सुनहरा सेब, अजवाइन, ककड़ी और अदरक) स्वयं तैयार करता हूं, साथ ही संगीत और साहित्य का आनंद लेना पसंद है, और कभी-कभी स्थानीय प्रेस में लेख भी लिखता हूं। समय के साथ, शायद मैं इस सच्चाई की और अधिक सराहना करने लगा हूं कि, अंततः, सबसे सरल जीवन ही सबसे स्थायी रूप से सबसे खुशहाल होता है।

मैं अपना यह अनुभव इसलिए साझा कर रहा हूँ ताकि उन लोगों को आशा मिल सके जो गाउट से संघर्ष कर रहे हैं, क्योंकि मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि यह बीमारी कितनी पीड़ा और कठिनाइयाँ ला सकती है। सही उपचार, दृढ़ संकल्प और जीवनशैली में आवश्यक बदलावों के साथ, इस पर नियंत्रण पाना और दर्द-मुक्त जीवन जीना संभव है।

लेखक रोटरी क्लब रोज़ बेले, मॉरीशस, रो ई मंडल 9220 के सदस्य हैं।

Rotary PEOPLE OF ACTION

महिलाओं के लिए कंगारू बेबी बैग

टीम रोटरी न्यूज़

वन्यजीवन से प्रेरणा लेते हुए, रोटरी क्लब शिमला, रो ई मंडल 3080 ने कंगारू-जैसे बेबी कैरी बैग डिज़ाइन किए हैं, जिनकी मदद से कामकाजी महिलाओं या शारीरिक रूप से मेहनत वाले कार्यों में लगी महिलाओं को काम के दौरान अपने शिशुओं को अपने पास रखने में सुविधा मिलती है। वास्तव में, क्लब ने अस्पताल-आधारित नवजात शिशु देखभाल की एक तकनीक को कामकाजी माताओं के लिए एक व्यावहारिक समाधान में बदल दिया है।

यह बेबी कैरी बैग कंगारू-मदर केयर के सिद्धांतों पर आधारित है, जो समय से पहले जन्मे और कम वजन वाले शिशुओं की देखभाल के लिए डब्ल्यूएचओ द्वारा अनुशंसित एक पद्धति है। इसमें माँ और नवजात शिशु के बीच त्वचा से त्वचा के संपर्क बनाए रखने पर विशेष ज़ोर दिया जाता है। क्लब अध्यक्ष करण बाम्बा कहते हैं, कई महिलाएँ अक्सर अपने बच्चों को पीठ पर लेकर काम करती हैं या काम के दौरान उन्हें बिना देखरेख के छोड़ देती हैं। ये नए कंगारू-शैली बैग माताओं को अपने बच्चों को सुरक्षित रूप से अपनी छाती से लगाकर रखने की सुविधा देते हैं, जिससे वे निर्माण स्थलों और अन्य श्रम-प्रधान कार्यों के दौरान भी अपना काम जारी रख सकती हैं।

महिलाएँ अपने बच्चों को कंगारू बैग में लिए हुए।

डीजी रवि प्रकाश, जिन्होंने इस परियोजना का उद्घाटन किया, ने क्लब के इस प्रयास की सराहना करते हुए कहा कि यह पहल विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त स्वास्थ्य सेवा पद्धति को सामुदायिक स्तर पर लेकर आई हैं। इस लॉन्च कार्यक्रम में 15 बैग वितरित किए गए, और क्लब की योजना है कि वर्ष के अंत तक ऐसे 100 बैग उपलब्ध कराए जाएँ।

बाम्बा आगे कहते हैं, यह परियोजना मातृ स्वास्थ्य से जुड़ी चिंताओं और उन आर्थिक रूप से कमज़ोर महिलाओं पर पड़ने वाले दबावों को उजागर करती है, जो बच्चे को जन्म देने के कुछ ही समय बाद काम पर लौट आती हैं - और जिनके पास अक्सर अपने शिशुओं की सुरक्षित देखभाल के लिए बहुत सीमित विकल्प होते हैं।

अस्पताल को डायग्नोस्टिक सुविधा में मिला बढ़ावा

क्लब ने कमला नेहरू अस्पताल में स्वास्थ्य सुविधाओं को बेहतर के उद्देश्य से ₹48 लाख की एक अल्ट्रासाउंड मशीन का उद्घाटन किया, जिसके लिए इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन से सी एस आर अनुदान के माध्यम से वित्तपोषण प्राप्त हुआ था।

स्थानीय विधायक हरीश जनार्था ने इस मशीन का उद्घाटन किया और क्लब की सराहना करते हुए कहा कि उन्होंने उन्नत डायग्नोस्टिक उपकरण उपलब्ध कराए हैं, जिससे सरकारी सुविधाओं पर निर्भर मरीज़ों के लिए स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच बेहतर होगी।

क्लब अस्पताल में सर्वाइकल कैंसर की शुरुआती पहचान के लिए लगभग ₹5 लाख मूल्य का एक कोल्पोस्कोप भी दान करेगा, जिससे वहाँ उपलब्ध प्रिवेंटिव स्क्रीनिंग सेवाएँ और सशक्त होंगी। ■

कमला नेहरू अस्पताल में एक अल्ट्रासाउंड मशीन का उद्घाटन करने के बाद डीजी रवि प्रकाश (दाएँ से पाँचवें) क्लब अध्यक्ष करण बाम्बा, एजी मनु अग्रवाल और उपाध्यक्ष अमित पाल सूद।

रोटरी की महत्वपूर्ण जानकारियाँ

रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय

वर्ष 2026-27 के लिए मंडल फाउंडेशन पदों पर नियुक्ति

2026-27 के धन संचयन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अपने मंडल में निम्नलिखित प्रमुख पदों पर नियुक्ति करें: अक्षय निधि/प्रमुख दान अध्यक्ष; सीएसआर प्रमुख, वार्षिक निधि उपसमिति प्रमुख; पॉल हेरिस सोसाइटी समन्वयक; धन संचयन उपसमिति प्रमुख और पोलियो प्लस उपसमिति प्रमुख। इन नियुक्तियों की जानकारी रो ई को दें ताकि संबंधित नेताओं को महत्वपूर्ण रिपोर्ट्स और संसाधनों तक पहुंच मिल सके जो आपके धन संचयन प्रयासों को मजबूत बनाएंगे। नियुक्तियाँ जमा करने के लिए My Rotary पर लॉग इन करें, फिर मैनेज पर जाएँ और डिस्ट्रिक्ट ऐड्मिनिस्ट्रैशन टैब चुनें।

2025-26 वार्षिक निधि चुनौती

टीआरएफ न्यासी भरत पांड्या तथा ज़ोन 4, 5, 6 और 7 के आरआरएफसियों ने 2025-26 वार्षिक निधि चुनौती शुरू की है, जो 30 जून 2026 तक चलेगा। योगदान के लक्ष्य प्लैटिनम और गोल्ड श्रेणियों में विभाजित किए गए हैं।

मंडल स्तर पर, प्लैटिनम श्रेणी के लिए कम से कम 75 प्रतिशत क्लबों द्वारा प्रत्येक क्लब से 1,000 डॉलर का योगदान आवश्यक है। गोल्ड श्रेणी के लिए यह दर कम से कम 50 प्रतिशत है। क्लब स्तर पर: प्लैटिनम श्रेणी के लिए कम से कम 75 प्रतिशत सदस्यों द्वारा प्रत्येक सदस्य से 75 डॉलर का योगदान आवश्यक है। गोल्ड श्रेणी के लिए यह दर कम से कम 50 प्रतिशत है।

इसके अतिरिक्त मंडल पॉल हैरिस सोसाइटी चैम्पीयनशिप अवॉर्ड के लिए भी प्रतिस्पर्धा कर सकते हैं। यह सम्मान उन मंडलों को दिया जाएगा जो कम से कम 20 नए पीएचएस सदस्यों का नामांकन करें और कुल पीएचएस पात्रता में 80 प्रतिशत उपलब्धि हासिल करें (अर्थात पीएचएस सदस्यों में से 80 प्रतिशत अपने योगदान की प्रतिबद्धता पूरी करें)। प्रचार फ्लायर डाउनलोड करने के लिए *https://www.highroadsolution.com/file_uploader2/files/af_challenge_flyer.png* पर जाएं।

योगदानों के पुनर्वर्गीकरण (सुधार) हेतु टीआरएफ दिशानिर्देश

अपने योगदानों के सुधार या पुनर्वर्गीकरण संबंधी अनुरोध - जैसे अक्षय निधि या अनुदान या पोलियो से वार्षिक दान में परिवर्तन (ध्यान दें: वार्षिक दान से अनुदानों में परिवर्तन अनुमत नहीं है) 22 जून 2026 तक जमा करें। इससे ऐसे अनुरोधों को 30 जून 2026 तक संसाधित करने में सहायता मिलेगी। इन दिशानिर्देशों का पालन करने से वार्षिक ऑडिटेड वित्तीय रिपोर्ट तथा मंडल निर्देशित निधि (DDF) की पारदर्शिता और विश्वसनीयता बनी रहेगी।

2025-26 के लिए टीआरएफ मान्यता अंक स्थानांतरण प्रक्रिया का निर्धारित समय।

पूर्ण मान्यता हस्तांतरण अनुरोध फॉर्म जो 30 जून 2026 या उससे बाद का न हो, उनका 3 जुलाई 2026 को शाम 5 बजे तक रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय में प्राप्त होना आवश्यक है ताकि उसे रोटरी वर्ष 2025-26 में दर्ज किया जा सके। निर्धारित समय के बाद दक्षिण एशिया कार्यालय में प्राप्त होने वाले फॉर्म स्वतः ही 2026-27 वर्ष में दर्ज किए जाएंगे। फॉर्म की विधिवत भरी हुई और हस्ताक्षरित स्कैन कॉपी (पीडीएफ के प्रारूप में) दक्षिण एशिया कार्यालय की निधि विकास और दान सेवा टीम को ईमेल द्वारा भेजें। अधिक जानकारी के लिए मंजू जोशी *(Manju.Joshi@rotary.org)* से संपर्क करें।

रोटरी अनुदानों में भाग लेने के लिए मंडल और क्लब की योग्यता

मंडलों को अनुदान निधि प्राप्त करने के लिए टीआरएफ दिशानिर्देशों के अनुसार योग्य बनना आवश्यक है। जो क्लब वैश्विक अनुदान और सीएसआर अनुदान के लिए आवेदन करना चाहते हैं, उन्हें भी योग्य होना जरूरी है। यह योग्यता प्रक्रिया इसलिए होती है ताकि मंडल या क्लब अपनी वित्तीय जिम्मेदारियों को समझें जिसमें निधियों का जिम्मेदार और पारदर्शी उपयोग भी शामिल है और वे इन जिम्मेदारियों को निभाने के लिए पूरी तरह तैयार हो। 1 मई को नवनिर्वाचित डीजी, डीजीई और डीआरएफसी को एक रिमाइंडर भेजा गया है, जिसमें मंडल को योग्य बनाने के लिए समझौता ज्ञापन को अधिकृत करने के लिए कहा गया है।

मंडल योग्यता

डीजी, डीजीई और रोटरी फाउंडेशन (भारत) प्रमुख को ग्रांट सेंटर में मंडल योग्यता समझौता ज्ञापन को पढ़कर कुछ प्रश्नों के उत्तर देने होते हैं और उसे स्वीकार करना होता है। अधिक जानकारी के लिए मंडल योग्यता सामान्य प्रश्नों को देखें; क्लबों के लिए अनुदान प्रबंधन सेमीनार आयोजित करना भी आवश्यक है। इस सेमिनार में निधियों के जिम्मेदार और सफल उपयोग के लिए महत्वपूर्ण विषय शामिल होने चाहिए जैसे: प्रभावी समुदाय आंकलन, स्थिरता की प्रथाएँ, हितों का टकराव, वित्तीय प्रबंधन और सर्वोत्तम उत्तरदायी प्रबंधन प्रथाएं

क्लब योग्यता

क्लबों को योग्य बनाने के लिए मंडल जिम्मेदार होता है। जो भी क्लब वैश्विक अनुदान और सीएसआर अनुदानों के लिए आवेदन करना चाहता है, उसे यह सुनिश्चित करना होगा कि:

- क्लब अध्यक्ष और अध्यक्ष-निर्वाचित को क्लब योग्यता समझौता ज्ञापन को अधिकृत करना आवश्यक है। अधिक जानकारी के लिए *My Rotary* में उपलब्ध क्लब क्वालिफिकेशन FAQ को देखें।
- क्लब के कम से कम एक सदस्य को मंडल द्वारा निर्धारित ग्रांट मैनेजमेंट सेमिनार प्रशिक्षण को पूरा करना आवश्यक है। यह प्रशिक्षण व्यक्तिगत रूप से, ऑनलाइन या दोनों के संयोजन से पूरा किया जा सकता है।
- मंडल की आवश्यकता अनुसार सभी अतिरिक्त चरणों को पूरा करना होगा।
- इसके अतिरिक्त, क्लबों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए कि वे एक लिखित वित्तीय प्रबंधन योजना अपनाकर अनुदान निधि के वित्तीय प्रबंधन को मजबूत करें।

ग्रांट मैनेजमेंट सेमिनार से संबंधित सहायता के लिए स्टुअर्डशिप डिपार्टमेंट से संपर्क करें: *tanu.malhot@rarotary.org* ■

एक झलक

टीम रोटरी न्यूज़

डेंटल हेल्थकेयर पहल

रोटरी क्लब अगरतला सिटी, रो ई मंडल 3240 ने एक मोबाइल डेंटल क्लिनिक शुरू किया, ताकि पूर्वोत्तर भारत के जरूरतमंद लोगों को दांतों की स्वास्थ्य सेवाएं मिल सकें। यह प्रोजेक्ट रोटरी क्लब बिराटनगर, रो ई मंडल 3292 के सहयोग से बनाया गया और इसकी जिम्मेदारी रामकृष्ण मिशन को सौंपी गई। इस पहल के तहत महाराजा बीर बिक्रम यूनिवर्सिटी में एक मुफ्त डेंटल चेकअप कैंप भी लगाया गया, जिसमें 65 लोगों की जांच की गई।

क्लब के सदस्य डेंटल क्लिनिक की चाबी रामकृष्ण मिशन, अगरतला को सौंपते हुए।

ई-वेस्ट प्रबंधन की सीख

रोटरी क्लब इरोड नेक्सस, रो ई मंडल 3203 को इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स द्वारा सम्मानित किया गया, क्योंकि क्लब ने 10 वर्ष से कम उम्र के 304 बच्चों, जिनमें विशेष बच्चे भी शामिल थे, के साथ बड़े स्तर पर ई-वेस्ट अलग करने के प्रति जागरूकता अभियान चलाया। ₹7 लाख की इस परियोजना का उद्देश्य बच्चों और परिवारों को ई-वेस्ट के सही निपटान और पर्यावरण संरक्षण के बारे में सिखाना था। इस कार्यक्रम में 1,000 से अधिक लोग, जिनमें माता-पिता, शिक्षक और समुदाय के सदस्य शामिल थे, उपस्थित रहे।

क्लब अध्यक्ष एस भरनीधर, सचिव आर मधुमति और पीडीजी ई के सगधेवन प्रतिभागियों के साथ।

स्थानीय प्रतिभा का उत्सव

रोटरी क्लब वैनगंगा बालाघाट, रो ई मंडल 3261 ने 3 से 12 अप्रैल तक 19वें ट्रेड और सांस्कृतिक मेले बालाघाट महोत्सव का आयोजन किया। 10 दिनों तक चले इस कार्यक्रम में लगभग 2.5 लाख लोगों ने भाग लिया। महोत्सव में व्यापार प्रदर्शनी, इंटर-स्कूल प्रतियोगिताएं, संगीत और नृत्य प्रतियोगिताएं, तथा स्थानीय प्रतिभाओं और सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा देने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। मेले में पहुंचे स्कूल शिक्षा मंत्री उदय प्रताप सिंह ने क्लब को एक कार्डियक एम्बुलेंस और 3,000 वर्ग फुट जमीन दान देने की घोषणा की।

बालाघाट महोत्सव में प्रस्तुति देते हुए छात्र।

डायबिटिक फुट जटिलताओं की रोकथाम

रोटरी क्लब मद्रास साउथ, रो ई मंडल 3234 ने 'पादम काप्पो' (पैर बचाओ) परियोजना के तहत VHS अस्पताल को ₹30 लाख मूल्य के डायबिटिक फुट केयर उपकरण दान किए। इस परियोजना को फोर्ड मोटर कंपनी ने प्रायोजित किया। इस पहल का उद्देश्य डायबिटीज के कारण होने वाली पैरों की गंभीर समस्याओं और अंग काटने की नौबत को रोकना ह

नई मशीन की सहायता से एक लाभार्थी की जांच करते हुए।

दिव्यांग दंपतियों को रोटरी से मिले घर

वी मुत्तुकुमारन

रोटरी क्लब चेन्नई सन सिटी, रो ई मंडल 3234 द्वारा निर्मित नए घरों की चाबियाँ पाकर 13 दिव्यांग परिवार अत्यंत उत्साहित थे। उन्होंने इतने सुंदर और जीवनभर के उपहार के लिए रोटरी के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त की, *प्रोजेक्ट हैप्पी शेलटर्स* के मुख्य संपर्क एम कृष्णा साई कहते है। यह परियोजना रोटरी क्लब चेन्नई पोर्ट सिटी और नैशनल एसोसिएशन फॉर दी ब्लाइन्ड के स्थानीय चैप्टर के साथ मिलकर पूरी की गई। लाभार्थी परिवारों के पति और पत्नी दोनों ही या तो दृष्टिबाधित हैं या शारीरिक रूप से दिव्यांग है।

प्रत्येक घर का निर्मित क्षेत्रफल 350 वर्गफुट है और यह 1,200 वर्गफुट के भूखंडों पर बनाए गए हैं, जो सरकार द्वारा उपहार स्वरूप दिए गए थे। तो प्रत्येक घर के आगे और पीछे लगभग 850 वर्गफुट खुला स्थान है, जहाँ आम, नारियल और अमरूद जैसे फलदार पेड़ लगाए गए जो इस रोटरी कॉलोनी को हरा-भरा एवं स्वच्छ वातावरण प्रदान करते हैं, साई समझाते है, जो रोटरी क्लब चेन्नई सन सिटी चैरिटेबल ट्रस्ट के न्यासी प्रबंधक है, इस ट्रस्ट ने चेन्नई के निकट तिरुवल्लुर जिले के पक्कम गाँव में घर बनाए है। इस परियोजना की कुल लागत ₹65 लाख थी, जिसमें ₹58 लाख की सीएसआर निधि अंजन ड्रग से प्राप्त हुई जबकि सहयोगी क्लबों ने ₹7 लाख का योगदान दिया। 13 लाभार्थी परिवारों में से 9 परिवार दृष्टिबाधित थे और 4 परिवार शारीरिक रूप से दिव्यांग थे।

प्रमुख परियोजना

अब तक की इस यात्रा को याद करते हुए साई कहते हैं, हम पिछले चार वर्षों से कोविड काल से ही, आवास परियोजनाओं पर कार्य कर रहे हैं और अब तक हमारे 16 वर्ष पुराने क्लब ने तीन परियोजना स्थलों पर कुल 28 घर बनाए हैं - कल्पक्कम (महाबलीपुरम के पास) में मछुआरों के लिए 8 आवास, कांचीपुरम जिले के पदप्पई में दृष्टिबाधित परिवारों के लिए 7 आवास और अब तिरुवल्लुर जिले के पक्कम में 13 वंचित परिवारों के लिए आवास। पूर्ण हुई इन परियोजनाओं का कुल मूल्य लगभग ₹1.7 करोड़ है, जिसे सीएसआर निधि और सदस्यों के योगदान के मिश्रण से पूरा किया गया।

रोटरी क्लब चेन्नई सन सिटी के अध्यक्ष सोमेश बालकृष्णन (मैरून जैकेट), अंजन ड्रग के निदेशक सी कलाइचेलवन (उनके दाईं ओर) और रो ई मंडल 3234 के प्रोजेक्ट चेयरमैन सी मुत्तुसामी (कलाइचेलवन के पीछे), लाभार्थियों को घर की चाबियाँ सौंपने के बाद।

यह सब तब शुरू हुआ जब क्लब सदस्य वी गणेश, जो एनएबी समिति के सदस्य भी हैं, ने क्लब के सामने यह विचार रखा कि तमिलनाडु में दृष्टिबाधित परिवारों को किफायती आवास उपलब्ध कराने में ब्लाइंड एसोसिएशन की सहायता की जाए। एनएबी के साथ संयुक्त अध्ययन के दौरान, हमें निवासा नामक एक गैर सरकारी संगठन के बारे में जानकारी मिली, जो तमिलनाडु और कर्नाटक में सामुदायिक भवन, स्कूल और शौचालय खंडों जैसी ग्रामीण सुविधाओं के निर्माण में कार्यरत है। निवासा की मदद से हमने कल्पक्कम में मछुआरा परिवारों के लिए घर बनाए, जो हमारी पहली आवास परियोजना थी, साईं समझाते है। आगे की योजना के अंतर्गत क्लब का हर वर्ष चेन्नई के आसपास के जिलों में कम से कम 8-10 घर (लगभग ₹60 लाख की लागत से) बनाने का लक्ष्य है, जिसे सीएसआर निधि, सदस्यों के योगदान और दान की सहायता से पूरा किया जाएगा।

क्लब द्वारा दो बोरवेल खोदे गए ताकि प्रत्येक घर में ओवरहेड टैंकों के माध्यम से निरंतर जल आपूर्ति उपलब्ध कराई जा सके, इसके अतिरिक्त 11 और बोरवेल की योजना बनाई जा रही है, जिनका खर्च स्वयं परिवार वहन करेंगे। हमने यह सुनिश्चित किया है कि बाथरूम, रसोई और बागवानी के लिए पर्याप्त जल उपलब्ध रहे।

दशकों तक कठिनाइयों का सामना करने के बाद शारीरिक रूप से दिव्यांग, जेम्स सेल्वाराज (47) कहते हैं, यह नया घर हमारे लिए भगवान का भेजा हुआ उपहार है। इसने हमें सम्मान, सुरक्षा और बेहतर भविष्य की उम्मीद दी है। मैं रोटरी और उन सभी दानदाताओं का आभार व्यक्त करता हूँ।

एक अन्य दृष्टिबाधित लाभार्थी, एन विजयलक्ष्मी (40) कहती हैं, यह नया घर प्राप्त करना हमारे लिए भगवान के आशीर्वाद जैसा है। इससे हमें सुरक्षा, आराम और वह मानसिक शांति मिली है जो पहले हमारे पास नहीं थी इस महान पहल के लिए मैं रोटरी की हृदय से आभारी हूँ।

इस वर्ष हमने रोटरी के सातों ध्यानाकर्षण क्षेत्रों में ₹1.53 करोड़ मूल्य की परियोजनाएँ पूरी की हैं, क्लब अध्यक्ष सोमेश बालकृष्णन कहते है। क्लब ने किलपौक के राइट हॉस्पिटल्स में छह मशीनों वाला एक डायलिसिस केंद्र स्थापित किया है। यहाँ मुख्यमंत्री गहन चिकित्सा बीमा योजना के अंतर्गत आने वाले मरीजों को निःशुल्क उपचार दिया जाता है। इस केंद्र में क्खत और हेपेटाइटिस पॉजिटिव मरीजों के लिए एक अलग डायलिसिस मशीन भी निर्धारित की गई है। ₹52 लाख की लागत से स्थापित यह केंद्र सीएसआर अनुदान और सदस्यों के दान से वित्तपोषित है।

रो ई मंडल 3234 के हैप्पी शेल्टर्स

चेन्नई के निकट तिरुवल्लुर और कांचीपुरम जिलों में विभिन्न क्लबों द्वारा मंडल की प्रमुख परियोजना *प्रोजेक्ट हैप्पी शेलटर्स* के अंतर्गत अब तक 28 घर बनाए जा चुके हैं। 30 जून तक 40 और आवासीय इकाइयाँ तैयार हो जाएँगी, जो सभी दिव्यांग परिवारों के लिए होंगी। इन कुल 68 घरों के निर्माण पर अब तक ₹3.4 करोड़ खर्च किए जा चुके हैं। 100 घरों का हमारा प्रारंभिक लक्ष्य अगले वर्ष तक पूर्ण कर लिया जाएगा, रोटरी क्लब चेन्नई पोर्ट सिटी के मंडल परियोजना अध्यक्ष सी मुत्तुसामी कहते है।

आवास परियोजना का वित्तपोषण सीएसआर निधि, वैश्विक अनुदानों, सदस्यों के योगदानों और दान के मिश्रण से किया गया है। रो ई मंडल 3234 ने राज्य सरकार के साथ साझेदारी में सात घरों का निर्माण भी किया है। ■

Membership & TRF contribution summary

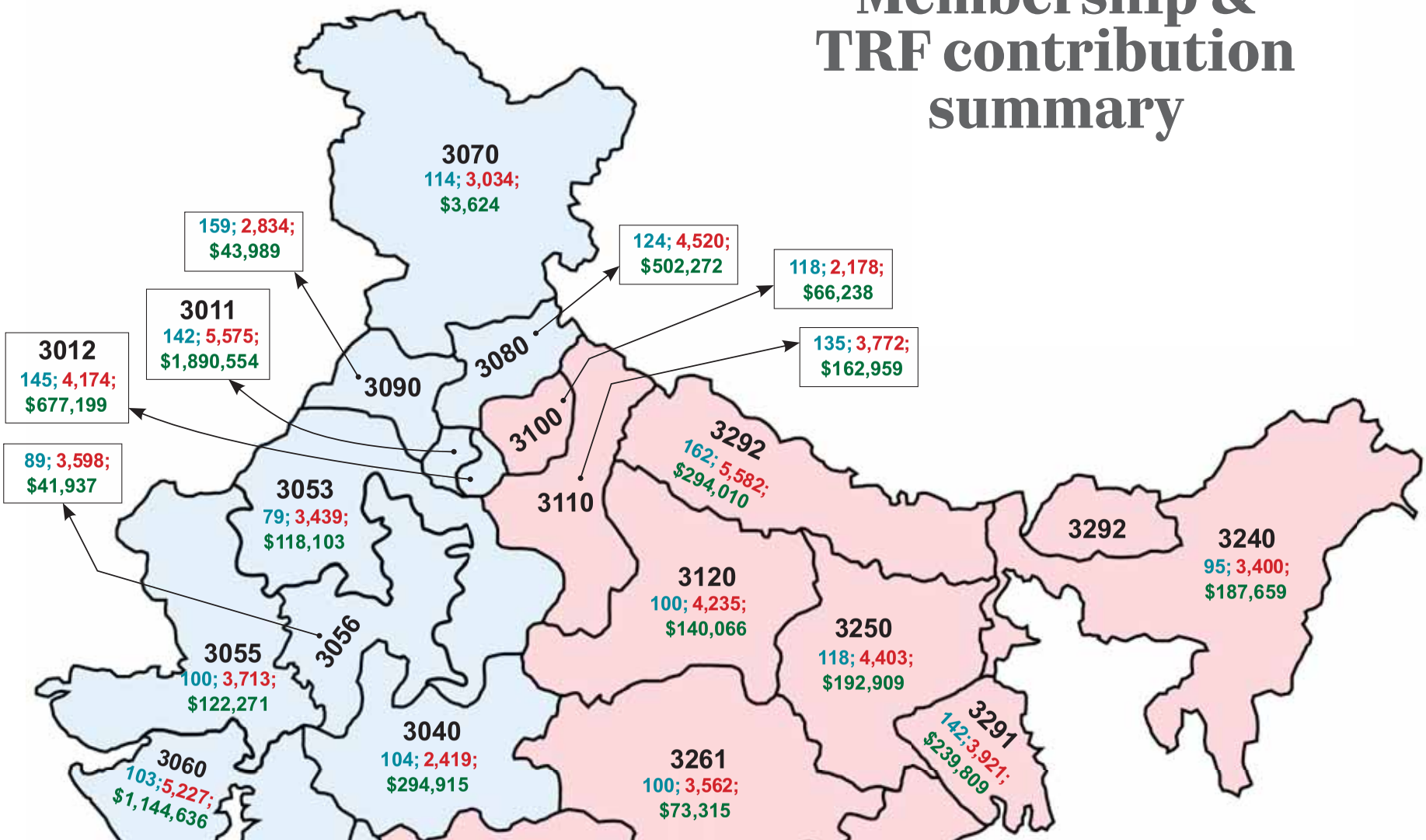

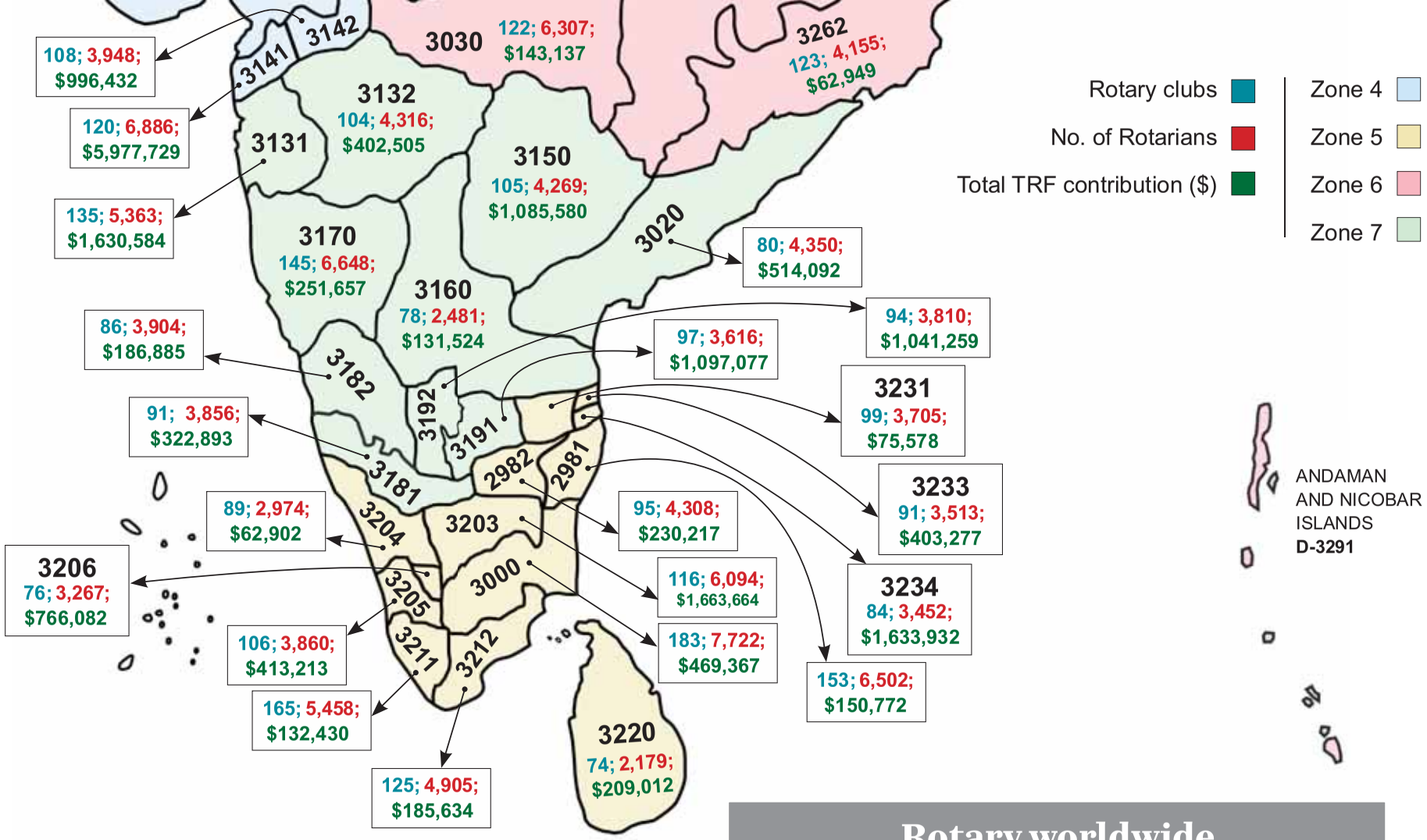

*Membership figures as on May 1, 2026.
*TRF contribution figures as on April 30, 2026.

Rotary worldwide

Rotary clubs	: 36,724	Rotary members	: 1,172,417
Rotaract clubs	: 9,510	Rotaract members	: 150,048
Interact clubs	: 19,719	Interact members	: 453,698
RCCs	: 14,396	As on May 20, 2026	

परिवर्तन की शक्ति

दृष्टिबाधितों के लिए 50 घर

रो ई मंडल 3000 की डीजीएनडी मीना सुब्बैय्या ने तमिलनाडु के मदुरै के पास सक्किमंगलम गाँव स्थित मरोटरी ब्राइट होम्सफ में, एक दृष्टिबाधित व्यक्ति के परिवार को 50वें घर (₹4.5 लाख) की चाबियाँ सौंपी।

आवास परियोजना के तहत रोटरी क्लब मदुरै स्टार द्वारा दृष्टिबाधित परिवारों के लिए पचास घर बनाए गए और उन्हें सौंपे गए।

हस्तांतरण समारोह के अवसर पर क्लब अध्यक्ष डी बालासुब्रमण्यम, आईपीपी आर वासुदेवन, प्रोजेक्ट संपर्क एस एल सेतुमाधव, क्षेत्रीय समन्वयक सी रमेश और एजी सुरेश पांडियन गाँव में उपस्थित थे। ■

रो ई मंडल 3000 की डीजीएनडी मीना सुब्बैय्या ने मदुरै के पास 'रोटरी ब्राइट होम्स' में बने नए घर की पट्टिका का अनावरण किया। इस अवसर पर रोटरी क्लब मदुरै स्टार के सदस्य भी उपस्थित थे।

आदिवासी छात्रों के प्रति रोटरी का सद्भाव

राज्य के जनजातीय कार्य विभाग द्वारा मेधा-आधारित चयन प्रक्रिया के माध्यम से चुनी गई 100 आदिवासी छात्राओं के पोषण और प्रशिक्षण के प्रयासों को समर्थन देने के उद्देश्य से, रोटरी क्लब मुंबई जुहू, रो ई मंडल 3141, ने ठाणे मंडल के भिवंडी तालुका के पडघा गांव के सरकारी आश्रम विद्यालय के प्रशिक्षण केंद्र को एक प्रिंटर और फोटोकॉपी मशीन दान की। इस परियोजना की लागत ₹1.5 लाख रही।

क्लब के सचिव मुकुल जैन ने बताया कि ये मशीनें शिक्षकों को NEET और JEE के उम्मीदवारों के लिए अध्ययन सामग्री, अभ्यास पत्र, वर्कशीट और संदर्भ सामग्री तैयार करने तथा वितरित करने में सक्षम बनाएंगी। इसके अतिरिक्त, क्लब ने आदिवासी छात्रों को शैक्षणिक पुस्तकें भी प्रदान कीं।

यह पहल उनके सी एस आर सहयोगी, क्रिस्टिक रेज़िन्स इंडिया के उदार सहयोग से संभव हो पाई। ■

शैक्षणिक पुस्तकों के साथ छात्राएँ।

स्कूली छात्रों के लिए RYLA

मध्य प्रदेश के औद्योगिक शहर नागदा स्थित 'शेषशायी कॉलेज ऑफ़ प्रोफ़ेशनल स्टडीज़' में रोटरी क्लब नागदा (रो ई मंडल 3040) द्वारा आयोजित एक-दिवसीय RYLA कार्यक्रम में 10 स्कूलों के लगभग 100 छात्रों (कक्षा 9-12) को नेतृत्व गुणों के लिए प्रशिक्षित किया गया।

मंडल RYLA सलाहकार पीडीजी धीरन दत्ता ने RYLA और युवाओं के लिए इसके महत्व पर अपने विचार साझा किए। आईपीडीजी अनीश मलिक, पीडीजी दत्ता, डॉ पी बी रेड्डी और विनीता अवस्थी ने छात्रों को संबोधित किया।

एक सामूहिक गतिविधि के माध्यम से छात्रों को 10 वर्षों बाद के भारत के प्रति अपने दृष्टिकोण प्रस्तुत करने का अवसर मिला, और इस कार्यक्रम का संचालन सहायक प्रोफेसर प्रीति शर्मा ने किया। ■

रो ई मंडल 3040 RYLA के अध्यक्ष PDG धीरन दत्ता छात्रों को मार्गदर्शन देते हुए।

कश्मीर के एक गांव में सौर ऊर्जा पहल

कश्मीर के कुपवाड़ा मंडल के केरन गाँव में 12 घरों के लगभग 50 ग्रामीणों को अब सोलर लाइटों की सुविधा उपलब्ध हो गई है। यह रोटरी क्लब पुणे हेरिटेज (रो ई मंडल 3131) द्वारा असीम फाउंडेशन के सहयोग से स्थापित 3kW के ऑफ़-ग्रिड सौर ऊर्जा परियोजना के माध्यम से संभव हो पाया है।

क्लब अध्यक्ष सुभ्रो सेन ने कहा कि इस पहल का समुदाय पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ेगा और यह लोगों की दैनिक आवश्यकताओं तथा आर्थिक गतिविधियों को समर्थन प्रदान करेगी। उन्होंने बताया कि केरन, नियंत्रण रेखा (LoC) के पास स्थित एक पहाड़ी और दुर्गम इलाका है, और यह सौर ऊर्जा परियोजना कश्मीर के ग्रामीण परिवारों को सशक्त बनाने में नवीकरणीय ऊर्जा की संभावनाओं को दर्शाती है। ■

ग्लोबल वार्मिंग के दौर में स्वास्थ्य की चुनौतियों से निपटना

प्रीति मेहरा

अत्यधिक गर्मी की स्थिति में खुद को ठंडा रखने के लिए आप क्या कर सकते हैं

मोनाश यूनिवर्सिटी के पर्यावरण विशेषज्ञ ग्रांट एनिस ने, पिछले महीने मेरे द्वारा भाग लिए गए एक वेबिनार में जलवायु से जुड़ी गलत जानकारियों पर बोलते हुए एक महत्वपूर्ण बात कही। उन्होंने कहा कि हम लगातार जलवायु परिवर्तन शब्द का इस्तेमाल करते रहते हैं, जो हमारे ग्रह के लिए मौजूद असली खतरे को साफ तौर पर नहीं बताता। इसके बजाय, उन्होंने कहा, यह बेहतर होगा कि हम ग्लोबल वार्मिंग शब्द का इस्तेमाल करें, ताकि लोगों को यह एहसास हो सके कि हम किस दिशा में आगे बढ़ रहे हैं-एक ऐसे गर्म ग्रह की ओर जिसका असर हम पर तुरंत पड़ेगा, न कि जलवायु में होने वाले किसी ऐसे धीमे बदलाव की ओर जो शायद हमें दूर की बात लगे।

वह बिल्कुल सही कह रहे हैं। यह वास्तव में ग्लोबल वार्मिंग ही है, और अनुमान है कि इस महीने हमारे शहरों में लू स्थिति सबसे गंभीर हो सकती है। शहरों में बढ़ते शहरीकरण और कंक्रीट आधारित बुनियादी ढांचे के विस्तार के कारण एक नई घटना सामने आई है, जिसे मअर्बन हीट आइलैंडफ (यूएचआई) इफ़ेक्ट कहा जाता है। इसका मतलब है कि शहरों का तापमान आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में काफ़ी अधिक हो जाता है। ऐसा शहरों में इमारतों के जमावड़े की वजह से होता है; यानी यहाँ फुटपाथ जैसी कंक्रीट की सतहें ज़्यादा होती हैं, जबकि हरियाली और पेड़-पौधे बहुत कम होते हैं। कंक्रीट की ये सतहें गर्मी को रिफ़्लेक्ट करती हैं, जिससे तापमान काफ़ी बढ़ जाता है।

यह एक खतरनाक प्रवृत्ति है। लू के दौरान, तापमान 50 डिग्री सेल्सियस तक पहुँच सकता है, जिसके पर्यावरण के साथ-साथ इंसानों और जानवरों की सेहत पर भी गंभीर प्रभाव पड़ते हैं। जनसंख्या जितनी ज़्यादा गरीब और कमज़ोर होगी, उनके जीवन, स्वास्थ्य और आजीविका पर असर उतना ही अधिक पड़ेगा।

इससे पहले कि हम यह समझें कि अत्यधिक गर्मी हमारी सेहत को कितना नुकसान पहुँचा सकती है, आइए पहले यह जानें कि लू की गंभीरता का आकलन कैसे किया जा सकता है और हम खुद को इसके लिए कैसे तैयार कर सकते हैं। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) रंग-आधारित लू की चेतावनियाँ जारी करता है, जो इसकी गंभीरता को दर्शाती हैं। इसका मुख्य उद्देश्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरणों और स्वास्थ्य अधिकारियों को सचेत करना है, ताकि वे समय रहते उचित कदम उठा सकें। लेकिन यह आम नागरिकों के लिए भी समान रूप से उपयोगी हो सकती हैं। ये चार रंग-आधारित कोड इस प्रकार हैं: हरा, जिसका अर्थ है कि स्थिति सामान्य है; पीला, जो सतर्क रहने और नियमित रूप से अपडेट लेते रहने का संकेत देता है; नारंगी, जो सभी को तैयार रहने का निर्देश देता है; और लाल, जो तत्काल कार्रवाई करने की चेतावनी देता है।

लू के दौरान स्वास्थ्य संबंधी चिंताएँ कई स्तरों पर सामने आती हैं। इससे हाइपरथर्मिया हो सकता है, जो एक ऐसी स्थिति है जिसमें शरीर का आंतरिक तापमान सामान्य तापमान 98.6 डिग्री फ़ारेनहाइट से ऊपर बढ़ जाता है। ऐसा तब होता है, जब शरीर की तापमान नियंत्रित करने की क्षमता प्रभावित हो जाती है और वह अपनी क्षमता से अधिक ऊष्मा को अवशोषित या उत्पन्न करने लगता है। इसके परिणामस्वरूप, यदि शरीर का आंतरिक तापमान 104 डिग्री फ़ारेनहाइट तक पहुँच जाए, तो हीट

स्ट्रोक हो सकता है, जिसके कारण आपातकालीन स्थिति में अस्पताल में भर्ती होने की आवश्यकता पड़ सकती है। लू के कम गंभीर लक्षणों में हीट क्रैम्प्स और थकावट शामिल हैं, जिनके कारण मांसपेशियों में दर्द, अत्यधिक पसीना आना, कमजोरी और चक्कर आना जैसे लक्षण दिखाई दे सकते हैं।

गर्म देशों में अत्यधिक गर्मी के कारण सूखे की स्थिति पैदा हो सकती है और पीने के पानी की कमी हो सकती है। अगर प्रभावित क्षेत्रों में पीने का पानी तुरंत न पहुँचाया जाए, तो यह स्थिति स्वास्थ्य आपातकाल का रूप ले सकती है। अत्यधिक गर्म मौसम में बैक्टीरिया भी तेज़ी से पनपते हैं, जिससे दस्त, हैज़ा और संक्रामक गैस्ट्रोएंटेराइटिस जैसी बीमारियों के फैलने का जोखिम बढ़ जाता है। इसके अलावा, हाल के अध्ययनों से यह भी संकेत मिलता है कि भारत में अत्यधिक गर्मी के दौरान डेंगू और हृदय संबंधी बीमारियों के मामलों में भी वृद्धि देखी जाती है।

यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि गरीब, बुज़ुर्ग, बच्चे और पहले से किसी बीमारी से पीड़ित लोग सबसे अधिक जोखिम में होते हैं। इसी प्रकार, वे लोग भी अधिक जोखिम का सामना करते हैं, जिनके काम की प्रकृति उन्हें लंबे समय तक सीधे धूप में रहने के लिए मजबूर करती है, जैसे निर्माण कार्य में लगे मज़दूर।

नागरिक के रूप में हम अपनी और हमारे लिए काम करने वाले लोगों की सुरक्षा के लिए क्या कर सकते हैं? इस संबंध में आईएमडी ने कुछ सुझाव दिए हैं। इनमें सबसे महत्वपूर्ण सलाह यह है कि गर्मी के सीधे संपर्क में आने से बचा जाए। जो लोग बाहर काम करते हैं, उनके लिए ऐसा करना हमेशा संभव नहीं होता। लेकिन, ओआरएस (ओरल रिहाइड्रेशन सॉल्यूशन) मिला हुआ पर्याप्त पानी पीकर शरीर को हाइड्रेटेड रखा जा सकता है और गर्मी के दुष्प्रभावों को कम किया जा सकता है। कुछ ओआरएस पाउडर के रूप में सैशे में आते हैं, जिन्हें पानी में घोलकर पिया जाता है। शरीर को ठंडक पहुँचाने के लिए घर पर फ्रिज में नींबू पानी, छाछ और गर्मियों के खास ड्रिंक्स रखे जा सकते हैं।

आईएमडी सलाह देता है कि दोपहर 12 बजे से 3 बजे के बीच बाहर काम करने से बचना चाहिए। आठ घंटे की शिफ्ट में काम करने वाले मज़दूरों के लिए यह हमेशा संभव नहीं हो सकता, लेकिन यदि उन्हें काम करना ही पड़े, तो उन्हें सलाह दी जानी चाहिए कि वे गर्मी के प्रभाव से बचाव के लिए अपने साथ पीने का पानी और ओआरएस ज़रूर रखें। इसके अलावा, एक समझदार मैनेजमेंट को इस बात पर भी विचार करना चाहिए कि हर आधे घंटे या 40 मिनट के अंतराल पर उन्हें छाँव में पाँच मिनट का विश्राम दिया जाए।

आईएमडी की यह अंतिम सिफारिश बच्चों के मामले में अभिभावकों द्वारा गंभीरता से ली जानी चाहिए। जिस अपार्टमेंट ब्लॉक में मैं रहता हूँ, उसके पीछे एक खाली मैदान है, जहाँ आसपास के बच्चे चिलचिलाती धूप में क्रिकेट खेलने आ जाते हैं। यह सही है कि गर्मियों की छुट्टियाँ चल रही हैं और उनके पास भरपूर खाली समय होता है। लेकिन दोपहर का भोजन करने के तुरंत बाद तेज़ गर्मी में क्रिकेट खेलना स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं माना जा सकता। फिर भी, वे यह कहकर अपनी बात को सही ठहराते हैं कि आईपीएल के मैच भी तो गर्मियों के चरम मौसम में ही खेले जाते हैं!

मूल नियम यह है कि बाहर की कड़ी मेहनत वाली गतिविधियों से बचना चाहिए, और यात्रा करने वालों को अपने साथ पानी और हल्के जूस रखने चाहिए। कॉफी, चाय और कोला जैसे कार्बोनेटेड ड्रिंक्स से बचना चाहिए, क्योंकि ये शरीर में पानी की कमी पैदा करते हैं। गर्मी के मौसम में ढीले सूती कपड़े पहनना सबसे उपयुक्त होता है, और छाता या टोपी साथ रखने से सीधी धूप से बचाव किया जा सकता है।

सबसे ज़रूरी बात यह है कि अगर आपको चक्कर आना, कमज़ोरी, बदन दर्द, थकान, बुखार या सिरदर्द जैसी कोई भी तकलीफ़ महसूस हो, तो तुरंत किसी ठंडी जगह पर चले जाएँ और चिकित्सीय सहायता प्राप्त करें। जब तक सहायता उपलब्ध न हो, तब तक पानी पीते रहें-या इससे भी बेहतर होगा कि आप ओरल रिहाइड्रेशन सॉल्यूशन (ओआरएस) पिएँ।

अत्यधिक गर्मी को हल्के में नहीं लेना चाहिए। एक सामाजिक रूप से जागरूक नागरिक के तौर पर, हमें सरकार और नागरिक अधिकारियों पर भी दबाव डालना चाहिए कि वे इसके लिए पर्याप्त रूप से तैयार रहें। हो सकता है कि हम अपना कार्बन फुटप्रिंट कम करके अपना योगदान दे रहे हों, जो निस्संदेह सराहनीय है। लेकिन शायद यह काफी न हो। ग्रांट एनिस ने हाल ही में आयोजित एक वेबिनार में अपनी प्रस्तुति के दौरान कहा कि व्यक्तिगत स्तर पर अपने पर्यावरणीय फुटप्रिंट को कम करना तो अच्छी बात है, लेकिन इससे होने वाला बदलाव सीमित रहेगा। इसके बजाय, हमें अपनी सरकारों से यह अपेक्षा करनी चाहिए कि वे जलवायु परिवर्तन से जुड़े मामलों को गंभीरता से लें और उन पर प्रभावी नीतिगत निर्णय लेने का दबाव बनाया जाए। हालाँकि अब कई शहरों में 'हीट एक्शन प्लान' मौजूद हैं, फिर भी उनमें कई कमियाँ हैं और ज़मीनी स्तर पर उनका क्रियान्वयन उतना अच्छा नहीं है, जितना कि होना चाहिए।

नीति-निर्माताओं को अब ठोस कदम उठाने ही होंगे। काउंसिल ऑन एनर्जी, एनवायरनमेंट एंड वॉटर (सीईईडब्ल्यू) के हालिया अध्ययन में पाया गया है कि 57 प्रतिशत मंडल -जहाँ देश की 76 प्रतिशत आबादी निवास करती है-वर्तमान में "हाई-रिस्क" श्रेणी में आते हैं। अत्यधिक गर्मी के जोखिम वाले दस राज्य हैं-दिल्ली, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु, गोवा, केरल और राजस्थान।

इसलिए, इस गर्मी में अपने स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखें और खुद को ठंडा एवं सुरक्षित बनाए रखने की पूरी कोशिश करें। एक 'ग्रीन वॉरियर' के रूप में, हम जैसे सौभाग्यशाली नागरिकों के लिए यह भी उतना ही ज़रूरी है कि हम दुनिया को और भी अधिक ठंडा बनाने की कोशिश करें।

अगर आपको चक्कर आना, कमज़ोरी, बदन दर्द, थकावट, बुखार या सिरदर्द जैसी कोई भी तकलीफ़ महसूस हो, तो किसी ठंडी जगह पर चले जाएँ और मेडिकल मदद के लिए फ़ोन करें।

लेखिका एक वरिष्ठ पत्रकार हैं, जो पर्यावरण के मुद्दों पर लिखती हैं।

रो ई मंडल 3012

रोटरी क्लब दिल्ली मयूर विहार

फरीदाबाद के आर्य कन्या सदन में पीपी राजीव गुप्ता और उनकी पत्नी शशि ने लड़कियों को नए कपड़े बांटे। पीपी अरविंद जैन, अध्यक्ष विमल अग्रवाल और एजी बृजेश गुप्ता ने नवविवाहित लड़की को घरेलू उपयोग की वस्तुएं भेंट की।

Rotary PEOPLE OF ACTION

मंडल गतिविधियाँ

रो ई मंडल 3053

रोटरी क्लब जोधपुर पद्मिनी

प्रोजेक्ट एक पेड़ माँ के नाम के तहत, जो भावनाओं को पर्यावरणीय ज़िम्मेदारी के साथ जोड़ता है, विभिन्न गाँवों में 500 से अधिक पौधे वितरित किए गए। आरसीसी के अध्यक्ष रघुनाथ विश्नोई, राजेंद्र छाबरवाल और अशोक थोरी ने इस हरित अभियान को अपना समर्थन दिया।

रो ई मंडल 3055

रोटरी क्लब आदर्श अहमदाबाद

वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों की मौजूदगी में कुबेरनगर पुलिस चौक पर एसी केबिन लगाए गए (सी एस आर फंड का हिस्सा: ₹1.91 लाख)। 25 से ज़्यादा पुलिस अधिकारियों ने अपराध रोकने और अपने अधिकार क्षेत्र में 25,000 से ज़्यादा परिवारों की सुरक्षा करने की शपथ ली। रोटरी क्लब अहमदाबाद एयरपोर्ट इसमें सह-भागीदार था।

रो ई मंडल 3100

रोटरी क्लब मुरादाबाद नव्यम

पंचायत भवन में डीजी नितिन अग्रवाल और स्थानीय विधायक रामवीर सिंह की उपस्थिति में स्कूली छात्रों के लिए एक करियर मार्गदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कॉर्पोरेट जगत से आए वक्ताओं ने छात्रों को नए कौशल विकसित करने, लक्ष्य निर्धारित करने तथा अनुशासन और समर्पण के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

रो ई मंडल 3030

रोटरी क्लब नागपुर होराइज़न

ऑटिज़्म जागरूकता माह के अवसर पर स्थानीय मेट्रो स्टेशन से ऑटोमोटिव स्टेशन तक 200 विशेष बच्चों के लिए मेट्रो ट्रेन की यात्रा का आयोजन किया गया। नागपुर निगम की स्थायी समिति की अध्यक्षा शिवानी दानी ने इस आनंद यात्रा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

रो ई मंडल 3120

रोटरी क्लब लखनऊ अवध राजधानी

संजय गांधी पीजी इंस्टीट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंसेज में जीआईसी हाउसिंग फाइनेंस की सी एस आर फंडिंग से एक आधुनिक सर्जिकल टेबल (₹1 करोड़ से अधिक) का उद्घाटन किया गया।

रो ई मंडल 3110

रोटरी क्लब आगरा रॉयल

पीडीजी नीरव निमेश ने हेटा गाँव के दो सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में लड़कों और लड़कियों के लिए अलग-अलग शौचालय ब्लॉकों का उद्घाटन किया।

अधिक चीनी युक्त

गीता मथाई

डायबिटीज़ कोई नई बीमारी नहीं है, जैसा कि अक्सर माना जाता है कि यह आज की निष्क्रिय, समृद्ध जीवनशैली और ज़्यादा कैलोरी तथा ट्रांस फैट वाले भोजन का परिणाम है। इसका उल्लेख 1550 ईसा पूर्व के मिस्र के साहित्य में मिलता है, और बाद में छठी शताब्दी ईसा पूर्व में भारतीय चिकित्सकों सुश्रुत और चरक ने भी इसका वर्णन किया। इसे एक ऐसी स्थिति के रूप में पहचाना गया था, जिसमें बहुत ज़्यादा भूख लगती है, वज़न लगातार कम होता जाता है, बार-बार पेशाब आता है और मूत्र मीठा होता है, जो चींटियों को आकर्षित करता है। यह विवरण आज भी काफी हद तक सही माना जाता है।

भारत इस समय डायबिटीज़ की एक व्यापक महामारी जैसी स्थिति का सामना कर रहा है, जिससे लगभग 10 करोड़ लोग प्रभावित बताए जाते हैं। डायबिटीज़ से प्रभावित लोगों की संख्या के मामले में भारत, दुनिया में सबसे आगे है, यहाँ तक कि चीन से भी अधिक। इस आँकड़े में वे लोग शामिल नहीं हैं जिन्हें अभी तक अपनी बीमारी का पता नहीं चला है और जो अपनी स्थिति से अनजान हैं, या वे लोग जो प्रीडायबिटीज़ की अवस्था में हैं और डायबिटीज़ होने की कगार पर हैं; साथ ही वे गर्भवती महिलाएँ भी शामिल नहीं हैं जिन्हें मजेस्टेशनल डायबिटीज़फ होती है। चिंताजनक बात यह है कि, लगभग हर परिवार में किसी न किसी को डायबिटीज़ से प्रभावित होने के बावजूद, बड़ी संख्या में लोग इस बीमारी को पूरी तरह समझ नहीं पाते और न ही उन्हें उचित उपचार मिल पाता है।

हम जो भोजन करते हैं, वह पचकर ग्लूकोज़ में परिवर्तित हो जाता है, जो बाद में रक्त प्रवाह में पहुँचता है। यह प्रक्रिया लगभग सभी प्रकार के खाद्य पदार्थों के साथ होती है। एक आम गलतफ़हमी यह है कि ऐसा केवल मीठे या रिफाइंड सफेद खाद्य पदार्थों के सेवन से ही होता है।

जैसे ही अग्न्याशय (पैंक्रियास) रक्त में ग्लूकोज़ के स्तर में वृद्धि को महसूस करता है, उसकी बीटा आइलेट कोशिकाएँ इंसुलिन नामक एक पेप्टाइड हार्मोन का स्राव करती हैं। इंसुलिन शरीर की कोशिकाओं को ऊर्जा के लिए ग्लूकोज़ के अवशोषण और उपयोग में मदद करता है। यह एक मुख्य मेटाबॉलिक रेगुलेटर के रूप में काम करता है। डायबिटीज़ तब होती है जब यह प्रक्रिया बाधित हो जाती है। ऐसा इसलिए हो सकता है क्योंकि पैंक्रियास पर्याप्त मात्रा में इंसुलिन का उत्पादन नहीं करता, या फिर इसलिए क्योंकि शरीर इंसुलिन के प्रभावों के प्रति प्रतिरोधी हो जाता है (इंसुलिन प्रतिरोध)।

डायबिटीज़ का निदान रक्त परीक्षणों के माध्यम से किया जाता है।

- **फास्टिंग ब्लड ग्लूकोज़**
  नॉर्मल : <100 mg/dL
  प्रीडायबिटीज़ : 100-125 mg/dL
  डायबिटीज़ : ≥126 mg/dL
- **रैंडम ब्लड ग्लूकोज़:**
  डायबिटीज़ : ≥200 mg/dL
- **एचबीए1सी:**
  नॉर्मल : <5.7%
  प्रीडायबिटीज़ : 5.7-6.4%
  डायबिटीज़ : ≥6.5%

एक समय था जब डायबिटीज़ को आनुवंशिक रूप से संवेदनशील, मध्यम आयु वर्ग के, अधिक वज़न वाले और कम शारीरिक गतिविधि करने वाले शहरी वयस्कों की बीमारी माना जाता था। हालाँकि, शोध से यह पता चला है कि यह किसी भी उम्र में हो सकती है। इसके कई ऐसे उप-प्रकार (सबटाइप्स) पहचाने गए हैं, जो सभी आयु समूहों के लोगों को प्रभावित करते हैं।

बहुत कम लोगों को यह पता होता है कि बच्चों को जन्म के पहले छह महीनों के भीतर भी डायबिटीज़ हो सकती है। ऐसे लगभग 50 प्रतिशत मामलों में, यह बीमारी या तो जीवन भर बनी रह सकती है, या कुछ महीनों के बाद समाप्त हो सकती है और फिर बाद में जीवन के किसी बाद के चरण में दोबारा प्रकट हो सकती है।

डायबिटीज़ का एक अन्य प्रकार जेस्टेशनल डायबिटीज़ है, जो गर्भावस्था के दौरान विकसित होती है। इसके जोखिम कारकों में ज़्यादा वज़न या मोटापा, सुस्त जीवनशैली, पॉलीसिस्टिक ओवरी सिंड्रोम (पीसीओएस) होना और परिवार में डायबिटीज़

का इतिहास शामिल हैं। कई महिलाओं में इसके कोई लक्षण दिखाई नहीं देते, इसीलिए गर्भावस्था के 24-28 हफ़्तों के बीच ग्लूकोज़ टॉलरेंस टेस्ट के माध्यम से इसकी जाँच करवाना बहुत ज़रूरी है। यदि इसका समय पर पता न चले या इसे नियंत्रित न किया जाए, तो इससे कई प्रकार की जटिलताएँ हो सकती हैं, जैसे कि बच्चे का सामान्य से अधिक वज़न या आकार होना, सिज़ेरियन सेक्शन की आवश्यकता पड़ना, समय से पहले जन्म और प्रसव से जुड़ी अन्य समस्याएँ।

3-घंटे के ग्लूकोज़ टॉलरेंस टेस्ट के लिए:

- फास्टिंग : <95 mg/dL
- 1 घंटा : <180 mg/dL
- 2 घंटा : <155 mg/dL
- 3 घंटा : <140 mg/dL

ज़्यादातर वयस्कों में, विशेषकर मध्यम आयु वर्ग के लोगों में, डायबिटीज़ के लक्षणों में ज़्यादा प्यास लगना, पर्याप्त मात्रा में तरल पदार्थ लेने के बावजूद मुँह सूखना, थकान, वज़न कम होना, पैरों में सुन्नपन और झनझनाहट, घावों का धीरे-धीरे भरना तथा बार-बार त्वचा में संक्रमण होना शामिल हैं। किशोरों और युवा वयस्कों में भी अचानक ऐसे ही लक्षण दिखाई दे सकते हैं, और जाँच के बाद पता चल सकता है कि उन्हेंमैच्योरिटी ऑनसेट डायबिटीज़ ऑफ़ द यंगफ (एमओडीवाई) है। अब इस स्थिति की पहचान पहले की तुलना में कहीं अधिक होने लगी है।

कुछ लोग के शरीर में बहुत कम या बिल्कुल भी इंसुलिन नहीं बनता। इसके परिणामस्वरूप, शरीर की कोशिकाएँ ऊर्जा के लिए ग्लूकोज़ का उपयोग नहीं कर पातीं और रक्त शर्करा का स्तर खतरनाक रूप से बढ़ जाता है। यह प्रकार अक्सर दो चरणों में सामने आता है - पहला 4 से 7 वर्ष की आयु के बीच और दूसरा किशोरावस्था के दौरान, हालाँकि यह वयस्कों में भी हो सकता है। यह आनुवंशिक कारणों से हो सकता है, किसी वायरल संक्रमण (जैसे कॉक्ससैकी या मम्प्स) के बाद विकसित हो सकता है, या किसी ऑटोइम्यून प्रक्रिया के कारण उत्पन्न हो सकता है, जिसमें शरीर ऐसे एंटीबॉडी बनाता है जो अग्न्याशय की इंसुलिन बनाने वाली कोशिकाओं को नष्ट कर देते हैं।

डायबिटीज़ के मैनेजमेंट का मुख्य आधार डाइट है। रोज़ाना की कैलोरी की ज़रूरत (आमतौर पर वयस्कों में 1500-2000 kcal) का निर्धारण आदर्श शारीरिक वज़न और शारीरिक गतिविधि के स्तर के आधार पर किया जानी चाहिए। ब्लड शुगर को बेहतर ढंग से नियंत्रित करने और कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करने के लिए डाइट में फाइबर (प्रतिदिन 25-40 g) की मात्रा अधिक होनी चाहिए। प्रोटीन का सेवन शरीर के प्रति किलोग्राम वज़न के अनुसार लगभग 0.8-1 g होना चाहिए। इसे समझने के लिए एक सरल गाइडलाइन यह है:

- प्लेट का 40%: बिना स्टार्च वाली सब्ज़ियाँ
- 30%: लीन प्रोटीन
- 30%: स्वस्थ कार्बोहाइड्रेट

खाए जाने वाले भोजन का कैलोरी मान और उसकी संरचना की जानकारी ऑनलाइन प्राप्त की जा सकती है।

नियमित व्यायाम इंसुलिन संवेदनशीलता को बेहतर बनाकर और एचबीए1सी के स्तर को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हर हफ़्ते कम से कम 150 मिनट की मध्यम-तीव्रता वाली एरोबिक गतिविधि (जैसे चलना, तैरना या साइकिल चलाना) करने का लक्ष्य रखें; इसके साथ ही हफ़्ते में कम से कम दो बार स्ट्रेंथ ट्रेनिंग, संतुलन बढ़ाने वाले व्यायाम और, यदि संभव हो, तो योग भी शामिल करें।

डायबिटीज़ से डरें नहीं। यह पूरी तरह ठीक नहीं हो सकती, लेकिन इसे अनुशासन, सही खान-पान, व्यायाम और दवाओं की मदद से नियंत्रित किया जा सकता है। डायबिटीज़ के मरीज़ भी एक स्वस्थ और संतोषजनक जीवन जी सकते हैं।

अगर ब्लड शुगर कंट्रोल में न रहे, तो दवाओं की आवश्यकता पड़ सकती है। मेटफ़ॉर्मिन जैसी पुरानी दवाओं का उपयोग अकेले या नई दवाओं के साथ मिलाकर किया जा सकता है। सेमाग्लूटाइड जैसी नई दवाओं से काफ़ी लाभ देखे गए हैं; ये भूख को कम करती हैं, वज़न घटाने में मदद करती हैं और ब्लड शुगर को अधिक प्रभावी ढंग से नियंत्रित करने में सहायक होती हैं।

ब्लड ग्लूकोज़ का स्तर अधिक होने पर कुछ समय के लिए प्यास और भूख ज़्यादा लगना, थकान, सिरदर्द, भ्रम, धुंधला दिखाई देना और त्वचा में इन्फेक्शन जैसे लक्षण दिखाई दे सकते हैं। लंबे समय में, डायबिटीज़ से दिल की बीमारी, गुर्दों की विफलता, डिमेंशिया, आँखों की रोशनी जाना और नसों को नुकसान पहुँचने का खतरा बढ़ जाता है, जिसके कारण पैरों में ऐसे घाव हो सकते हैं जो आसानी से ठीक नहीं होते।

डायबिटीज़ से डरने की आवश्यकता नहीं है। हालाँकि इसे पूरी तरह समाप्त नहीं किया जा सकता, लेकिन इसे प्रभावी ढंग से नियंत्रित किया जा सकता है। अनुशासन, संतुलित आहार, नियमित व्यायाम और दवाओं का सही तरीके से पालन करके, डायबिटीज़ से पीड़ित लोग एक स्वस्थ, सक्रिय और संतोषजनक जीवन जी सकते हैं।

लेखिका बाल रोग विशेषज्ञ हैं और उन्होंने स्टेइंग हेल्दी इन मॉडर्न इंडिया *पुस्तक लिखी है*

मंगा का जादू

वे सिर्फ कॉमिक्स नहीं हैं बल्कि एक जीवनशैली हैं। जापानी और अन्य प्रशंसकों के अनुसार वे जीने का एक तरीका सिखाते हैं।

संध्या राव

हमने अपने मासिक बुक क्लब की बैठकों में यह जाना कि हमें कोई किताब जितनी अधिक पसंद आती है, उतना ही उसके बारे में कहने के लिए हमारे पास सामान्य प्रशंसा के अलावा शब्द कम होते हैं। लेकिन यदि कोई किताब विवाद या तीखी प्रतिक्रिया पैदा करे, तो हम उस पर अलग-अलग दृष्टिकोणों से टिप्पणियों की मानो बाढ़ ला देते हैं! *द डाटर्स ऑफ मदुरै* के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। ऑस्ट्रेलिया में रहने वाली राजश्री वरीयर की इस किताब का विषय (कन्या भ्रूण हत्या/शिशु हत्या) और उसका उद्देश्य (एक सामाजिक बुराई को उजागर करना) सराहनीय था, लेकिन उसकी प्रस्तुति कमजोर रही। यह किताब विश्वसनीय स्रोतों से जुटाई गई जानकारी पर आधारित है इसलिए इसके तथ्यों पर कोई सवाल नहीं है। हालाँकि, चरित्र निर्माण, सामाजिक परिवेश की समझ, कथानक के तार्किक विकास और यहाँ तक कि पात्रों के नामकरण में भी यह किताब लड़खड़ा जाती है। इसकी सबसे बड़ी कमी यह है कि यह जाति व्यवस्था और उससे जुड़े प्रभावों से संबंधित एक बुनियादी पहलू को नजरअंदाज कर देती है। और ऊपर से खैर, उस पर अभी बात नहीं करते। आइए अब उस विषय पर चलते हैं जिसकी शुरुआत मैरी कोंडो ने की - हाँ, वही मैरी कोंडो जो मैजिक ऑफ टाइडिंग के लिए प्रसिद्ध हैं।

एक मित्र, जो मुझसे मिलने आए थे, जाते समय एक उपहार भी दे गए - मैरी कोंडो द्वारा लिखित (मैरी इडा के साथ) *लेटर फ्रॉम जापान।* यह किताब सरल भाषा और अनेक उदाहरणों के माध्यम से जापानी जीवनशैली और उसकी उन दार्शनिक अवधारणाओं को समझाती है, जो विभिन्न शब्दों और वाक्यांशों में समाहित हैं। हम सभी *हरा-कीरी* की अवधारणा से परिचित हैं। हाल ही में मैंने एक *किंटसुगी* कार्यशाला में भाग लिया, जहाँ हमने जानबूझकर एक मग तोड़ा और फिर उसे जोड़ने की कोशिश की ताकि यह समझ सकें कि अपूर्णता में भी सुंदरता होती है। हर कोई चेरी ब्लॉसम्स के बारे में जानता है, जिन्हें जापानी भाषा में *सकुरा* कहा जाता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि इन *सकुरा* को देखने की परंपरा वर्षों से चली आ रही है? जापानी में इसे हनामी कहा जाता है।

फिर बात आती है *ओशीकाटसू* की। मैरी कोंडो लिखती हैं, 2021 में इस शब्द को जापान की वार्षिक 'बज़वर्ड' प्रतियोगिता के लिए भी नामांकित किया गया था। ओशीकाटसू दो शब्दों से मिलकर बना है - 'ओशी', जिसका अर्थ है वह व्यक्ति या चीज़ जिसे आप समर्थन देते हैं और 'काटसू', जिसका अर्थ है ङ्गगतिविधिफा संक्षेप में, ओशीकाटसू उन विभिन्न गतिविधियों को दर्शाता है जिनके माध्यम से प्रशंसक अपने पसंदीदा व्यक्ति या चीज़ का समर्थन करते हैं। आपका 'ओशी' कोई अभिनेता हो सकता है, जैसे विजय; कोई साहित्यिक कृति, जैसे प्राइड एंड प्रेजडिस; कोई जानवर, जैसे हाथी; या फिर कोई भोजन, जैसे पिज़्ज़ा। विभिन्न दार्शनिक अर्थों से भरे शब्दों के माध्यम से यह किताब जापानी लोगों के 'जापानीपन' को अभिव्यक्त करती है और किसी समाज एवं संस्कृति को समझने का एक आकर्षक और विचारणीय तरीका प्रस्तुत करती है।

इस किताब का एक अध्याय *मंगा* को समर्पित है। *मंगा* का अर्थ है चित्रों से सजी किताबें - दूसरे शब्दों में कॉमिक किताबें - जो जापान में बेहद लोकप्रिय हैं। वास्तव में, उनकी लोकप्रियता इतनी अधिक है कि *मंगा* शब्द अब पूरी दुनिया में प्रचलित हो चुका है। मैरी कोंडो अपने पति की पसंदीदा *मंगा श्रृंखला स्लैम डंक* का उल्लेख करती हैं, जिसे ताकेहीको इनौए ने लिखा है। 31 खंडों वाली इस श्रृंखला का मुख्य पात्र हनामीची साकुरागी है, जो एक विद्रोही हाई स्कूली छात्र से एक कुशल बास्केटबॉल खिलाड़ी में बदल जाता है। अपने स्कूली दिनों को याद करते हुए वह बताती हैं कि एक बार वह अपने पिता के बचपन के घर गईं और वहाँ के स्टोर-रूम में खोजबीन करते हुए उन्हें *मंगा*

का एक विशाल संग्रह मिला। बुकशेल्फ़ पर मेरे पिता की युवा अवस्था के समय के सबसे लोकप्रिय मंगा सजे हुए थे। खेल, हास्य और मार्शल आर्ट्स जैसी विभिन्न शैलियों की हर किताब ने मुझे मेरे पिता के व्यक्तित्व की एक नई झलक दिखाई, जिन्हें मैं हमेशा एक शांत और गंभीर व्यक्ति समझती थी।

जब उन्होंने उनसे उनकी पसंदीदा मंगा का नाम पूछा तो उन्होंने कुछ देर सोचने के बाद ओसामा तेजुका की *ब्लैक जैक* निकालकर दिखाया। ओसामा को अक्सर 'मंगा का भगवान' कहा जाता है और उन्होंने युद्धोत्तर जापानी मंगा संस्कृति की नींव रखी। ब्लैक जैक उनकी सबसे प्रसिद्ध उत्कृष्ट कृतियों में से एक है। इस *मंगा* में एक प्रतिभाशाली सर्जन की कहानी दिखाई गई है और यह एक चिकित्सक की दुविधाओं को सामने लाती है - जैसे क्या डॉक्टर का कर्तव्य हमेशा उपचार के माध्यम से मरीज का जीवन बढ़ाना ही है और क्या ऐसा उपचार वास्तव में मरीज को खुशी दे सकता है? मैरी कोंडो के अनुसार, उनके पिता के लिए *ब्लैक जैक* केवल मनोरंजन नहीं था, बल्कि सेवा-भाव से भरे उनके जीवन के लिए एक मार्गदर्शक था। उनके पिता पेशे से एक चिकित्सक हैं।

स्पष्ट है कि *मंगा* केवल बच्चों के लिए नहीं है; इसमें जीवन की सीखें छिपी होती हैं और यह ऐसी चीज़ है जिसे जापानी लोग पूरी ज़िंदगी संदर्भ के रूप में देखते और पढ़ते रहते हैं। तो सोचिए, मेरी *कवई* (जिसका अर्थ है गर्मजोशी और प्रसन्नता की भावना) के बारे में, जब मुझे अचानक अलमारी की सबसे ऊपरी शेल्फ़ के पीछे रखी मोटी चित्रयुक्त किताबों का एक सेट याद आया। वह अलमारी मैं अक्सर खोलती थी लेकिन ऊपर तक पीछे की कतार में मेरा हाथ शायद ही कभी पहुँचता था! ये मोटी चित्रयुक्त किताबें थीं दी बुद्धा जिन्हें स्वयं ओसामा तेजुका ने लिखा था जो शायद उनकी अंतिम महाकाव्यात्मक *मंगा* कृतियों में से एक थी। जैसा कि शीर्षक से स्पष्ट है, यह किताब *गौतम बुद्ध* की कहानी को हल्के-फुल्के अंदाज़, विस्तार और अनोखे हास्यबोध के साथ प्रस्तुत करती है।

धन्यवाद, मैरी कोंडो कि आपने मुझे उन किताबों की याद दिला दी। मैं उन्हें लगभग भूल ही चुकी थी हालांकि मैंने उन्हें बहुत पहले अपनी पहली नौकरी के दौरान अहमदाबाद में कुछ छात्रों की सिफारिश पर पढ़ा था। मुझे याद है कि उस समय कुछ डिज़ाइन और आर्किटेक्चर के छात्र, जो मेरे मित्र थे, इस पूरी श्रृंखला को *भगवद गीता* जैसी श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे। कई साल बाद, मुझे यह पूरी श्रृंखला अपने बेटे के सैन फ्रांसिस्को के घर में मिली, जहाँ उसने इन्हें हाफ प्राइस बुक्स से खरीदा था। जब वह अपने अपार्टमेंट को दो सूटकेसों में समेटकर एक सैब्बैटिकल (अवकाश) पर जाने की तैयारी कर रहा था, तब मैंने वह पूरी श्रृंखला विरासत के रूप में अपने पास रख ली थी।

इस श्रृंखला में मूल रूप से 14 भाग हैं, जबकि अंग्रेज़ी (अंतर्राष्ट्रीय) संस्करण में इसके 8 खंड हैं। इसकी चित्रांकन शैली बेहद जीवंत, नाटकीय और पूरी तरह स्वतंत्र प्रवाह वाली है। इसमें प्रयुक्त भाषा जीवंत, सहज और अत्यंत आधुनिक है। कथानक में कुछ ऐसे काल्पनिक तत्व भी जोड़े गए जो कहानी में गति और रोमांच लाते हैं लेकिन गौतम बुद्ध की कथा अपनी मूल सत्यता और गरिमा बनाए रखती है। इसमें एक प्रकार की संवेदनशीलता और भावनात्मक असुरक्षा भी झलकती है, जो कथा के प्रस्तुतीकरण को और गहराई देती है। साथ ही इसमें अप्रत्याशित रूप से हास्यपूर्ण और असामान्य तत्व भी शामिल हैं। उदाहरण के लिए, कभी-कभी तेजुका स्वयं भी कहानी के भीतर अचानक प्रकट हो जाते हैं - पूरी तरह तैयार होकर सजे-धजे, और कहते हैं, ''ओह यह तो मैं हूँ!''

पहला भाग *कपिलवस्तु* बुद्ध के जन्म को दर्शाता है, लेकिन इसके साथ-साथ उस समय के युग, राज्यों और लोगों को स्थापित करने के लिए और भी बहुत कुछ दिखाया गया है। दूसरे भाग *द फ़ोर एनकाउन्टर्स* में हम युवा सिद्धार्थ को एक संवेदनशील और प्रभावशाली बालक के रूप में देखते हैं। तीसरे भाग *देवदत्त* में सिद्धार्थ का सामना वास्तविक दुनिया से होता है, जो दुख और पीड़ा से भरी हुई है। चौथा भाग वहीं से आगे बढ़ता है जहाँ पर तीसरा भाग समाप्त होता है। पाँचवें भाग *द डीर पार्क* को यदि हम किसी भी पन्ने (जैसे 218-219) पर खोलें, तो वहाँ देवदत्त बुद्ध का शिष्य बनने की इच्छा व्यक्त करता है। यह दृश्य एक साथ सहज भी है और गहन भी। वह कहता है: मैंने सोफा, बिस्तर और कालीन ऑर्डर किया है। तुम्हारा एक अधिक सम्मानजनक कमरा होना चाहिए। बुद्ध उत्तर देते हैं: इसे छोड़ो। तुम्हें शहर वापस जाकर अपना काम जारी रखना चाहिए। तुम चाहे कोई भी काम करो, तुम्हारी जाति कुछ भी हो, तुम ज्ञान प्राप्त कर सकते हो। तुम्हें यह सोचना चाहिए: तुम क्या कर रहे हो? क्या यह तुम्हारे लिए महत्वपूर्ण है? क्या यह किसी और के लिए महत्वपूर्ण है? क्या यह अनेक लोगों के लिए महत्वपूर्ण है? क्या यह तुम्हारे देश के लिए महत्वपूर्ण है? क्या यह दुनिया के लिए महत्वपूर्ण है? क्या यह सभी जीवों और प्रकृति के लिए आवश्यक है? अगर ऐसा नहीं है तो तुम्हें इसे रोक देना चाहिए। क्योंकि इस दुनिया में हर चीज़ आपस में जुड़ी हुई है। इसके बाद छठे, सातवें और आठवें भाग में कहानी *निर्वाण* तक पहुँचती है।

जो लोग इस दुनिया से परिचित नहीं हैं, उनके लिए *द बुद्धा मंगा* की दुनिया में प्रवेश करने का एक शानदार माध्यम है। इसलिए एक बार फिर धन्यवाद मेरी कोंडो, जिन्होंने अपनी किताब *लेटर फ्रॉम जापान* के माध्यम से हमें शब्दों के महत्व की याद दिलाई। उदाहरण के लिए इकिगाई, जो आजकल बहुत चर्चित है। इसका अर्थ है जीने का कारण- या फिर ऐसा भी कहा जा सकता है कि यह भावना कि आपका अस्तित्व मायने रखता है। यह एक सुंदर शब्द है, एक गहरी भावना है और पढ़ने का एक अच्छा कारण भी। यही किताबों की खूबी है-एक छोर पर लेखक होता है, दूसरे छोर पर आप। और दोनों एक-दूसरे से जुड़े होते हैं।

स्तंभकार बच्चों की लेखिका और वरिष्ठ पत्रकार हैं।

मंडल गतिविधियाँ

रो ई मंडल 3131

रोटरी क्लब पुणे रॉयल

उद्यमिता कार्यशाला में 60 महिलाओं ने भाग लिया, जिसमें उन्हें कई सत्रों के माध्यम से मार्गदर्शन प्रदान किया गया। विभिन्न क्लबों से आनंद कुलकर्णी, राजश्री भुजबल, गजानन मुंगल और सरिता बल्लाल ने प्रतिभागियों के साथ संवाद किया।

रो ई मंडल 3211

रोटरी क्लब मन्नारसाला

हरिपाद के सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालय में एक सुरक्षित पेयजल परियोजना पूरी की गई, जिसमें एक बोरवेल भी शामिल था। विद्यार्थियों की उपस्थिति में यह परियोजना विद्यालय प्रशासन को सौंप दी गई।

रो ई मंडल 3212

रोटरी क्लब श्रीविल्लिपुत्तूर टाउन

क्लब सदस्य आर महालिंगम ने श्रीविल्लिपुथुर आंदाल मंदिर के पास एक 'रोटरी टाइम क्लॉक' का उद्घाटन किया। मंदिर के श्लोकों के प्रसारण के दौरान रो ई के 'फोर-वे टेस्ट' और पोलियो जागरूकता से संबंधित घोषणाएँ भी की जाती है। इस अवसर पर डीजी दिनेश बाबू, एजी एम राधा और एम चिन्नातम्बी उपस्थित थे।

रो ई मंडल 3234

रोटरी क्लब अन्ना नगर मद्रास

अरुम्बक्कम के गवर्नमेंट मॉडल हाई स्कूल के 240 छात्रों की सवीथा डेंटल कॉलेज के सहयोग से आयोजित एक डेंटल कैंप में जाँच की गई। छात्रों को टूथब्रश और टूथपेस्ट वितरित किए गए।

रो ई मंडल 3150

रोटरी क्लब निजामाबाद

धनपाल लक्ष्मीबाई विट्ठल गुप्ता चैरिटेबल ट्रस्ट के सहयोग से क्लब ने रोटरी सेंटर में 18 व्यक्तियों को श्रवण मशीनें (₹4 लाख की) वितरित कीं।

रो ई मंडल 3261

रोटरी क्लब दमोह ग्रेटर

एक नगरपालिका अधिकारी के अनुरोध पर, शहर के सौंदर्यीकरण हेतु चौराहा स्थित एक तिराहे पर मरोटरी स्क्वायरफ का निर्माण किया गया। इस परियोजना से दमोह में रोटरी की सार्वजनिक छवि को काफी बढ़ावा मिला।

रो ई मंडल 3240

रोटरी क्लब बोलपुर रंगामाटी

बोलपुर के मइंस्टीट्यूट ऑफ़ टोटल एजुकेशनफ में कोलकाता के 'महावीर सेवा सदन' के सहयोग से आयोजित एक कृत्रिम अंग शिविर में लगभग 50 लाभार्थियों को कृत्रिम अंग प्रदान किए गए। इस अवसर पर डीजीई असीम अधिकारी, परियोजना समन्वयक सुबीर रॉय और एजी सुदीप्ता आचार्य उपस्थित थे।

वी मुत्तुकुमारन द्वारा संकलित

LBW

अनोखा कुत्ता घुमाने वाला

टीसीए श्रीनिवासा राघवन

आठ साल पहले, मेरी बहू ने एक कुत्ता पालने का फैसला किया। वह और मेरा बेटा दोनों विदेश में काम करते हैं, लेकिन वह एक भारतीय नस्ल का कुत्ता चाहती थी। इसलिए भारत आने पर वह एक डॉग शेल्टर गई और वहाँ से एक पिल्ला ले लाई, जिसे कुछ समय बाद उनके यूरोप वाले घर ले जाया गया। लेकिन वह कुतियाँ उस विदेशी माहौल में खुद को ढाल नहीं पाई और ढाई साल पहले वापस भारत आ गई। तब मेरी पत्नी और मैंने उसे अपने पास रखने का निर्णय लिया, जबकि वह बेहद घबराया हुआ मूर्ख-सा जीव है जो अपने इलाके को लेकर जरूरत से ज़्यादा सनकी है। कुछ मायनों में वह मुझे मेरे छोटे बेटे की याद दिलाती है, जो बचपन में तब करुण स्वर में चीख उठता था जब उसका बड़ा भाई उसके छह फुट के दायरे में भी आ जाता था।

सब कुछ काफी सीधा-सादा लग रहा है, है ना? खैर, हाँ भी और नहीं भी। घर में कुत्ता होना तो ठीक था, लेकिन न मेरी पत्नी और न ही मैं उसे सुबह-शाम उसकी शारीरिक जरूरतों के लिए उसे बाहर ले जाने के इच्छुक थे। हमें लगा कि यह दिनचर्या वैसी ही होगी जैसे बच्चों के छोटे होने पर उन्हें रोज़ स्कूल छोड़ना और वापस लाना पड़ता है बिना किसी छुट्टी या राहत के; चाहे गर्मी हो, बारिश हो या ठंड, यह काम तो करना ही पड़ता है। इसलिए हमने एक कुत्ता घुमाने वाला रखने का फैसला किया। भारत में यह पेशा अभी काफी नया है क्योंकि अब स्वच्छता को लेकर नए नियम बने हैं और कभी-कभी दूसरों की सुविधा का भी थोड़ा ध्यान रखा जाने लगा है। यह 'वॉकर जॉनी', हमारी रोज़मर्रा की एक बड़ी परेशानी को कम कर देता था और इस व्यवस्था से हम बेहद खुश थे।

लेकिन यह भारत है, जहाँ किसी भी समझौते के अलग-अलग अर्थ निकाले जा सकते हैं। यहाँ शब्दों में एक तरह का लोच होता है, जिसका इस्तेमाल अक्सर किसी वादे या समझौते को न निभाने के औचित्य के रूप में किया जाता है। और बेशक, एक ही बहाना बार-बार बनाने में भारतीयों का मुकाबला शायद केवल कोई दूसरा दक्षिण एशियाई ही कर सकता है-बीमारी, मौत, शादी और अब शब्दकोश में जुड़ा नया शब्द, इमरजेंसी। इस तरह के लचीलेपन से हम सब भली-भाँति परिचित हैं।

खैर, शुरुआती दो सुखद हफ्तों के बाद जब वह नियमित और समय का पाबंद रहा, हमारा यह आदमी फिर अपनी असली आदतों पर लौट आया। वह कई बार बिना किसी सूचना के आता ही नहीं था। वो बेचारी कुतिया अपनी प्राकृतिक जरूरतों को रोके हुए बहुत असहज हो जाती। आखिरकार, जब उसे और इंतज़ार करवाना क्रूर लगने लगता तो मेरी पत्नी उसे हमारे रिहायशी परिसर में तय जगह पर घुमाने ले जाती। शुरुआत में ऐसा कभी-कभार होता था, लेकिन धीरे-धीरे उसकी गैरहाज़िरी बढ़ने लगी। मूल समझौता यह था कि वो डॉग वॉकर हफ्ते में 14 बार आएगा लेकिन उसने एकतरफा तरीके से इसे घटाकर 8-9 बार कर दिया। अपने-आप में यह इतनी बड़ी बात नहीं थी क्योंकि भुगतान हर विज़िट के हिसाब से होता है और अनुपस्थित रहने पर काट लिया जाता है। असली समस्या हालांकि उसकी पहले से हमें सूचना न देने की ज़िद थी। इसकी कीमत बेचारी कुतिया को अपनी तकलीफ़ बढ़ाकर चुकानी पड़ती, लेकिन उस आदमी को इसकी कोई परवाह नहीं। मेरी पत्नी ने उसे न जाने कितनी बार कहा कि अगर वह नहीं आने वाला हो तो पहले बता दिया करे लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। वह बस मानने को तैयार ही नहीं था। चूंकि उसके पास लगभग एकाधिकार है-वह तय समझौते के विपरीत, कुत्तों को अलग-अलग नहीं बल्कि छोटे-छोटे समूहों में एक साथ घुमाने ले जाता -इसलिए हमारे पास कोई दूसरा विकल्प भी नहीं रहा। हमें आखिरकार यह स्वीकार करना पड़ा कि व्यापारिक नैतिकता के मामले में वह भी आखिर एक दक्षिण एशियाई ही है।

सबसे बड़ी अनसुलझी पहेली यह है कि वह इतनी छुट्टियाँ आखिर लेता क्यों है। एक कारण यह हो सकता है कि यह काम बेहद उबाऊ है। दूसरा यह कि जिन बातों को हम बहाने समझते हैं, वे वास्तव में उसकी असली मजबूरियाँ हों। और तीसरा कारण-जिसे मैं सबसे अधिक सही मानता हूँ-यह है कि वह अपने ग्राहकों को बारी-बारी से टालता रहता है क्योंकि हमारे कुत्ते पर खर्च होने वाला समय बचाकर वह कोई और काम कर लेता है, जिससे इतनी कमाई हो जाती है कि हमारी कटौती की भरपाई आसानी से हो जाए।

जब भी मैं अपने दोस्तों को उसके इस व्यवहार के बारे में बताता हूँ, तो वे भी छोटे-मोटे ठेकेदारों, दर्जियों, प्लंबरों, बिजली मिस्त्रियों, मालीयों, यहाँ तक कि खून के नमूने लेने वाले लोगों तक के बारे में अपनी-अपनी कहानियाँ सुनाने लगते हैं। साफ है कि अनौपचारिक कामगारों के मामले में हम सबकी ज़िंदगी भी किसी कुत्ते जैसी ही हो जाती है। ■

Advertise in Rotary News

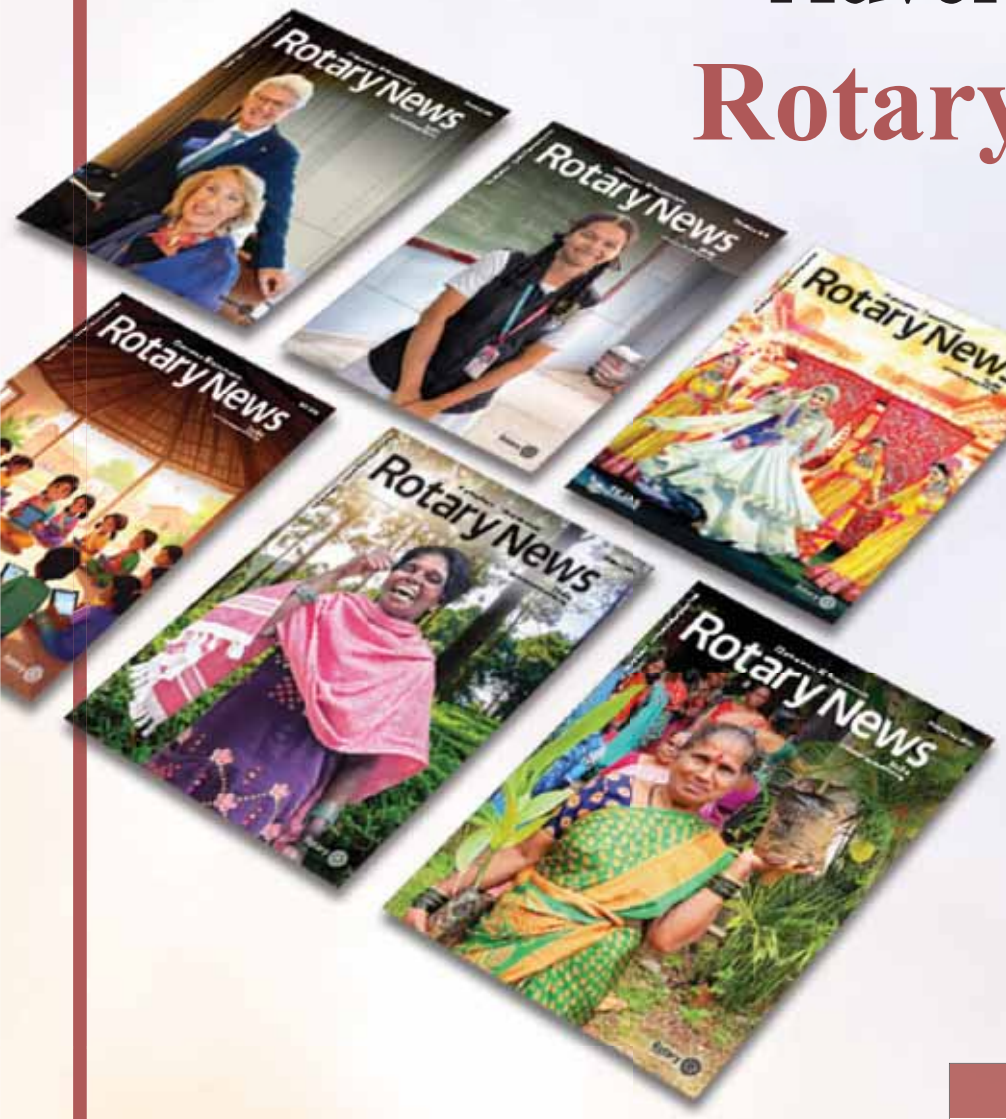

... with a circulation of 1.56 lakh, and connect with 6 lakh readers. Reach some of the most influential industrialists, businessmen, finance professionals, doctors, lawyers and other high flyers.

Tariff (per insert)	
Back cover	₹1,00,000
Inner Front Cover	₹60,000
Inner Back Cover	₹60,000
Inside Full Page	₹30,000
Specifications	
17 x 23 cm	Full page
Advertisements in colour only	

GST 5% applicable

Rotary News Trust
Phone: 044 42145666
e-mail: rotarynews@rosaonline.org

Attractive discounts available for advertisements of three months and above.

Posted at Egmore RMS Patrika Channel. Date of posting: 6–12 every month. Regd with RNI TNHIN/2001/05271. Rotary Samachar Published 1st week of every month.
Registered No. TN/CCN/359/2024-2026 | Total number of pages in this monthly
Licensed to post WPP No.TN/PMG(CCR)/WPP 421/24-26 | issue, including cover, 84. Price: ₹40

The Rotary Foundation

DOING GOOD IN THE WORLD

The Rotary Foundation transforms your gifts into service projects that change lives close to home and around the globe. By giving to the Annual Fund, you make these life-changing projects possible so that together, we can remain dedicated to doing good for years to come.

GIVE TODAY: rotary.org/donate